सोमवार, 25 नवम्बर 2024

मौसम

तापमान 28 – 17
आर्द्रता 60%
सूर्योदय: 5:56 सूर्यास्त: 16:51

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आ सुव।।

www.samagya.in

समाज्ञा

स्थानीय खबरें पृष्ठ तीन, चार और पांच पर

कोलकाता, मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष दशमी, वि.स. 2081, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00 रुपये

जायसवाल और कोहली का शतक, ऑस्ट्रेलिया को 534 रन का लक्ष्य देने के बाद भारत ने तीन विकेट झटके –पृष्ठ 8

सुविचार : आनन्द, मुक्ति, रहस्य या सत्य ये सब आप के जीने के तरीके से निर्मित होता है।

RED-X
B.W.P. PLY,
BOARDS& DOORS
'X' Factor that Makes A Difference
Stockist :
GULAB CHAND
LAL CHAND& Co.
9831114555
9874415555

संभल में मस्जिद सर्वेक्षण के खिलाफ हिंसक प्रदर्शन के दौरान चार की मौत

हिंसा के आरोपियों पर लगेगी रासुका

संभल (उप्र) : संभल की जामा मस्जिद में अदालत के आदेश पर रविवार को किये जा रहे सर्वेक्षण का विरोध कर रहे प्रदर्शनकारी पुलिस से भिड़ गए और इस दौरान चार व्यक्तियों की मौत हो गई। घटना में उपजिलाधिकारी और पुलिस क्षेत्राधिकारी समेत 20 लोग जख्मी भी हुए हैं। पुलिस के अनुसार, प्रदर्शनकारियों ने वाहनों को जलाने की कोशिश की और पुलिस पर पथराव किया, जिसके बाद पुलिस ने भीड़ को तितर-बितर करने के लिए आंसू गैस के गोले दागे और लाठीचार्ज किया। एक अधिकारी ने कहा, ''उपद्रवियों ने गोलियां चलाईं और कुछ छर्रे हमारे पुलिसकर्मियों को लगे। हम वहां जांच कर रहे हैं जहां गोलियां चलायी गईं, खासकर दीपा सराय इलाके में।'' अधिकारियों ने बताया कि हिंसा के बाद व्याप्त तनाव को देखते हुए संभल तहसील में इंटरनेट सेवाएं बंद कर दी गई हैं तथा 12वीं कक्षा तक के सभी स्कूल सोमवार को बंद रखने के आदेश दिए गए हैं। एक स्थानीय अदालत के आदेश पर गत मंगलवार को जामा मस्जिद का सर्वेक्षण किया गया था जिसके बाद से संभल में पिछले कुछ दिनों से तनाव व्याप्त है। दरअसल स्थानीय अदालत में एक याचिका दाखिल करके दावा किया गया है कि जिस जगह पर जामा मस्जिद है, वहां पहले हरिहर मंदिर था। मुरादाबाद मंडल के आयुक्त आंजनेय कुमार सिंह ने संभल में संवाददाताओं से बातचीत में कहा कि इस मामले में उपद्रवियों के दो तीन समूह थे जो लगातार गोलीबारी कर रहे थे तथा पुलिस प्रशासन ने सर्वेक्षण करने आई टीम को सुरक्षित तरीके से बाहर निकाला।

संभल हिंसा मुख्यमंत्री आदित्यनाथ, भाजपा-आरएसएस की सुनियोजित साजिश : कांग्रेस

उत्तर प्रदेश के संभल में हुई हिंसा के मद्देनजर कांग्रेस ने रविवार को आरोप लगाया कि योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व वाली सरकार निर्दोष लोगों की हत्या के लिए पूरी तरह जिम्मेदार है और केवल भाजपा-आरएसएस ही वहां शांति एवं सद्भाव को ''आग लगाने'' के लिए दोषी है। विपक्षी पार्टी ने कहा कि संभल में प्रदर्शनकारियों पर सीधी गोलीबारी के वीडियो आदित्यनाथ और भाजपा-आरएसएस की ''सुनियोजित साजिश'' के परिणाम को दर्शाते हैं।

संभल हिंसा पर भाजपा ने कहा, किसी को भी कानून तोड़ने का अधिकार नहीं

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने रविवार को उत्तर प्रदेश के संभल में हुई हिंसा को लेकर विपक्ष पर निशाना साधा और आरोप लगाया कि लोकसभा चुनाव के नतीजों के बाद से ही 'घमंडिया गठबंधन' अशांति फैलाने की कोशिश कर रहा है, लेकिन वह सफल नहीं होगा। भाजपा प्रवक्ता नलिन कोहली ने कहा कि कोई भी यह दावा नहीं कर सकता कि कानून तोड़ना या अदालत के आदेश को लागू होने से रोकने के लिए पथराव करना उसका संवैधानिक अधिकार है। उन्होंने कहा कि कानून तोड़ने वालों के खिलाफ पुलिस कार्रवाई करेगी।

27 करोड़ में बिके ऋषभ पंत, बने आईपीएल इतिहास के सबसे महंगे प्लेयर

पहले दिन लगी 468 करोड़ की बोली, 72 खिलाड़ी बिके

नई दिल्ली : आईपीएल ऑक्शन 2025 में रविवार को रिकॉर्डतोड़ बोली लगी। ऋषभ पंत ने सबसे महंगे खिलाड़ी का रिकॉर्ड बनाया तो वेंकटेश अय्यर पर लगी बोली ने सबको हैरान कर दिया। लखनऊ सुपर जायंट्स ने ऋषभ पंत पर 27 करोड़ रुपए बोली लगाई, जो आईपीएल इतिहास में सबसे अधिक है। ऑक्शन के पहले दिन कुल 72 खिलाड़ियों पर बोली लगी। इन खिलाड़ियों पर कुल 467.95 करोड़ रुपए की बोली लगाई गई। अब

आईपीएल की 10 फ्रेंचाइजी के पास कुल 132 स्लॉट खाली हैं। इनके लिए सोमवार को फिर नीलामी होगी। आईपीएल ऑक्शन 2025 के पहले दिन 84 से ज्यादा खिलाड़ियों के नाम बोली के लिए सामने आए। लेकिन इनमें से 72 खिलाड़ियों पर ही बोली लगी। इन 72 खिलाड़ियों में 24 विदेशी हैं। चार खिलाड़ियों के लिए आरटीएम कार्ड का इस्तेमाल किया गया। पहले दिन 12 खिलाड़ी अनसोल्ड रहे, यानी इन पर किसी ने बोली नहीं लगाई। इन सभी अनसोल्ड खिलाड़ियों पर आईपीएल 2025 ऑक्शन के दूसरे दिन यानी सोमवार को बोली लगाई जा सकेगी। पृष्ठ–8

उद्योगपति गौतम अदाणी पर अमेरिका में अभियोग संबंधी जांच के लिए उच्चतम न्यायालय में नई याचिका

नयी दिल्ली : उद्योगपति गौतम अदाणी के खिलाफ अमेरिका में रिश्वतखोरी और धोखाधड़ी के आरोप में अभियोग चलाने के संबंध में जांच का अनुरोध करते हुए उच्चतम न्यायालय में एक नई याचिका दायर की गई है। याचिका में कहा गया है कि इस कदम से ''समूह द्वारा किए गए कदाचार का खुलासा हुआ है।'' यह याचिका अधिवक्ता विशाल तिवारी द्वारा अदाणी-हिंडनबर्ग विवाद में भारतीय कॉरपोरेट दिग्गज द्वारा शेयरों के मूल्य में हेरफेर के आरोपों से संबंधित याचिकाओं के समूह में एक अंतरिम आवेदन के रूप में दायर की गई है। गौतम अदाणी पर अमेरिकी अभियोजकों ने सौर ऊर्जा अनुबंधों के लिए अनुकूल शर्तों के बदले भारतीय अधिकारियों को 25 करोड़ अमेरिकी डॉलर (करीब 2,100 करोड़ रुपये) से अधिक की रिश्वत देने की साजिश का हिस्सा होने का आरोप लगाया है।

पूर्वी राज्यों को पहले पिछड़ा माना जाता था, पर मैं उन्हें विकास के इंजन के रूप में देखता हूं: मोदी

नयी दिल्ली : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को कहा कि उनकी सरकार भारत के पूर्वी क्षेत्र को देश का विकास इंजन मानती है, जबकि पहले इस क्षेत्र को पिछड़ा माना जाता था। यहां 'ओडिशा पर्व' कार्यक्रम में उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि राज्य में नयी सरकार के गठन के 100 दिनों के भीतर 45,000 करोड़ रुपये के निवेश को मंजूरी दी गई है। उन्होंने कहा, ओडिशा हमेशा से ही संतों और विद्वानों की भूमि रही है। जिस तरह से यहां के विद्वानों ने हमारे धार्मिक ग्रंथों को घर-घर तक पहुंचाया और लोगों को उनसे जोड़ा, उसने भारत की सांस्कृतिक समृद्धि में अहम भूमिका निभाई है। उन्होंने कहा, एक समय था जब भारत के

पूर्वी क्षेत्र और वहां के राज्यों को पिछड़ा कहा जाता था। हालांकि, मैं भारत के पूर्वी क्षेत्र को देश के विकास का इंजन मानता हूं। इसीलिए हमने भारत के पूर्वी क्षेत्र के विकास को प्राथमिकता दी है। मोदी ने कहा, अब हम ओडिशा को जो बजट आवंटित कर रहे हैं, वह 10 साल पहले की तुलना में तीन गुना अधिक है। हम ओडिशा के विकास के लिए हर क्षेत्र में तेजी से काम कर रहे हैं और इस वर्ष बजट में 30 प्रतिशत की वृद्धि की गई है। प्रधानमंत्री ने बताया कि केंद्र सरकार ओडिशा में कारोबार को आसान बनाने के लिए प्रतिबद्ध है और राज्य में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की सरकार बनने के 100 दिनों के भीतर 45,000 करोड़ रुपये के निवेश को मंजूरी दी गई है। उन्होंने कहा, पिछले साल जी20 शिखर सम्मेलन भारत में आयोजित किया गया था। जी20 शिखर सम्मेलन के दौरान हमने सूर्य मंदिर (कोणार्क में) की तस्वीर दिखाई थी। मुझे इस बात की भी खुशी है कि जगन्नाथ मंदिर (पुरी में) के सभी चार दरवाजे अब खुल गए हैं।

भारत इटली को साझेदार, अहम भागीदार व भूमध्य सागर क्षेत्र में प्रभावशाली देश मानता: जयशंकर

रोम : विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने रविवार को कहा कि भारत इटली को एक प्रमुख साझेदार, यूरोप में एक महत्वपूर्ण सहयोगी और भूमध्य सागर में एक बहुत प्रभावशाली देश के रूप में देखता है। उन्होंने यह टिप्पणी यहां रोम में भारतीय दूतावास के नए कार्यालय का उद्घाटन करने के अवसर पर की। जयशंकर तीन दिवसीय यात्रा पर रविवार को यहां पहुंचे। उन्होंने कहा कि दोनों देशों के बीच विभिन्न स्तरों पर निरंतर संवाद उनके द्विपक्षीय संबंधों की गहराई और व्यापकता का संकेत है। विदेश मंत्री ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर जारी पोस्ट में कहा, ''आज रोम में भारतीय दूतावास के नए कार्यालय का उद्घाटन करते हुए मुझे खुशी हो रही है। यह हाल के वर्षों में भारत-इटली साझेदारी के निरंतर विस्तार के अनुरूप है। इससे हमें इटली में भारतीय समुदाय की बेहतर सेवा

करने में भी मदद मिलेगी।'' जयशंकर ने इस अवसर पर कहा कि भारत, इटली को एक प्रमुख साझेदार मानता है, जो यूरोप में बहुत महत्वपूर्ण है तथा भूमध्य सागर में बहुत प्रभावशाली है। उन्होंने कहा, ''आज हम विभिन्न स्तरों पर जो निरंतर संवाद देख रहे हैं, वह इटली के साथ हमारे संबंधों की गहराई और व्यापकता का संकेत है। यह हमारे संबंधों को आगे बढ़ाने में हमारे नेताओं की प्रतिबद्धता और दूरदर्शिता का भी प्रतिबिंब है।''

राज्यपाल ने हेमंत सोरेन को सरकार बनाने के लिए आमंत्रित किया, 28 नवंबर को लेंगे शपथ

रांची : झामुमो नेता हेमंत सोरेन ने रविवार को झारखंड के राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार से मुलाकात की और सरकार बनाने का दावा पेश किया। वह 28 नवंबर को मुख्यमंत्री पद की शपथ लेंगे। इससे पहले दिन में राज्य में 'इंडिया' गठबंधन के नेताओं ने सर्वसम्मति से सोरेन को विधायक दल का नेता चुना। झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के नेताओं ने बताया कि सरकार बनाने का दावा पेश करने से पहले सोरेन ने मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया था। वह 28 नवंबर को शपथ ग्रहण होने तक कार्यवाहक मुख्यमंत्री के रूप में कार्य करेंगे। गंगवार से मुलाकात के बाद पत्रकारों से बात करते हुए सोरेन ने कहा, ''मैंने सरकार बनाने का दावा पेश किया है और राज्यपाल को गठबंधन सहयोगियों का समर्थन पत्र सौंप दिया है। उन्होंने हमें सरकार

बनाने के लिए आमंत्रित किया है। शपथ ग्रहण समारोह 28 नवंबर को होगा।'' अपनी कार से राजभवन पहुंचे सोरेन ने कहा कि राज्यपाल ने उन्हें कार्यवाहक मुख्यमंत्री के रूप में कार्य करने को कहा है। सोरेन झारखंड के 14वें मुख्यमंत्री के रूप में शपथ लेंगे। झारखंड का गठन 15 नवंबर 2000 को हुआ था। वह चौथी बार मुख्यमंत्री पद की शपथ लेंगे। इससे पहले दिन में, गठबंधन के नेताओं और विधायकों ने यहां हेमंत सोरेन के आवास पर एक बैठक के दौरान उन्हें सर्वसम्मति से गठबंधन का नेता चुना। बैठक में गठबंधन के घटक दलों के विधायकों के अलावा कांग्रेस के झारखंड प्रभारी एवं पार्टी महासचिव गुलाम अहमद मीर और पार्टी के वरिष्ठ नेता राजेश ठाकुर भी शामिल हुए।

नाबालिग से यौन उत्पीड़न के आरोप में कोयला घोटाले का आरोपी विकास मिश्रा गिरफ्तार

मुझे मारने की कोशिश हो रही हैं, अगर मैंने मुंह खोला तो सरकार गिर जाएगी : आरोपी विकास मिश्रा

कोलकाता, समाज्ञा : कोयला तस्करी मामले के आरोपी विनय मिश्रा की बेटी के साथ यौन उत्पीड़न का मामला सामने आया है। आरोपी विकास मिश्रा को रविवार को कालीघाट थाना पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। नाबालिग से यौन उत्पीड़न के आरोप में विकास के खिलाफ पॉक्सो के तहत मामला दर्ज किया गया है। पुलिस सूत्रों के मुताबिक, विकास ने घर पर विनय मिश्रा की बेटी के साथ यौन उत्पीड़न किया। इस दौरान जब विनय की पत्नी उसे रोकने की कोशिश करने लगी तो कथित तौर पर उसकी भी

पिटाई कर दी गई। विनय की पत्नी ने तुरंत कालीघाट थाने में शिकायत दर्ज करायी। पुलिस ने शिकायत के आधार पर जांच करते हुए आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। आरोपी को रविवार को अलीपुर अदालत में पेश किया गया, जहां से उसे एक दिन की जेल हिरासत में भेज दिया गया। सोमवार को आरोपी को पॉक्सो कोर्ट में पेश किया जाएगा। इधर, कोर्ट से प्रिजन वैन में चढ़ने के दौरान कोयला तस्करी के आरोपी विनय मिश्रा के भाई विकास मिश्रा सनसनीखेज दावा किया। उसने कहा कि अगर वह अपना मुंह खोला तो सरकार गिर जायेगी। इस दिन, कोर्ट से बाहर निकलते समय विकास ने विस्फोटक दावा किया और कहा कि उसे जान से मारने की साजिश की जा रही है। उसके अनुसार, मुझे मारने की कोशिश हो रही हैं। अगर मैंने अपना मुंह खोला तो सरकार गिर जाएगी।

संसद का शीतकालीन आज, संभल और मणिपुर हिंसा पर हंगामे के आसार

मोदी सरकार पेश करेगी वक्फ विधेयक

नयी दिल्ली : संसद का शीतकालीन सत्र सोमवार आज से शुरू हो रहा है। सत्र के शुरू होने से पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपनी बात रखेंगे। शीतकालीन सत्र का पहला दिन हंगामेदार रहने के आसार है क्योंकि विपक्ष ने जिस तरह से ऑल पार्टी मीटिंग के दौरान अडानी पर अमेरिका में हुए एफआईआर और वक्फ संशोधन बिल को लेकर अपना रुख साफ किया है। उससे साफ है कि संसद के पहले दिन ही सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच तीखी नोंकझोंक होना तय है। विपक्ष किसी भी मुद्दे पर पीछे हटने को तैयार नहीं। इससे अलग सरकार की ओर से केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने संसद को सुचारू रूप से चलाने की अपील की है और विपक्ष से सहयोग मांगा है। संसद के शीतकालीन सत्र में सरकार की ओर से 16 महत्वपूर्ण बिल लाए जाने की तैयारी है, जिसमें वक्फ संशोधन बिल समेत बैंकिंग संशोधन बिल शामिल हैं।

सर्वदलीय बैठक में सरकार ने सभी दलों से संसद का सुचारू संचालन सुनिश्चित करने की अपील की

विपक्षी दलों ने रविवार को केंद्र से अदाणी समूह के खिलाफ अमेरिकी अभियोजकों के रिश्वतखोरी के आरोपों पर संसद में चर्चा कराने की मांग की, वहीं केंद्रीय मंत्री किरेन रीजीजू ने स्पष्ट किया कि दोनों सदनों में उठाए जाने वाले मामलों पर संबंधित अध्यक्ष की सहमति से उनकी अधिकृत समितियां निर्णय लेंगी। सोमवार से शुरू हो रहे संसद के शीतकालीन सत्र की पूर्व संध्या पर परंपरा के अनुसार सर्वदलीय बैठक हुई। बैठक के बाद संसदीय कार्य मंत्री किरेन रीजीजू ने संवाददाताओं को बताया कि सरकार ने सभी दलों से संसद का सुचारू संचालन सुनिश्चित करने की अपील की है। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के वरिष्ठ नेता एवं रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की अध्यक्षता में हुई बैठक में 30 दलों के 42 नेताओं ने भाग लिया।

हवा-पानी की शुद्धता-संरक्षण की जवाबदेही

राजधानी दिल्ली व एनसीआर में अनियंत्रित वायु प्रदूषण को लेकर देश की शीर्ष अदालत ने दिल्ली सरकार व पुलिस को फिर फटकार लगायी है। कोर्ट ने नाराजगी जतायी कि वायु गुणवत्ता की बेहद गंभीर स्थिति होने पर सुधार हेतु ग्रैप-4 लागू करने में कोताही बरती जा रही है। कोर्ट ने दिल्ली सरकार व पुलिस को आड़े हाथों लिया कि क्यों रोक के बावजूद दिल्ली में भारी वाहनों का प्रवेश जारी है। कोर्ट ने दिल्ली में भारी वाहनों के प्रवेश की निगरानी को तेरह वकीलों को नियुक्त किया, जो सोमवार को अपनी रिपोर्ट देंगे। कोर्ट ने दिल्ली व राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के अंतर्गत आने वाली हरियाणा व उत्तर प्रदेश सरकारों को सख्ती से ग्रैप-4 की व्यवस्था लागू करने को कहा। अदालत का कहना था कि सभी राज्यों का दायित्व है कि नागरिकों को प्रदूषण मुक्त वातावरण उपलब्ध कराया जाए। दरअसल, न्यायमूर्ति अभय एस.ओका और न्यायमूर्ति ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की पीठ ने ग्रैप-4 व्यवस्था लागू करने की खामियों पर सवाल उठाते हुए कहा कि इस बात पर विश्वास नहीं किया जा सकता है कि दिल्ली में भारी वाहनों का प्रवेश रोक दिया गया है। अदालत ने केंद्र सरकार से दिल्ली में प्रवेश के 113 स्थानों पर निगरानी के लिये पुलिस कर्मियों की तैनाती को कहा, इनमें प्रवेश के तेरह मार्ग ट्रकों के लिये हैं। दरअसल, अदालत ने दिल्ली व राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में आने वाले राज्य हरियाणा तथा उत्तर प्रदेश सरकारों को 18 नवंबर को निर्देश दिया था कि ग्रैप-4 के तहत प्रतिबंधों के क्रियान्वयन के लिये तुरंत टीम गठित की जाए। कोर्ट ने सख्ती से पाबंदियां लागू न किये जाने पर नाराजगी जतायी। उल्लेखनीय है कि इस सप्ताह की शुरुआत में वायु गुणवत्ता सूचकांक यानी एक्यूआई के गंभीर से अधिक के स्तर पर पहुंचने पर ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान-4 लागू किया गया था। जिसके अंतर्गत ट्रकों व भारी वाहनों के दिल्ली में प्रवेश व सार्वजनिक निर्माण पर अस्थायी रोक लगा दी गई थी।

प्रश्न है कि क्यों हमारी सरकार जन-स्वास्थ्य से जुड़े मामलों में तब तक सोयी रहती है, जब तक कि पानी सिर के ऊपर से न गुजरने लगे। क्यों हर साल शीर्ष अदालत को सरकार, पुलिस व पर्यावरण संरक्षण हेतु बनी संस्थाओं को नींद से जगाना पड़ता है? क्यों अदालत पहले आदेश दे और फिर उसके क्रियान्वयन की निगरानी करे? क्यों सरकारें आग लगने पर कुंआ खोदने की फितरत से बाज नहीं आती। अदालत ने कहा कि हर नागरिक को स्वच्छ हवा देना सरकारों का दायित्व है तो क्या सरकारें जिम्मेदारी निभा रही हैं? सर्दी की दस्तक देते ही हर साल अक्तूबर-नवंबर में प्रदूषण संकट पैदा होता है, फिर भी सारे साल प्रदूषण को काबू करने के उपया क्यों नहीं किए जाते? क्यों प्रदूषण संकट गंभीर स्थिति में पहुंचने के बाद सरकारें हाथ-पैर मारना शुरू करती हैं? कल्पना कीजिए श्वसनतंत्र व दमा जैसे रोगों से ग्रस्त लोग इस भयावह प्रदूषण संकट से कैसे जूझ रहे होंगे? विडंबना ही कि हम आने वाली पीढ़ियों के लिए कैसे परिवेश-पर्यावरण छोड़ेंगे। सवाल हवा का ही नहीं, पानी पर भी बड़ा संकट है। हाल ही में अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिकों की एक टीम ने नासा व जर्मनी के उपग्रहों से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर चिंता बढ़ाने वाला खुलासा किया कि वर्ष 2014 के बाद से स्वच्छ जल के स्तर पर अप्रत्याशित गिरावट देखी गई है। निश्चित रूप से इस स्थिति के लिये हम सब सीधे तौर पर जिम्मेदार हैं। पानी के अंधाधुंध उपयोग, वन क्षेत्रफल का संकुचन और इंसान की अंतहीन लिप्साओं व वाहनों के दबाव ने धरती का जैसे तापमान बढ़ाया है, उसने पानी की वाष्पन की गति तेज कर दी है। साथ ही ग्लोबल वार्मिंग के चलते बारिश के पैटर्न में भी तीव्र बदलाव आया है। बहुत अधिक पानी बहुत कम समय में बरसता है और तुरंत बह जाता है। जिससे धरती की जल ग्रहण क्षमता कम होती जा रही है। पिछले एक दशक में तीस बड़े सूखे दर्ज हुए हैं। वहीं हमारी भौतिक लिप्साओं व औद्योगिक अपशिष्ट ने शुद्ध जल के स्रोतों मसलन नदियों व झीलों को भी प्रदूषित कर दिया है। यह इंसान के लिये जागने का वक्त है।

आज का पंचांग

कोलकाता : 25 नवम्बर, सोमवार, 2024, विक्रम सम्वत् 2081, मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष दशमी, 25:01 तक, नक्षत्र : उत्तर फाल्गुनी, 25:18 तक, योग : विष्कंभ, 13:11 तक, सूर्योदय: 5:56, सूर्यास्त: 16:51 चन्द्रोदय : 00:45, चन्द्रास्त: 13:13, शक सम्वत: 1945 सुभाकृतु, सूर्य राशि : वृश्चिक, चन्द्र राशि : कन्या, राहू काल : 07:20 से 08:41

राशिफल

मेष : मेष राशि के लोगों को धन लाभ होगा और आपके लिए आर्थिक मामलों में तरक्की के योग बन रहे हैं। आज के लिए जो आपकी प्लानिंग थी, वो समय से पूरी हो जाएगी

वृष : वृष राशि के लोगों का दिन मिलजुला रहेगा। आपकी दूरदर्शिता का असर आपके कामकाज पर हो रहा है। आजीविका के क्षेत्र में आपके अनुभव को दूसरे लोग भी भांपने लगे हैं।

मिथुन : मिथुन राशि के लोगों के लिए दिन करियर में लाभ और सफलता से भरा होगा। आपके कार्यक्षेत्र के वातावरण में सुधार होगा और आपको लाभ होगा।

कर्क : कर्क राशि के लोगों के लिए आर्थिक मामलों में मिश्रित प्रभाव वाला रहेगा। अब आपके लिए परिस्थितियां कुछ नया मोड़ ले रही हैं। आपके सभी कार्य सफलता के साथ पूरे हो जाएंगे।

सिंह : सिंह राशि के लोगों का दिन सामान्य रहेगा। आपके लिए कठोर परिश्रम करना जरूरी है। अगर कुछ विलंब भी हो रहा है तो आप परेशान न हों। आपके लिए एक दो दिन बाद हालात सुधरेंगे।

कन्या : कन्या राशि के लोगों को लाभ होगा और आपका दिन सामान्य रूटीन के अनुसार चलता रहेगा। अपने रूटीन में बदलाव के लिए कहीं छुट्टी या पर्यटन का आयोजन करना पड़ सकता है।

तुला : तुला राशि के लोगों को करियर के मामले में लाभ होगा और आपका दिन आराम से बीतेगा। घर के किसी सदस्य पर आकस्मिक संकट भी खत्म हो गया है।

वृश्चिक : वृश्चिक राशि के लोगों को करियर के मामले में लाभ होगा। आपके द्वारा पूर्व में लिए गए निर्णय सार्थक हो सकते हैं। दाम्पत्य जीवन में मधुरता आएगी।

धनु : धनु राशि के लोगों का दिन लाभ और सम्मान से भरा होगा। आपके घर में इस वक्त कोई मांगलिक कार्य आयोजित होने वाले हैं। किसी विवाह योग्य सदस्य के लिए रिश्ते की बात आज हो सकती है।

मकर : मकर राशि के लोगों का दिन करियर के मामले में सामान्य होगा। काफी समय से किसी मित्र के साथ पैदा हुए तनाव आज सुलह सफाई के स्तर पर आकर खत्म हो जाएगा।

कुम्भ : कुंभ राशि वालों का दिन शुभ है और आपको आर्थिक मामलों में लाभ और तरक्की हासिल होगी। आपके लिए लाभ के योग बन रहे हैं और कोई मित्र आपकी मदद करेगा।

मीन : मीन राशि के लोगों को करियर के मामले में लाभ होगा। आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। काम में अरुचि रहेगी। आवागमन में दिक्कत हो सकती है।

पूरे विश्व के लिए आदर्श हैं 'सहकार से समृद्धि' का भारतीय दर्शन

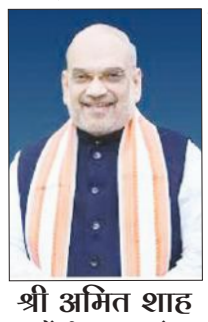

श्री अमित शाह
केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री

सहकारिता एक ऐसी व्यवस्था है, जो समाज में आर्थिक रूप से आकांक्षी लोगों को न सिर्फ समृद्ध बनाती है, बल्कि उन्हें अर्थव्यवस्था की व्यापक मुख्यधारा का हिस्सा भी बनाती है। सहकारिता बिना पूँजी या कम पूँजी वाले लोगों को समृद्ध बनाने का एक बहुत बड़ा साधन है। सहकारिता के माध्यम से भारत इन लक्ष्यों को पूरा करने की दिशा में निरंतर आगे बढ़ रहा है।

हमारे देश में सहकारिता की एक विस्तृत परंपरा तो रही है, लेकिन आजादी से पहले सहकारिता जिस प्रकार आर्थिक आंदोलन का माध्यम बनी, उसे और भी अधिक ऊर्जा और शक्ति के साथ आगे बढ़ाने का कार्य प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के कार्यकाल में शुरू हुआ। वर्ष 2021 में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने सहकारिता का स्वायत्त मंत्रालय स्थापित कर सहकारिता के लिए अवसरों के सारे बंद दरवाजे खोल दिए। महज तीन वर्षों में देश में सहकारिता को मजबूत बनाने के लिए जितने कदम उठाये हैं, उससे भारत अन्य क्षेत्रों के साथ-साथ सहकारी क्षेत्र में भी 'विश्वमित्र' बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

अब भारत का सहकारिता आंदोलन एक ऐतिहासिक पल का साक्षी बनने जा रहा है। देश 25-30 नवंबर, 2024 को दिल्ली में 'अंतरराष्ट्रीय सहकारी गठबंधन (आईसीए) महासभा' और वैश्विक सम्मेलन की मेजबानी करने को तैयार है। आईसीए के 130 वर्ष के इतिहास में यह पहला मौका है, जब भारत इसका आयोजक होगा। इस सम्मेलन से संयुक्त राष्ट्र अंतरराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष 2025 का भी शुभारंभ होगा। आईसीए महासभा और वैश्विक सम्मेलन की मेजबानी वैश्विक सहकारी आंदोलन में भारत के नेतृत्व की स्वीकार्यता का प्रतीक है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा सरकार बनने के बाद से निरंतर समाज के पिछड़े, अति पिछड़े, गरीब और विकास की दौड़ में पीछे छूट चुके लोगों के उत्थान की दिशा में कदम उठाये जा रहे हैं। मोदी सरकार मानती है कि यह परिवर्तन सहकारिता आंदोलन को मजबूत किये बिना नहीं हो सकता। यह आयोजन ऐसे समय में हो रहा है जब भारत ने सहकारी आंदोलन के पुनरुत्थान की दिशा में बड़े कदम उठाये हैं। कमजोर पड़ रही सहकारी संस्थाओं के सशक्तीकरण से लेकर उनके व्यापार को सरल बनाना, समितियों में पारदर्शिता और प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देने के लिए मजबूत प्रशासनिक, नीतिगत और कानूनी उपाय किये गए हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 'सहकार से समृद्धि' का मंत्र दिया है, जिसका उद्देश्य देश की सहकारी संस्थाओं को आत्मनिर्भर और स्वावलंबी बनाना है। देश में सहकारी तंत्र का विस्तार कर एक नया आर्थिक मॉडल खड़ा किया जा रहा है, जो भारत की अर्थव्यवस्था को पाँच ट्रिलियन डॉलर तक पहुंचाने के लक्ष्य को पूरा करने में सहायक साबित होगा। दुनिया के अन्य देशों के लिए यह एक विकास मॉडल के रूप में सामने आएगा।

भारत में प्राचीन काल से ही सहकारिता का एक समृद्ध इतिहास रहा है। इसके संकेत कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भी मिलते हैं। दक्षिण भारत में भी 'निधियों' का प्रचलन सहकारी वित्तीय व्यवस्था की झलक प्रदान करता है। पाश्चात्य विचारों से प्रभावित कई अर्थशास्त्रियों ने 21वीं सदी की शुरुआत में ही यह चर्चा प्रारंभ कर दी थी कि सहकारिता का विचार आधुनिक युग में कालबाह्य हो गया है। मेरा यह स्पष्ट मानना है कि भारत जैसे 140 करोड़ की जनसंख्या वाले देश में किसी 3 करोड़, 5 करोड़ या 10 करोड़ जनसंख्या वाले देशों का आर्थिक मॉडल उपयुक्त नहीं हो सकता। देश को आर्थिक रूप से समृद्ध बनाने के लिए, आर्थिक विकास के सभी मानकों में वृद्धि के साथ-साथ यह आवश्यक है कि 140 करोड़ लोगों की समृद्धि हो, सभी व्यक्तियों को काम मिले और उन्हें सम्मान से जीने का अधिकार भी प्राप्त हो, और यह केवल सहकारिता के माध्यम से ही संभव है। देश के इतिहास में इसके कई उदाहरण भी हैं। अहमदाबाद डिस्ट्रिक्ट कोऑपरेटिव बैंक ने पिछले 100 वर्ष में 100 करोड़ रुपये का लाभ अर्जित किया है। बैंक न केवल अपने एनपीए को शून्य पर बनाये रखने में सफल रहा है बल्कि उसके पास 6,500 करोड़ रुपये से अधिक की जमाराशि भी है। अमूल भी सहकारी आंदोलन का उल्लेखनीय उदाहरण है। वर्तमान में, इससे 35 लाख परिवार सम्मान और रोजगार प्राप्त कर रहे हैं, और इन परिवारों की महिलाएँ अग्रिम पंक्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। परिणामस्वरूप, आज अमूल का वार्षिक कारोबार 80,000 करोड़ रुपये तक पहुँच चुका है। दिलचस्प बात यह है कि इन महिलाओं में से किसी ने भी 100 रुपये से अधिक का प्रारंभिक निवेश नहीं किया था।

सहकारिता आंदोलन को मजबूती प्रदान करने की दिशा में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के मार्गदर्शन में सरकार ने 60 से अधिक पहलों पर काम शुरू किया है। दशकों की उपेक्षा और प्रशासनिक कुरीतियों के परिणामस्वरूप अधिकांश प्राथमिक कृषि ऋण समिति (पैक्स) आर्थिक रूप से कमजोर और निष्क्रिय हो गईं थी। सरकार ने पैक्स के कार्यक्षेत्र में विस्तार के साथ-साथ उन्हें आर्थिक रूप से व्यवहार्य बनाने का काम शुरू किया। इनके लिए नए बाय-लॉ अपनाने से अब पैक्स डेयरी, मत्स्य पालन, अन्न भंडारण, जन औषधि केंद्र आदि जैसे 30 से अधिक विविध क्षेत्रों में व्यावसायिक गतिविधियां संचालित करने में सक्षम हुए हैं। तीन नई राष्ट्रीय स्तर की बहु-राज्यीय सहकारी समितियों के गठन से सहकारिता का क्षितिज और व्यापक हुआ है। राष्ट्रीय सहकारी निर्यात लिमिटेड ने विदेशी बाजारों तक सहकारी उत्पादों की पहुंच को सुगम बनाया तो राष्ट्रीय सहकारी जैविक लिमिटेड ने जैविक प्रमाणीकरण और बाजार का मंच तैयार किया। भारतीय बीज सहकारी समिति लिमिटेड ने उन्नत बीजों की सुलभता सुनिश्चित की है। वित्तीय सहायता, कर राहत और इथेनॉल मिश्रण कार्यक्रम से सहकारी चीनी मिलें समृद्ध हो रही हैं। सहकारी बैंकिंग प्रणाली को मजबूत करने के लिए सहकारी संस्थाओं के पैसे को सहकारी बैंकों में ही जमा करने पर बल दिया गया है। राष्ट्रीय सहकारी डेटाबेस के माध्यम से सहकारी समितियों को पारदर्शी बनाने और प्रक्रिया को आसान बनाने से देश के सहकारी रूप से कम विकसित क्षेत्रों में सहकारी समितियों की पहुंच बनी है। इसके अतिरिक्त सरकार एक समग्र और व्यापक नई राष्ट्रीय सहकारिता नीति पर भी काम कर रही है।

आईसीए महासभा और वैश्विक सम्मेलन 2024 का मंच भारत के सहकारी आंदोलन द्वारा वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने, आर्थिक सशक्तीकरण, लैंगिक समानता सुनिश्चित करने और संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) की प्राप्ति हेतु भारत के अभूतपूर्व प्रयासों को रेखांकित करेगा। सम्मेलन का एक मुख्य एजेंडा एक ऐसे पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण है, जो सहकारी समितियों को उभरती चुनौतियों का सामना करने और अवसरों के उपयोग के लिए सशक्त बनाए।

आज जब हम इस ऐतिहासिक आयोजन की मेजबानी करने जा रहे हैं, मैं दुनिया भर के सहकारी नेताओं, नीति निर्माताओं और मानव विकास के पक्षधरों का आह्वान करता हूँ। आइए! हम वैश्विक सहकारी आंदोलन को मजबूत करने के लिए - सीखने, साझा करने और सहकार की भावना के साथ एकजुट हों। सहकार से समृद्धि के प्रति भारत की प्रतिबद्धता सामूहिक समृद्धि, सातत्यता और साझा प्रगति जैसे मूल्यों पर आधारित उज्ज्वल भविष्य का संकल्प है।

वो चुपचाप आए और एक बार फिर खेला कर गए !

सुशील कुमार 'नवीन'

वो चुपके से आते हैं और सारा खेल बदल जाते हैं। वो भी इस तरह से कि किसी को सहजता से यकीन ही नहीं हो। प्रत्याशित को अप्रत्याशित में परिवर्तित करने वाले इन लोगों के पास न कोई पहचान पत्र होता है और न उनकी कोई अन्य विशिष्ट पहचान। सामान्य व्यक्तित्व,सामान्य वेशभूषा, सामान्य बोलचाल कुछ भी तो ऐसा अन्यतर नहीं होता, जिससे उन्हें अलग से पहचाना जा सके। न वो किसी से जाति, धर्म या संप्रदाय के रूप में उनकी पहचान पूछते हैं और न ही इस तरह की अपनी पहचान किसी को बताते हैं।

कौन है वो लोग, आखिर कहां से आते हैं? न उन्हें गाड़ी चाहिए, न फाइव स्टार होटल। न कोई अन्य वीआईपी ट्रीटमेंट। सामान्य ढाबे या सामान्य धर्मशालाएं जिन्हें परम वैभव से कमतर सुख देने वाले साधन से कम नहीं होते हैं।

स्वहित से दूर राष्ट्रहित जिसके लिए सर्वोपरि होता है। बिना झंडे, बिना पर्चे राष्ट्रहित में सौ फीसदी मतदान का लक्ष्य लेकर भीड़ से दूर इस प्रकार लोकमत परिष्कार करते हैं, जिससे बड़े बड़े नेरीटिव धराशाही हो जाते हैं। चर्चाओं से दूर रहकर किया गया ग्राउंड वर्क बाद में उनकी उपयोगिता को अपने आप दिखा जाता है। हरियाणा के बाद महाराष्ट्र चुनाव का अप्रत्याशित परिणाम इसका ताजा उदाहरण है।

हम बात कर रहे हैं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के उन अदृश्यमान कार्यकर्ताओं की। जो दिखते नहीं हैं, पर उनका कार्य उन्हें अपने आप दिखा जाता है। आइए जानें! आखिरकार उनमें ऐसी क्या विशेषता होती है जो उन्हें दूसरों से इतर करती हैं। तो सुनिए, ये ध्येयनिष्ठ होते हैं। समर्पण भाव से निरंतर साधना इनका प्रमुख लक्ष्य रहता है। अनुशासित होने के साथ दूसरों के लिए ये प्रेरणास्वरूप तो होते ही हैं,साथ में सद्चरित्र आचरण उनकी दूसरी बड़ी विशेषता होता है। अहंकार से कोसों दूर रहकर किसी भी प्रकार के पद या अन्य लाभ की इन्हें कोई अभिलाषा नहीं होती है। व्यवहार कुशलता के साथ ये आत्मविश्वास से सराबोर रहते हैं । 'एकला चलो' की जगह वे 'संग में चलो' को प्राथमिकता देते हैं। दूसरों के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना उनके लिए सर्वोपरि रहता है। मन ही मन वो सदा ऋग्वेद के इस मंत्र को संगठन मंत्र के रूप में गुनगुनाते रहते हैं।

'संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्' देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते।

जिसका भाव है कि हम सब मिलकर रहें, हम सभी ज्ञानी बनें, विद्वान बनें। हम अपने पूर्वजों के समान आचरण करें। प्राचीन समय में देवताओं का आचरण बिल्कुल ऐसा ही रहा है। संघ के इन कार्यकर्ताओं के लिए ' राष्ट्राय स्वाहा, इदं राष्ट्राय इदं न मम' ये जीवन राष्ट्र को अर्पित है, यह मेरा नहीं है। राष्ट्र सबसे पहले, समाज और स्वयं उसके बाद। होने को तो उनका दायित्व बहुत बड़ा होता है पर वो अपने आपको एक सामान्य कार्यकर्ता ही मानते हैं। उनके लिए एक सामान्य कार्यकर्ता होने से बढ़कर गर्व और सम्मान की कोई दूसरी बात नहीं होती है। उन्हें अपने दायित्व का बोध मन से होता है, किसी के बताने या समझाने से नहीं। उन्हें हमेशा ध्यान रहता है कि समाज और राष्ट्र लगातार उनकी ओर देख रहा है। समाज और राष्ट्र को उनसे बहुत बड़ी-बड़ी अपेक्षाएं हैं। उन अपेक्षाओं को पूर्ण करते हुए स्वयं के सर्वांगीण विकास के प्रति भी वे उतना ही सजग रहते हैं।

उन्हें पता होता है कि संगठन में कार्य करते समय वो जितना अपना विकास करेंगे,उतना ही संगठन को उनसे और लाभ होगा। उन्हें किसी कार्य पर ताली या तारीफ की आवश्यकता नहीं होती है। जो कार्य किया उसके परिणाम पर चेहरे पर आने वाली मुस्कान ही उनका सबसे बड़ा सम्मान होता है। वो ये भी इंतजार नहीं करते कि कोई उनके आगमन पर अगवाई करे,गुलदस्तों और फूलमालाओं से उनका स्वागत करे। या उनकी विदाई वीआईपी की तरह गाड़ी तक छोड़ने,भेंट स्वरूप उपहार देने के जैसी हो। बिना कोई औपचारिकता निभाए जिस प्रकार वो आते हैं,उसी प्रकार चुपचाप अपना झोला उठाकर ये कहते हुए निकल जाते हैं।

समानो मन्त्र: समिति: समानी समानं मन: सहचित्तमेषाम्

(मिलकर कार्य करने वालों का मंत्र समान होता है, अर्थात वह परस्पर मंत्रणा करके एक निर्णय पर पहुंचते हैं। चित सहित उनका मन समान होता है।

-लेखक वरिष्ठ पत्रकार और स्तंभकार है। दो बार अकादमी सम्मान से भी सम्मानित हैं।

विदेश की खबरें

इमरान खान की पार्टी के प्रस्तावित प्रदर्शन से पहले इस्लामाबाद में सुरक्षा के कड़े इंतजाम

इस्लामाबाद : पाकिस्तान ने जेल में बंद पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान के समर्थकों द्वारा रविवार को प्रस्तावित विरोध मार्च के मद्देनजर संघीय राजधानी इस्लामाबाद में सुरक्षा बलों की भारी तैनाती की है। प्रमुख सड़कों को सील कर दिया गया है और कुछ इलाकों में मोबाइल और इंटरनेट सेवाएं निलंबित कर दी गई हैं। खान की पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) पार्टी ने जनता से 'गुलामी की बेड़ियां तोड़ने' के लिए मार्च में शामिल होने का आह्वान किया है। खान की पत्नी बुशरा बीबी और खैबर पख्तूनख्वा के मुख्यमंत्री अली अमीन गंडापुर के नेतृत्व में एक काफिला पेशावर से इस्लामाबाद के लिए रवाना हुआ है। समाचार चैनल जियो न्यूज के मुताबिक, बुशरा बीबी पेशावर से शुरू हुए काफिले का हिस्सा थीं, लेकिन खैबर पख्तूनख्वा के मुख्यमंत्री विरोध प्रदर्शन का नेतृत्व कर रहे थे। इससे पहले कहा गया था कि बुशरा बीबी विरोध प्रदर्शन में शामिल नहीं होंगी। खैबर पख्तूनख्वा सरकार के प्रवक्ता मुहम्मद अली सैफ ने कहा कि बाधाओं को हटाने के लिए सभी इंतजाम किए गए हैं। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि शनिवार रात पुलिस ने अवरोधक हटाने वाली मशीनरी पर गोलियां चलाईं और उसे आग लगाने की कोशिश की, लेकिन पीटीआई समर्थकों ने आगजनी की कोशिश को नाकाम कर दिया। सैफ ने कहा कि सरकार के पास उनकी मांगों को पूरा करने के लिए अब भी समय है। उन्होंने चेतावनी दी कि यहां बांग्लादेश जैसी स्थिति हो सकती है, जहां अगस्त में छात्रों के नेतृत्व में बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन के कारण लंबे समय से प्रधानमंत्री रहीं शेख हसीना की सरकार गिर गई थी। खान की पार्टी ने विरोध प्रदर्शन में भाग लेने के लिए विभिन्न शहरों से इस्लामाबाद के लिए रवाना हो रहे विभिन्न समूहों की तस्वीरें और वीडियो साझा किए। संघीय राजधानी में पुलिस किसी को भी शहर में आने से रोकने के लिए हरसंभव प्रयास कर रही है। रावलपिंडी के फैजाबाद क्षेत्र से करीब 16 प्रदर्शनकारियों को तब गिरफ्तार किया गया, जब वे इस्लामाबाद में प्रवेश करने का प्रयास कर रहे थे। इंटरनेट पर निगरानी करने वाले नेटब्लॉक्स ने सोशल मीडिया 'एक्स' पर जारी पोस्ट में कहा कि पाकिस्तान में व्हाट्सऐप को प्रतिबंधित कर दिया गया है।

यूएई में लापता हुए रब्बी की हत्या की गई: इजराइल

तेल अवीव (इजराइल) : इजराइल ने रविवार को कहा कि संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) में लापता हुए एक इजराइली-मॉल्डोवाई रब्बी (धर्मगुरु) की हत्या कर दी गई है और उनका शव बरामद किया जा चुका है। इजराइल ने इस घटना को यहूदी विरोधी जघन्य आतंकवादी घटना करार दिया। प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतान्याहू के कार्यालय ने कहा कि इजराइल रब्बी की मौत के लिए जिम्मेदारी अपराधियों को न्याय के कटघरे में लाने के लिए हर संभव प्रयास करेगा। दुबई में एक दुकान के मालिक रब्बी ज्वी कोगान (28) बृहस्पतिवार को लापता हो गए थे। साल 2020 में अब्राहम समझौता होने के पश्चात इजराइल और यूएई के बीच राजनयिक संबंध स्थापित होने के बाद से इजराइली व्यापार और पर्यटन के लिए दुबई का रुख कर रहे हैं। यूएई सरकार की ओर से हत्या के मामले पर कोई प्रतिक्रिया नहीं आई है।

दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गांधी के आंदोलन से जुड़े एनजीओ ने कानूनी दल को सम्मानित किया

जोहानिसबर्ग : महात्मा गांधी के दक्षिण अफ्रीका प्रवास के दौरान उनके द्वारा शुरू किए गए कांग्रेस आंदोलन से जुड़े एक गैर सरकारी संगठन ने गाजा पर इजराइल के हमलों के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय न्यायालय (आईसीजे) में देश का प्रतिनिधित्व करने वाली कानूनी टीम को सम्मानित किया है।

गैर सरकारी संगठन कांग्रेस ऑफ बिजनेस एंड इकोनॉमिक्स (सीबीई) के वार्षिक भोज और पुरस्कार समारोह में, दक्षिण अफ्रीका और कई देशों के नौ वरिष्ठ कानूनी विशेषज्ञों, साथ ही इस प्रक्रिया में शामिल सरकारी विभागों को 'अहमद कथराडा उत्कृष्ट नेतृत्व पुरस्कार' प्रदान किया गया। इस पुरस्कार का नाम भारतीय मूल के दिवंगत स्वतंत्रता सेनानी के नाम पर रखा गया है, जिन्होंने अपने करीबी मित्र नेल्सन मंडेला के 27 वर्षों से एक वर्ष कम समय जेल में बिताया था। सीबीई के अध्यक्ष अशफाक दाऊद ने कहा, कथराडा और मंडेला, दोनों ही गांधीजी के सिद्धांतों से प्रेरित थे, कथराडा अपने जीवनकाल में फलस्तीन मुद्दे के मुखर समर्थक थे। हमारा मानना है कि अगर गांधीजी आज जीवित होते, तो वह फलस्तीन में इजराइली उत्पीड़न के खिलाफ लड़ाई का नेतृत्व कर रहे होते, ठीक उसी तरह जैसे दक्षिण अफ्रीकी सरकार ने इस संबंध में वैश्विक नेतृत्व किया है। उन्होंने कहा, सीबीई ने अपनी स्थापना के समय से ही एक कार्यकर्ता संगठन के रूप में अपनी प्रतिष्ठा अर्जित की है, क्योंकि यह हमेशा समानता के सिद्धांतों पर अडिग रहा है तथा किसी भी प्रकार के उत्पीड़न के प्रति जरा भी सहिष्णुता नहीं रखता है।

वर्ग पहेली नं. 2927

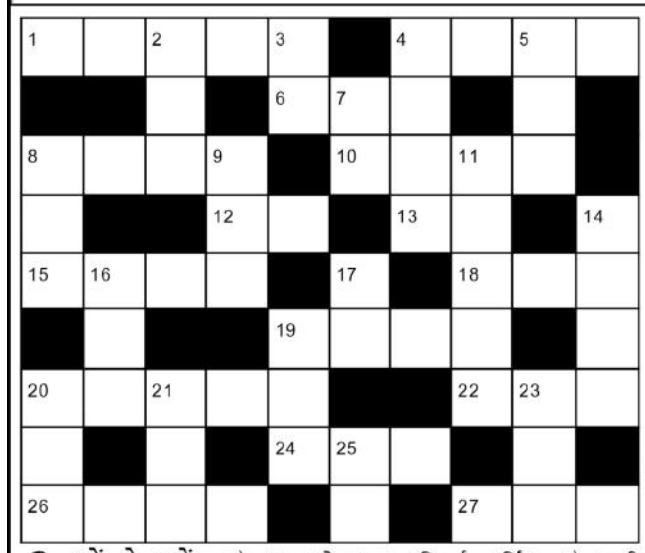

➲ *बायें से दायें:-* 1) शुश्रूषा; देखभाल; परिचर्या; नर्सिंग, 4) ऊपरी *(दृष्टि)*, 6) महत्त्वाकांक्षा; भ्रमदर्शन, 8) दुष्कीर्ति, 10) कुछ कुछ लाल, 12) पतवार, 13) पर्वत, 15) आपसदारी; यातायात, 18) पंक्ति, 19) गांव के पंचों का प्रमुख, 20) जोड़ घटा गुना भाग, 22) ऊँचा और गोलाकार स्तंभ, 24) क़ातिल; ख़ूनी, 26) उद्देश्य; स्वार्थ, 27) धिक्कार.

➲ *ऊपर से नीचे:-* 2) बार बार दोहराना, 3) वैमनस्य; ईर्ष्या, 4) प्राचीन; परंपरागत, 5) जल्द, 7) किंतु; पंख, 8) *हैंडबैग; पर्स*, 9) मूँदना, 11) एक त्योहार *(नाग)*, 14) सप्ताहान्त, 16) धर्मविरोधी, 17) हट कर; आगे; असमीप, 19) किसी वस्तु का ऊपरी भाग, 20) बाद का; आखिरी; सीमावर्ति; 21) विष, 23) धेवती; पोती, 25) निषिद्ध.

(उत्तर: अगले अंक में)

पिछली पहेली का उत्तर

अ	■	म	त	■	बा	र	ह	खा	ड़ी
चा	■	ट	क	ट	की	■	र	■	■
न	का	र	■	प्प	■	■	ए	ऐ	म
क	ला	■	भा	र	वा	ह	क	■	र
■	बा	स	न	■	रा	य	■	प	ना
■	ज़ा	■	म	र	ण	■	से	व	■
श	र	ब	ती	■	शी	ल	वा	न	■
रा	■	द	■	क्षा	■	च	■	सु	धा
बी	ज	ली	■	ति	त	र	बि	त	र

सुडोकू-पहेली-2887

		6	3				7	5
	1							
			2					
5								2
					8	4		
				1				
			4			8	1	
3			5					
2								

प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरना आवश्यक है। इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है।

••••

आड़ी और खड़ी में एवं 3-3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका ध्यान जरूर रखें।

सूडोकू पहेली - 2886 का उत्तर

9	4	1	5	8	7	2	3	6
2	7	6	3	4	9	1	8	5
8	3	5	1	6	2	4	7	9
5	9	7	4	3	1	6	2	8
1	8	3	7	2	6	5	9	4
6	2	4	8	9	5	7	1	3
3	5	2	6	7	8	9	4	1
7	6	8	9	1	4	3	5	2
4	1	9	2	5	3	8	6	7

आज टीएमसी कार्यसमिति की अहम बैठक, संगठनात्मक फेरबदल पर चर्चा

बैठक में बागी राज्यसभा सदस्य सुखेंदु शेखर राय को आमंत्रण नहीं

कोलकाता, समाज्ञा : मुख्यमंत्री व तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) सुप्रीमो ममता बनर्जी ने सोमवार को अपने कालीघाट स्थित आवास पर पार्टी की राष्ट्रीय कार्यसमिति की अहम बैठक बुलाई है, जिसमें संगठनात्मक बदलाव, संसद के आगामी शीतकालीन सत्र के लिए रणनीति और विवादास्पद वक्फ संशोधन विधेयक जैसे अन्य प्रमुख मुद्दों पर चर्चा होने की संभावना है। हालांकि, पार्टी ने इस बैठक में अपने वरिष्ठ नेता और राज्यसभा सदस्य सुखेंदु शेखर राय को आमंत्रित नहीं किया है, इसको लेकर चर्चा गरम है। दरअसल, अगस्त में आरजीकर अस्पताल में महिला चिकित्सक से दुष्कर्म व हत्या की हुई घटना के खिलाफ राय ने मुखर होकर अपनी पार्टी व राज्य सरकार की आलोचना की थी। इस घटना के बाद से राय लगातार पार्टी से दूरी बनाकर चल रहे हैं। हालांकि, बैठक में आमंत्रित नहीं किए जाने पर उन्होंने रविवार को टिप्पणी करने से इन्कार कर दिया। दूसरी ओर, तृणमूल के वरिष्ठ नेता और राज्य सरकार में मंत्री फिरहाद हकीम ने राय को बैठक में आमंत्रित नहीं किए जाने के सवाल पर कहा कि जो कोई भी पार्टी नियम के बाहर जाकर अनुशासनहीनता करेगा, उसे बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। इधर, बैठक में टीएमसी के राष्ट्रीय महासचिव व सांसद अभिषेक बनर्जी, लोकसभा में पार्टी संसदीय दल के नेता सुदीप बंद्योपाध्याय, वरिष्ठ सांसद सौगत राय, काकोली घोष दस्तीदार, प्रदेश इकाई के अध्यक्ष सुब्रत बख्शी, कोलकाता के मेयर फिरहाद हकीम और अन्य वरिष्ठ नेताओं के शामिल होने की उम्मीद है। टीएमसी के एक वरिष्ठ नेता ने कहा कि बैठक में शीतकालीन सत्र के लिए हमारी रणनीति और अन्य संगठनात्मक मुद्दों पर चर्चा की जाएगी। पार्टी के अंदरूनी सूत्रों का मानना है कि इस बैठक के दौरान लंबित संगठनात्मक फेरबदल को अंतिम रूप दिया जाएगा। टीएमसी सूत्रों का कहना है कि बैठक में विवादास्पद वक्फ संशोधन विधेयक पर पार्टी के रुख पर भी चर्चा होगी।

ममता की उपस्थिति में बैठक करना चाहता है तृणमूल समर्थित सरकारी कर्मचारी महासंघ

कोलकाता, समाज्ञा : मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की उपस्थिति में तृणमूल समर्थित सरकारी कर्मचारी महासंघ बैठक करना चाहता है। सूत्रों के अनुसार, संगठन की ओर से मंत्री मानस भुइयां ने इस मामले पर पहल की है। मुख्यमंत्री की ओर से हरी झंडी मिलते ही कोलकाता में बैठक की तैयारी शुरू कर दी जाएगी। तृणमूल कर्मचारी महासंघ की सदस्यता दो लाख 48 हजार है। इस संख्या को बढ़ाने के लिए संगठन सदस्यता अभियान चला रहा है। संगठन के नेता 2026 के विधानसभा चुनाव को ध्यान में रखते हुए महासंघ को मजबूत करना चाहते हैं, क्योंकि अगले विधानसभा चुनाव से पहले जिला कमेटियों में काफी फेरबदल किया जा रहा है। इसके अलावा

राज्य सरकार के कार्यालयों में विभिन्न शाखा समितियों का भी पुनर्गठन किया जा रहा है। स्वास्थ्य विभाग के अंतर्गत फेडरेशन कमेटियों के गठन को लेकर समीक्षा शुरू कर दी गई है। इसलिए नई कमेटी बनाई जाएगी। अगर मुख्यमंत्री इन सभी कार्यों में समय देंगी तो कोलकाता में कहीं बैठक आयोजित की जाएगी। गौरतलब है कि इस बैठक में मुख्यमंत्री की मौजूदगी को लेकर संगठनात्मक हित भी है,क्योंकि, महासंघ राज्य सरकार के कर्मचारियों को यह संदेश देना चाहता है कि मुख्यमंत्री को भी उनके संगठन पर भरोसा है। फिर सदस्यता अभियान में तेजी आएगी। इस संबंध में तृणमूल कर्मचारी महासंघ के नेता प्रताप नायक ने कहा कि हमने मुख्यमंत्री से समय मांगा है। मंत्री मानस भुइयां ने मुख्यमंत्री सचिवालय से समय मांगा है और जैसे ही उनका कार्यालय समय देगा, हम कोलकाता में राज्य सरकार के कर्मचारियों की सबसे बड़ी सभा में शामिल होंगे। माना जा रहा है कि सरकारी कर्मचारियों की आयोजित इस बैठक में मुख्यमंत्री आकर कोई बड़ी घोषणा कर सकती हैं।

अब संजय रॉय वर्चुअली होगा कोर्ट में पेश, प्रेसीडेंसी जेल में की जा रही है तैयारी

❑ **आरजीकर भ्रष्टाचार मामले में सीबीआई अगले सप्ताह चार लोगों के खिलाफ आरोप पत्र कर सकती है दाखिल**

कोलकाता, समाज्ञा

आरजीकर मामले के मुख्य आरोपी संजय रॉय को अब वर्चुअली सियालदह कोर्ट में पेश किया जा सकता है। वर्चुअल सुनवाई के लिए प्रेसीडेंसी जेल में आवश्यक बुनियादी ढांचा तैयार किया जा रहा है। सूत्रों के मुताबिक, ऐसा निर्णय सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए लिया गया है। इतने हाई प्रोफाइल कैदी को रोज प्रेसीडेंसी से सियालदह कोर्ट में लाना सुरक्षित नहीं है। उसके लिए हर दिन बड़ी संख्या में पुलिसकर्मियों को तैनात किया जाता। सुबह से शाम तक भारी पुलिस बल वहीं तैनात रहता है। इसके अलाव, कैदी जब जेल के वैन में बैठा हुआ होता है, तब खुद को निर्दोष साबित करने के लिए तरह-तरह की टिप्पणियां करता रहता है। इस कैदी के कारण कोर्ट परिसर में अफरा-तफरी का माहौल हो जाता है। पुलिस के एक वर्ग का मानना है कि ऐसी स्थिति में उसे हर दिन अदालत में लाना संभव नहीं है। सूत्रों के मुताबिक मामले की शिकायत जज को भी कर दी गई है, इसलिए इस बार संजय को वर्चुअली पेश करने पर विचार किया जा रहा है। सूत्रों के मुताबिक, इस बीच, आरजी कर के वित्तीय भ्रष्टाचार मामले में पूर्व प्रिंसिपल संदीप घोष समेत गिरफ्तार चार लोगों के खिलाफ सीबीआई अगले सप्ताह कोर्ट में चार्जशीट दाखिल कर सकती है।

आज से शुरू होगा बंगाल विधानसभा का शीतकालीन सत्र

आरजीकर घटना सहित अन्य मुद्दों पर शीतकालीन सत्र के भी हंगामेदार रहने की संभावना

कोलकाता, समाज्ञा : बंगाल विधानसभा का शीतकालीन सत्र सोमवार से शुरू होने जा रहा है। यह सत्र आगामी 10 दिसंबर तक चलने की संभावना है। अगस्त में सरकारी आरजी कर मेडिकल कालेज व अस्पताल में महिला चिकित्सक से दुष्कर्म और हत्या की घटना सहित कुछ अन्य मुद्दों पर शीतकालीन सत्र के भी हंगामेदार रहने की संभावना है। सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस के अंदरूनी सूत्रों के अनुसार, शीतकालीन सत्र के दौरान सत्तापक्ष प्रधानमंत्री आवास योजना (पीएमएवाई) के तहत राज्य सरकार को धन जारी करने में आनाकानी को लेकर केंद्र सरकार की भूमिका की निंदा करते हुए एक प्रस्ताव पेश करेगा। इस सत्र के दौरान ममता सरकार ने केंद्र के प्रस्तावित वक्फ बिल के खिलाफ विधानसभा में विधेयक पेश करने की भी योजना बनाई है। विधानसभा के शीतकालीन सत्र में केंद्र द्वारा वक्फ बिल पेश किए जाने पर उसके खिलाफ पहले निंदा प्रस्ताव लाने की चर्चा थी। परंतु, बदली हुई परिस्थिति में ममता सरकार प्रस्ताव नहीं बल्कि जवाबी विधेयक लाकर केंद्र सरकार को उत्तर देना चाहती हैं। विधानसभा

सचिवालय से मिली जानकारी के मुताबिक, सोमवार को सत्र के पहले दिन शोक प्रस्ताव पढ़ने के बाद विधानसभा का सत्र स्थगित कर दिया जाएगा। सत्ता पक्ष मंगलवार और बुधवार को विधानसभा में संविधान दिवस पर चर्चा का प्रस्ताव लाएगा। चर्चा का दौर खत्म होने के बाद ही राज्य वक्फ से जुड़ा बिल लाएगा।

उपचुनाव : मदारीहाट सीट पर हार को लेकर भाजपा सांसद मनोज तिग्गा ने भाजपा नेतृत्व को भेजी रिपोर्ट

कोलकाता, समाज्ञा

उत्तर बंगाल के अलीपुरद्वार से भाजपा सांसद मनोज तिग्गा ने विधानसभा उपचुनाव के नतीजे आने के 24 घंटे अंदर मदारीहाट सीट पर पार्टी की हार को लेकर रविवार को भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व को एक रिपोर्ट भेज दी। सूत्रों के अनुसार, इसमें उन्होंने भाजपा के गढ़ माने जाने वाले मदारीहाट में पार्टी की हार के कारणों का उल्लेख किया है। बता दें कि तिग्गा भाजपा के अलीपुरद्वार जिला अध्यक्ष भी हैं। राज्य के छह विधानसभा सीटों पर हुए उपचुनाव में सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस ने सभी पर शनिवार को शानदार जीत दर्ज की। इन छह सीटों में से अलीपुरद्वार जिले की मदारीहाट सुरक्षित सीट भी शामिल है। छह में से केवल मदारीहाट पर भाजपा का कब्जा था। 2016 और 2021 के विधानसभा चुनाव में लगातार दो बार मनोज तिग्गा ने इस सीट से जीत हासिल की थी। इस बार लोकसभा चुनाव में जीत के बाद तिग्गा ने विधायक पद से इस्तीफा दे दिया था, जिसके चलते इस सीट पर उपचुनाव हुआ।

तृणमूल पार्षद पर हमले के बाद सीपी ने 'नेटवर्क' बढ़ाने पर दिया जोर

कोलकाता, समाज्ञा : कोलकाता पुलिस कमिश्नर मनोज वर्मा ने कसबा के पार्षद सुशांत घोष के हमले की घटना के बाद सख्त निर्देश जारी किए। शनिवार को पुलिस कमिश्नर ने सभी थाने के ओसी और खुफिया विभाग के साथ बैठक की। जहां उन्होंने इंटेलिजेंस नेटवर्क को और अलर्ट रहने के निर्देश दिए हैं। इसके अलावा, सभी से अपने-अपने इलाकों में संदिग्धों की निगरानी बढ़ाने के निर्देश दिए। निगरानी के साथ-साथ नेटवर्क को मजबूत करने की भी बात कही। उनके मुताबिक कसबा घटना की पुनरावृत्ति रोकने के लिए डीडी यानी खुफिया विभाग के अधिकारियों को और अधिक सक्रिय होने की जरूरत है। शहर के हथियार डीलरों और आपूर्तिकर्ताओं की पहचान कर उन्हें पकड़ा जाना चाहिए।

इच्छापुर राइफल फैक्ट्री के पार्क में एक युवक की पीटकर हत्या

कोलकाता, समाज्ञा : इच्छापुर राइफल फैक्ट्री के पार्क में एक युवक की मौत को लेकर हंगामा खड़ा हो गया। आरोप है कि मृत युवक कृषाणु चटर्जी (32) की मौत फैक्ट्री के सुरक्षा कर्मी की मार से हुई है। उक्त मामले को लेकर मृतक के परिवार ने नौआपाड़ा थाने में शिकायत दर्ज करायी। कथित सुरक्षा कर्मी द्वारा हमले में घायल कृषाणु के दो अन्य दोस्त भी बैरकपुर बीएन बोस सब-डिविजनल अस्पताल में भर्ती हैं। आरोप है कि गत शनिवार की रात कृषाणु अपने एक दोस्त की बेटी की जन्मदिन पार्टी में गया था। खाना खाने के बाद इच्छापुर राइफल फैक्ट्री के पार्क में वह अपने दोस्तों के साथ बातचीत कर रहा था। आरोप है कि उस वक्त फैक्ट्री के गार्डों ने उसकी पिटाई कर दी। मृतक के बड़े भाई आर्क चट्टोपाध्याय ने आरोप लगाया कि इच्छापुर फैक्ट्री का पार्क एक 'सुरक्षित' क्षेत्र है। कृषाणु सहित कुछ लोग वहां खड़े होकर बात कर रहे थे। तभी 'अचानक डीएससी वाले तलाशी के लिए आये और उन्होंने कृषाणु व उसके दोस्तों को लाठियों से पीटा। इच्छापुर आनंदमठ सी ब्लॉक निवासी व मृतक के पिता काजल चट्टर्जी ने आरोप लगाया कि पार्क में बात कर रहे कृषाणु व उसके दोस्तों कुल तीन लोगों को गार्ड अंदर ले गये। इन लोगों को जमकर पीटा गया। इसके बाद, गार्ड उनके बेटे को डीएससी अस्पताल ले गये। काजल ने कहा कि इलाके में किसी को भी आने की इजाजत नहीं है। कभी वह स्वयं इच्छापुर राइफल फैक्ट्री में काम चुके हैं। इस फैक्ट्री में मेरे कई परिचित थे। उन्होंने मेरे बेटे की हत्या की है और मुझे इंसाफ चाहिए। पुलिस ने मृतक के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया और घटना की जांच कर रही है।

मेडिकल परीक्षा के लिए नई मानक संचालन प्रक्रिया

❑ **उत्तर पुस्तिका को एक विशिष्ट बॉक्स में रखकर डिजिटल लॉक के साथ विश्वविद्यालय को भेजने का निर्देश**

कोलकाता, समाज्ञा

राज्य स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय दिसंबर की शुरुआत से स्नातकोत्तर चिकित्सा परीक्षा में नया नियम लागू कर रहा है। इसके तहत परीक्षा समाप्ति के एक घंटे के भीतर उत्तर पुस्तिका को एक विशिष्ट बॉक्स में रखकर डिजिटल लॉक के साथ विश्वविद्यालय को भेजने का निर्देश दिया गया है।

इसके अलावा, विश्वविद्यालय ने परीक्षा के प्रबंधन के लिए विशिष्ट नियम भी तय किए हैं। हेल्थ यूनिवर्सिटी ने परीक्षा के आयोजन को लेकर मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) जारी कर दी है।

दरअसल, खुद मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने राज्य में मेडिकल जांच के लिए सख्त कदम उठाने का आदेश दिया है। इसके बाद, स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय के कुलपति की अध्यक्षता में छह सदस्यीय समिति का गठन किया गया। समिति ने हाल ही में पारदर्शी परीक्षा प्रणाली शुरू करने के लिए कई प्रस्ताव प्रस्तुत किए हैं।

सूत्रों के मुताबिक, यूनिवर्सिटी ने उन सिफारिशों के आधार पर एसओपी तैयार की है। पुन: परीक्षा कक्ष में प्रत्येक 25 परीक्षार्थी पर एक वीक्षक (इनविजिलेटर) निर्धारित किया गया है। कालेज के प्राचार्य, प्राचार्य और डीन केंद्र के एकमात्र प्रभारी हो सकते हैं। यदि नहीं, तो उन्हें केंद्र प्रभारी के रूप में संबंधित संस्थान के प्रोफेसर रैंक के एक डॉक्टर को निर्दिष्ट करना होगा।

एसओपी में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि परीक्षा कक्ष में दो पंक्तियों के बीच कितनी जगह रखी जानी चाहिए। कहा गया है कि किसी भी तरह से परीक्षार्थियों को एक कमरे में एक साथ नहीं रखा जा सकता है। यदि आवश्यक हो तो एक से अधिक कमरों की व्यवस्था की जानी चाहिए। यह भी कहा गया है कि पर्यवेक्षक कौन होगा, इसकी सूची परीक्षा शुरू होने से सात दिन पहले विश्वविद्यालय को बता दी जाए और किसी भी स्थिति में आरएमओ, डिमांस्ट्रेटर, असिस्टेंट और एसोसिएट प्रोफेसर, प्रोफेसर रैंक के डाक्टरों के अलावा कोई भी पर्यवेक्षक नहीं हो सकता है। उन पर्यवेक्षकों की जिम्मेदारियां भी एसओपीच में निर्दिष्ट हैं।

CHANGE OF NAME

I. No. JC-311676F Rank: Sub Maj Tikan Kumar Sahu of HQ chief Engineer, Eastern Command, C/o 56 APO, declared that my daughter's name wrongly mentioned as Subhada Priyadarshani Sahu instead of Subhada Priyadarshini Sahu in my service record that my Daughter will be known as Subhada Priyadarshini Sahu by Vide affidavit notary Govt. of India at Angul (Orisha) on 19.11.2024

PWD (GOVT OF WB) TENDER NOTICE

Short NIQ No.: 29/BB of 2024-25, Short NIQ No.: 09/BBES of 2024-25 & Short NIQ No.: 07/BBIT of 2024-25 of Assistant Engineer, Banga Bhawan, P.W.D. **under Banga Bhawan Sub Division,** from bonafied outsider only having credential for similar nature of work. Last Date & time for Receipt of Application for Participating in the Tender/ Quotation (Offline) **25.11.2024 up to 10.30 hrs.** Others details may be seen from the web site: http://etender.wb.nic.in & http://wbpwd.in

Sd/-
Officer-in-Charge &
Assistant Engineer,
P.W.D. Banga Bhawan

उल्टाडांगा की एक झुग्गी में लगी आग, 12 झोपड़ियां जलकर राख

कोलकाता, समाज्ञा : बिधाननगर स्थित कृष्णा पल्ली बस्ती में रविवार को आग लगने से रेलवे लाइन के किनारे बसी करीब 12 झोपड़ियां जलकर राख हो गईं जबकि कई घर क्षतिग्रस्त हो गये। इस घटना के बाद इलाके में दहशत का माहौल है। हालांकि, किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है। स्थानीय सूत्रों के मुताबिक, इस दिन, सुबह करीब 7 बजे एक झोपड़ी में अचानक आग लग गयी। देखते ही देखते चारों ओर धुंआ छा गया। घटना की सूचना दमकल विभाग को दी गई।

सूचना पाकर घटनास्थल पर दमकल के छह इंजन मौके पर पहुंचे। करीब एक घंटे की मशक्कत के बाद दमकल कर्मियों और स्थानीय लोगों के प्रयास से आग पर काबू पाया गया। आग कैसे लगी यह स्पष्ट नहीं हो पाया है। स्थानीय लोगों का मानना है कि अगर समय पर दमकल इंजन नहीं पहुंचती तो बड़ी दुर्घटना हो सकती थी। घटना की खबर पाकर अग्निशमन मंत्री सुजीत बोस मौके पर गये। उन्होंने कहा कि अब आग नियंत्रण में है। घटना की जांच की जाएगी।

सुंदरवन से लापता दो छात्राओं का शव बरामद

कोलकाता, समाज्ञा

दक्षिण 24 परगना जिले के काकद्वीप विधानसभा के काशीनगर और माधवनगर रेलवे स्टेशन से सटे इलाके में रविवार को दो छात्राओं का पुलिस ने शव बरामद किया। उक्त शव सड़क के किनारे मिले। स्थानीय सूत्रों के मुताबिक, दोनों मृत छात्रों के नाम सुष्मिता दास और समा जाना है। पारिवारिक सूत्रों के अनुसार, दोनों छात्राएं सुंदरवन आदर्श विद्यामंदिर में 12वीं कक्षा में पढ़ती थी। गत शनिवार को दोनों ट्यूशन पढ़ने के लिए घर से निकली और तब से घर नहीं लौटी। दोनों लापता छात्रों के परिवार ने हारवुड पॉइंट कोस्टल पुलिस स्टेशन में एक लिखित शिकायत दर्ज कराई है। पुलिस ने परिजनों की शिकायत के आधार पर जांच शुरू की, लेकिन रविवार को दोनों छात्राओं के शव रेलवे स्टेशन की रेलवे लाइन के किनारे से बरामद हुए। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। मृतक सुष्मिता दास के परिजनों ने बताया कि उनकी बेटी की हत्या योजनाबद्ध तरीके से की गयी है। वह अपने मामा के घर रहकर पढ़ाई करती थी। पूरा परिवार शोक में है। हालांकि, सुंदरवन पुलिस जिले की पुलिस इस बात की जांच में जुट गई है कि दोनों लड़कियों की मौत कैसे हुई। इस घटना में हारवुड पॉइंट कोस्टल पुलिस स्टेशन तीन लोगों को हिरासत में लेकर उनसे पूछताछ कर रही है।

मोरीजावाला परिवार में शोक

अत्यन्त दु:ख के साथ सूचित कर रहे हैं कि हमारी सुहृदया

रीतू देवी अग्रवाल

(धर्मपत्नी : **विजय कुमार अग्रवाल**)

का स्वर्गवास रविवार दिनांक 24.11.2024 को हो गया है।

बैठक : 81, चिन्तामणि दे रोड, हावड़ा-711101 पर रविवार दि. 29.11.24 से 3.12.24 तक 2 बजे से 5 बजे तक होगी।

: शोकाकुल :

राजेन्द्र प्रसाद - पुष्पा देवी (ससुर-सास)
महेन्द्र प्रसाद-चम्पा, किसन-विमला, पवन-संगीता
(चाचा ससुर-चाची सास)
तुषार एवं मयंक (पुत्र) एवं समस्त **मोरीजावाला परिवार**

प्रतिष्ठान :

मोरीजावाला इण्टरप्राइजेज
P-2, Strand Bank Road, Kolkata-700 007

युवक ने गर्भवती प्रेमिका की हत्या कर शव को जमीन में दफनाया

पुलिस की पूछताछ में आरोपित ने जुर्म किया कबूल

कोलकाता : नदिया जिले के भीमपुर थाना इलाके में शादी के लिए दबाव बनाने पर एक युवक ने अपनी गर्भवती प्रेमिका की हत्या कर दी और इसके बाद शव को दफना दिया। रविवार को पुलिस ने जमीन खोदकर 17 साल की लडक़ी का शव बरामद किया। हत्या के आरोप में मृतका के प्रेमी को गिरफ्तार कर लिया गया है। नाबालिग के परिजनों ने बताया कि लडक़ी इसी महीने की 21 तारीख से लापता थी। इस घटना को लेकर इलाके में तनाव है। मृतका के परिजनों का आरोप है कि नाबालिग गर्भवती थी। प्रेमी ने उस पर गर्भपात कराने का दबाव डाला। लेकिन नाबालिग अजन्मे बच्चे को नष्ट करने को राजी नहीं हुई। इसी बात को लेकर दोनों में बहस हो रही थी। लडक़ी पिछले गुरुवार को घर से कई सामान लेकर बाहर गई थी। घर के लोगों ने जगह-जगह तलाश की लेकिन लडक़ी कहीं नहीं मिली। शादी के लिए दबाव बनाने पर उसके प्रेमी ने उसकी हत्या कर दी। स्थानीय सूत्रों के अनुसार, पेशे से राजमिस्त्री 24 वर्षीय युवक का 17 वर्षीय लड़की से प्रेम संबंध था। कृष्णानगर पुलिस जिले के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक संजय मित कुमार मकवान ने बताया कि नाबालिग के परिजनों से बातचीत के बाद लड़की के प्रेमी का पता लगाया गया। शुरुआती पूछताछ के बाद युवक को गिरफ्तार कर लिया गया। लगातार पूछताछ के बाद युवक ने सब कुछ उगल दिया। आरोपित ने कबूल कर लिया है कि उसने अपनी प्रेमिका की हत्या कर उसे एक जगह दफना दिया है। इसके बाद, पुलिस संबंधित स्थान पर गई और शव बरामद किया। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है।

मां को खोने के बाद मानसिक रूप से टूटी अर्पिता, हाईकोर्ट से पैरोल अवधि बढ़ाने की अपील

कोलकाता, समाज्ञा : अर्पिता मुखर्जी अपनी पैरोल छुट्टी बढ़ाने के लिए कलकत्ता हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाने जा रही हैं। मां की मौत के कारण अर्पिता गुरुवार को पैरोल पर घर लौटी थी। बताया जा रहा है कि अर्पिता अपनी मां को खोने के कारण मानसिक रूप से टूट गयी है, इसलिए वह कुछ दिन और घर पर रहना चाहती हैं। आईजी (कैदी) किसी आरोपी को पांच दिन की पैरोल दे सकता है। शुरुआत में उन्होंने दो दिन की छुट्टी दी थी। बाद में, इसे दो दिन और यानी सोमवार तक बढ़ा दिया गया। नतीजतन, अर्पिता मुखर्जी को सोमवार को वापस जेल जाना होगा। लेकिन उन्होंने घर में और कुछ दिन रहने के लिए पैरोल अवधि बढ़ाने की मांग को लेकर हाई कोर्ट का दरवाजा खटखटाया है।

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आ सुव।।
www.samagya.in
समाज्ञा
NEWS PAPER ADVERTISING SOLUTION
▪ MATRIMONIAL ▪ EDUCATION ▪ OBITUARY
▪ PROPERTY ▪ NAME CHANGE ▪ REMEMBRANCE
▪ RECRUITMENT ▪ PUBLIC NOTICE ▪ DISPLAY
TO AD IN SAMAGYA PLEASE CONTACT
samagyaadvt@gmail.com | www samagya.in
81, Chintamani Dey Road, Howrah 711 101, Mobile: 70444 44522

कुल्टी में एसटीएफ की छापेमारी, हथियारों के जखीर के साथ दो गिरफ्तार

आसनसोल : राज्य पुलिस की एसटीएफ ने भारी मात्रा में आग्नेयास्त्र और कारतूस बरामद किये हैं। यह तलाशी अभियान गुप्त सूचना के आधार पर कुल्टी थाना अंतर्गत राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 19 पर चलाया गया। इस दौरान पुलिस ने दो लोगों को गिरफ्तार किया है। इनकी पहचान मिनारुल इस्लाम (33) और शफीकुल मंडल (37) के रूप में हुई है। पुलिस सूत्रों के मुताबिक, शनिवार को आसनसोल के कुल्टी थाना क्षेत्र के कल्याणेश्वरी मंदिर इलाके में एक घर

में एसटीएफ की टीम ने छापेमारी की। ऑपरेशन में कुल्टी थाने की पुलिस भी मौजूद थी। उस घर में आग्नेयास्त्र जमा होने की सूचना मिलने के बाद ऑपरेशन को अंजाम दिया गया। उस घर से 10 पाइप गन, 8 एमएम की 50 राउंड कारतूस, 9 एमएम की 4 राउंड कारतूस मिली। पुलिस का अनुमान है कि इतनी सारी आग्नेयास्त्र राज्य के बाहर से आये थे। आसनसोल-दुर्गापुर पुलिस आयुक्तालय के उपायुक्त (पश्चिम) संदीप कररा ने कहा कि आग्नेयास्त्रों की बरामदगी के संबंध में दो लोगों से पूछताछ की गई। उन्होंने आग्नेयास्त्रों के आयात से अपना संबंध स्वीकार किया। लेकिन इतने सारे असलहे किस मकसद से जमा किये गये थे, इसकी कोशिशें जारी हैं। बाद में, दो आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस सूत्रों के मुताबिक आरोपियों के नाम मिनारुल इस्लाम और सफीकुल इस्लाम हैं। दोनों का घर मुर्शिदाबाद के डोमकल में है। पुलिस सूत्रों के अनुसार, वे एक अंतर्राज्यीय अवैध हथियार सौदा गिरोह के सदस्य हैं।

खिदिरपुर डॉक में नौसेना दिवस समारोह के दौरान लोगों ने आईएनएस सावित्री का दौरा किया।

साल्टलेक में अकेली बुजुर्ग महिला को बेहोश कर लूटे सोने के गहने और नकद

कोलकाता, समाज्ञा : साल्टलेक के पूर्वांचल में एक सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक के घर से कथित तौर पर नकदी और सोने के आभूषणों की लूट हुई। पता चला है कि पहले वृद्धा को इंजेक्शन लगाकर बेहोश किया गया और फिर लूटपाट की गई। आरोप है कि सोने के आभूषण और 3 लाख रुपरे चोरी हो गए। इतना ही नहीं, वृद्धा ने यह भी आरोप लगाया कि उसका गला दबाकर जान से मारने की कोशिश की गई। अभी तक पुलिस ने आधिकारिक तौर पर कुछ भी घोषित नहीं किया है, लेकिन खबर है कि कुछ लोगों को गिरफ्तार किया गया है। सूत्रों के मुताबिक, वृद्धा के पति की पिछले

महीने मौत हो गई थी। तब से सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापिका घर पर अकेली रहती हैं।

शिशु मेले के आयोजन को लेकर तृणमूल सांसद के सामने पार्टी के दो गुटों में मारपीट

❑ पार्टी ने घटना पर विस्तृत रिपोर्ट मांगी

पश्चिम मेदिनीपुर : जिले के घटाल में रविवार को बच्चों के मेले के आयोजन के लिए बुलाई गई बैठक के दौरान स्थानीय सांसद दीपक अधिकारी (देव) के सामने अलग-अलग गुटों से जुड़े तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) कार्यकर्ताओं में कथित तौर पर मारपीट हुई। पार्टी सूत्रों ने यह जानकारी दी। पार्टी सूत्रों ने बताया कि देव और पूर्व विधायक शंकर दोलुई के समर्थकों के बीच लाठी-डंडे चले और हाथापाई हुई। सूत्रों के मुताबिक, झड़प के दौरान कुर्सियां तोड़ दी गईं और खाना कार्यक्रमस्थल पर बिखर गया। पुलिस ने बताया कि कार्यक्रम के दौरान हाथापाई हुई और मामले की जांच जारी है। पार्टी सूत्रों ने बताया कि

घटाल में 30 वर्ष से अधिक समय से आयोजित होने वाले वार्षिक कार्यक्रम 'शिशु मेला' के लिए आयोजन समिति के सदस्यों की नियुक्ति को लेकर दोनों गुटों के बीच लंबे समय से प्रतिद्वंद्विता चली आ रही है। इस मुद्दे को सुलझाने के लिए बैठक में देव और दोलुई दोनों ने भाग लिया लेकिन असहमति के बाद समर्थक हिंसक हो गए। सूत्रों ने बताया कि मेले का संयुक्त रूप से प्रबंधन करने का निर्णय लिए जाने के बावजूद चर्चा के दौरान तनाव बढ़ गया और बात मारपीट तक पहुंच गयी। घटना के तुरंत बाद देव कार्यक्रमस्थल अरबिंदा स्टेडियम से चले गए। देव ने इस घटना पर आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा कि वे शीर्ष पार्टी नेतृत्व से इस संबंध में निर्देश मिलने के बाद बैठक में आए थे। उन्होंने आश्चर्य जताया कि दोलुई के साथ उनकी सफल बैठक के बावजूद ऐसी घटना कैसे हो सकती है। स्थानीय सांसद ने कहा कि उनका उद्देश्य मेले में आने वाले लोगों के लिए किफायती सामान सुनिश्चित करने के लिए स्टॉल की लागत कम रखना था। उन्होंने कहा कि मेला आयोजित किया जाएगा और इस घटना से घटाल की सकारात्मक छवि पर असर नहीं पड़ना चाहिए। राज्य के सिंचाई मंत्री मानस भुनिया ने कहा कि पार्टी ने घटना पर विस्तृत रिपोर्ट मांगी है और पुलिस को शांति बनाए रखने के निर्देश दिए गए हैं। बता दें कि यह पहली बार नहीं था जब अधिकारी और दोलुई के गुटों के बीच झड़प हुई है।

जोड़ाबागान में देर शाम भरे बाजार में युवक पर चॉपर से हमला, आरोपी फरार

कोलकाता, समाज्ञा

उत्तर कोलकाता के जोड़ाबागान थाना अंतर्गत नतून बाजार मर्गीपट्टी इलाके में देर शाम खूनी वारदात से सनसनी फैल गई। जानकारी के अनुसार, एक बदमाश ने स्थानीय युवक पर चॉपर से हमला कर दिया। घायल का नाम अमित सोनकर उर्फ खरगोश (30) है। उसे गंभीर हालत में अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस सूत्रों के अनुसार, रविवार की शाम खरगोश नतून बाजार मर्गीपट्टी इलाके में खड़ा था। तभी, पीछे से उत्तम सोनकर और उसके साथियों ने उस पर हमला कर दिया। हमले में अमित सोनकर गंभीर रूप से घायल हो गए। स्थानीय लोगों की मदद से घायल युवक को अस्प-ताल में भर्ती कराया गया। उधर, हमले के बाद से उत्तम सोनकर फरार है। पुलिस ने मुख्य आरोपी और उसके साथियों की तलाश शुरू कर दी है। बताया गया है कि घटना में उत्तम भी घायल हो गया था।

स्थानीय सूत्रों के मुताबिक, दोनों के बीच पुराना विवाद था। उत्तम सोनकर के परिवार वाले इसी नतून बाजार इलाके में रहते हैं। जबकि, अमित अपनी मां और पत्नी के साथ हावड़ा के एक फ्लैट में रहता हैं। गत शनिवार को अमित को बच्चा हुआ। इस दिन, जब वह अपने पुराने मोहल्ले में आया तो उत्तम ने उस पर हमला कर दिया। उल्लेखनीय है कि अमित और उत्तम इलाके में रंगदारी समेत कई अपराध के आरोपी हैं। दोनों को पुलिस कई बार विभिन्न मामलों में गिरफ्तार कर चुकी है।

शादी के लिए युवती के अपहरण की कोशिश, तीन गिरफ्तार

कोलकाता, समाज्ञा

एक युवती को जबरन अगवा करने की कोशिश के आरोप में पुलिस ने तीन लोगों को गिरफ्तार किया है। पुलिस सूत्रों के अनुसार, गिरफ्तार युवक रजनी मंडल शादी के लिए एक युवती का अपहरण करने आया था। उक्त घटना से इलाके में सनसनी फैल गई है।

पुलिस व स्थानीय सूत्रों के अनुसार, कुलतली के सिकिरहाट निवासी रजनी का कुछ दिन पहले गोपालगंज ग्राम पंचायत की एक युवती से शादी के लिये बातचीत चल रही थी। लेकिन उक्त युवती को दूल्हे के तौर रजनी मंडल पसंद नहीं था। ऐसे में युवती के घर वालों ने शादी का प्रस्ताव ठुकरा दिया। कथित तौर पर, इसके बाद भी रजनी

उक्त युवती को लगातार शादी का प्रस्ताव दे रहा था। यह भी आरोप है कि बात न मानने पर आत्महत्या करने की धमकी भी दी। बात नहीं बनी तो रजनी कुछ लोगों के उक्त युवती के घर आ धमका और युवती को जबरन उठाकर ले जाने की कोशिश की। पड़ोसियों ने मौके पर आकर रजनी और बाकी लोगों को पकड़ लिया और पुलिस को सूचना। पुलिस ने आकर तीन लोगों को गिरफ्तार कर लिया।

पूर्व रेलवे की आरपीएफ ने खोए हुए 46 बच्चों को सफलतापूर्वक बचाया

कोलकाता, समाज्ञा

पूर्व रेलवे की आरपीएफ ने सतर्कता और करुणा का असाधारण प्रदर्शन करते हुए खोए हुए बच्चों को सफलतापूर्व बचाया। आरपीएफ की टीम ने 1 नवंबर से 15 नवंबर की अवधि के दौरान 46 बच्चों को सफलतापूर्वक बचाया है। इन बच्चों की उम्र 5 से 16 वर्ष की आयु के बीच थी। जो विभिन्न स्थानों पर लक्ष्यहीन रूप से घूमते हुए पाए गए थे। बताया जा रहा है कि इन बच्चों में कुल 34 लड़के और कुल 12 लड़कियां ती।

वहीं, सबसे छोटा बच्चा सिर्फ 5 साल का था। ये बच्चे विभिन्न जगहों के हैं। इन बच्चों में से 26 बच्चे दुर्व्यवहार या हिंसा के कारण घर से भागे थे। 13 बच्चे बाल तस्करी के शिकार थे। इनमें से एक बच्चे को नशे की लत लगवायी गयी थी, जो एक गंभीर स्थिति में पाया गया। 4 बच्चे भीड़ के कारण अपने परिवार से अलग हो गए और 2 बच्चे सड़कों पर पाए गए। सभी 46 बच्चों को उन गैर सरकारी संगठनों को सौंप दिया गया जो बाल संरक्षण में विशेषज्ञ हैं, उन्हें आश्रय, शिक्षा और भावनात्मक समर्थन प्रदान करते हैं। ये बच्चे उस बड़े मुद्दे की एक छोटी सी झलक हैं जिस पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है - उन बच्चों की सुरक्षा और कल्याण जो विभिन्न कारणों से खुद को फंसे हुए, खोए हुए या शोषित पाते हैं।

हावड़ा से सेउराफुली जंक्शन तक चलाया गया विशेष टिकट चेकिंग अभियान

कोलकाता, समाज्ञा : पूर्व रेलवे के हावड़ा डिवीजन के वाणिज्यिक विभाग ने शनिवार को एक व्यापक जागरूकता अभियान और एक विशेष टिकट-जांच अभियान चलाया। यह अभियान वरिष्ठ मंडल वाणिज्यिक प्रबंधक (सीनियर डीसीएम) राहुल रंजन के नेतृत्व में चलाया गया। इस पहल ने श्रीरामपुर और सेउराफुली जंक्शन सहित प्रमुख स्टेशनों को कवर किया और यात्रियों से बातचीत कर जागरूकता बढ़ायी। इस अभियान में अधिकारी और कर्मचारी यात्रियों के साथ सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं और लगातार वैध टिकट खरीदने के महत्व पर जोर दे रहे हैं। बिना टिकट यात्रा करने वाले

या अनुचित टिकट रखने वाले यात्रियों से व्यक्तिगत रूप से संपर्क किया गया और उन्हें रेलवे नियमों का पालन करने की सलाह दी जा रही है। सेउराफुली जंक्शन के यात्रियों ने इस पहल पर सराहना व्यक्त की। हावड़ा डिवीजन के वाणिज्यिक विभाग द्वारा जागरूकता अभियान और टिकट-चेकिंग अभियान का यह दोहरा प्रयास एक न्यायसंगत और कुशल यात्रा वातावरण को बढ़ावा देने के लिए भारतीय रेलवे के समर्पण को उजागर करता है।

कार्यसमिति की बैठक में अनुब्रत मंडल को कालीघाट में बुलावा

बीरभूम/कोलकाता : बीरभूम लौटने के बाद भी उनमें अब वह एकनिष्ठ शक्ति नहीं रही। अनुब्रत मंडल को कोर कमेटी में अपने साथ राजनीतिक गतिविधियां चलाने का संदेश दिया गया है। अब अनुब्रत को कालीघाट से बुलावा आया है। तिहाड़ से लौटने के बाद उन्हें कई राजनीतिक मंचों पर देखा गया है, लेकिन अभी तक उनकी मुलाकात तृणमूल सुप्रीमो ममता बनर्जी से नहीं हुई है। इस बार, कालीघाट में अनुब्रत की मुलाकात ममता से होने की संभावना है। ममता बनर्जी ने सोमवार को कालीघाट में राष्ट्रीय कार्यसमिति की बैठक बुलाई है।

आरजीकर से सीख : पोस्टमार्टम का चालान अनिवार्य, सभी थानों को भेजा गया निर्देश

कोलकाता, समाज्ञा

आरजीकर की घटना से सीख लेते हुए कोलकाता पुलिस ने बड़ा कदम उठाया है। असामान्य मौतों के पोस्टमार्टम के लिए अब चालान अनिवार्य कर दिया गया है। कोलकाता पुलिस मुख्यालय लालबाजार की ओर से सभी पुलिस स्टेशनों को विशेष रूप से सतर्क किया गया है। उल्लेखनीय है कि आरजीकर के मुद्दे पर राज्य को सुप्रीम कोर्ट में सवालों का सामना करना पड़ा। केस डायरी के साथ पोस्टमार्टम का चालान क्यों नहीं दिया गया? इस पर, अधिवक्ता फिरोज एडुल्जी सवाल उठाए थे। तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पीठ ने इस मुद्दे पर राज्य सरकार से जवाब तलब किया था। नियमानुसार, जब पुलिस शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजती है तो उन्हें वह फॉर्म अपने साथ ले जाना होता है। कोर्ट की पूछताछ के बाद मामला सामने आया। बाद में, राज्य की ओर से वकील कपिल सिब्बल ने कहा कि कोलकाता पुलिस के मामले में इस चालान (फॉर्म-5371) की छपाई लंबे समय से बंद है। इस चालान में शव किस हालत में है? यह कहां पाया गया? क्या शव पर कोई निशान है? मृतकों का क्या हुआ? जांच करने वाले पुलिसकर्मी को चालान की दो प्रतियां बनानी होंगी। एक अस्पताल को दिया जाता है, दूसरा मृतक के परिवार को। लालबाजार ने पुराने नियमों को फिर से लागू करने का निर्देश दिया है।

महात्मा गांधी रोड और सेंट्रल स्टेशन के बीच स्टील थर्ड रेल को सफलतापूर्वक एल्युमीनियम थर्ड रेल से बदला

कोलकाता, समाज्ञा : कोलकाता मेट्रो रेलवे, देश की पहली मेट्रो ने ब्लू लाइन में अपनी स्टील थर्ड रेल को एल्युमीनियम थर्ड रेल से बदलने की महत्वाकांक्षी योजना शुरू की है। इस परियोजना का काम धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा है। राष्ट्र के लिए 40 साल की शानदार सेवा पूरी करने पर, कोलकाता मेट्रो ने शनिवार रात सेंट्रल स्टेशन पर मुख्य लाइन पर स्टील थर्ड रेल को एल्युमीनियम थर्ड रेल से सफलतापूर्वक बदल दिया। इस योजना के कार्यान्वयन के साथ, कोलकता मेट्रो अब लंदन, म्यूनिख, मॉस्को और इस्तांबुल मेट्रो की लीग में शामिल हो गई है। केंद्र सरकार के सार्वजनिक उपक्रम सेल द्वारा निर्मित स्टील थर्ड रेल, कोलकाता मेट्रो में 40 वर्षों से सफलतापूर्वक रेक को बिजली प्रदान कर रही है। प्रौद्योगिकी के विकास

के साथ, 80 के दशक की उन्नत प्रणालियां हरित प्रौद्योगिकियों द्वारा संचालित आज के युग में अप्रासंगिक और ऊर्जा अक्षम होती जा रही हैं। उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए, रेल मंत्रालय ने 2012 में निर्णय लिया है कि सभी नए मेट्रो कॉरिडोर एल्युमीनियम थर्ड रेल से बनाए जाएंगे। तदनुसार, 40 साल पुरानी ब्लू लाइन को छोड़कर मेट्रो रेलवे के सभी कॉरिडोर में एल्युमीनियम थर्ड रेल हैं। ग्रीन फील्ड परियोजनाओं में एल्युमीनियम तीसरी रेल को लागू करने के बाद, रेल मंत्रालय ने ब्लू लाइन की 34 किलोमीटर लंबी स्टील तीसरी रेल को बदलने का निर्णय लिया है।

यार्ड लाइन और मुख्य लाइन की तीसरी लाइन को सफलतापूर्वक बदलने के बाद, संयुक्त निदेशक स्तर के अधिकारी सुमित कयाल की अगुवाई वाली टीम ने 23 नवंबर की रात को महात्मा गांधी रोड और सेंट्रल के बीच मुख्य लाइन की एल्युमीनियम तीसरी रेल द्वारा सेल निर्मित स्टील तीसरी रेल को बदलने की चुनौती ली और कार्य सफलता-पूर्वक पूरा किया।

कलकत्ता वस्त्र व्यवसायी सेवा समिति का निःशुल्क चक्षु एवं स्वास्थ्य परीक्षण शिविर आयोजित

कोलकाता, समाज्ञा : कलकत्ता वस्त्र व्यवसायी सेवा समिति की ओर से रविवार को गंगासागर स्थित धवलाहाट प्रसादपुर अटल विद्या भवन के प्रांगण में निःशुल्क चक्षु एवं स्वास्थ्य परीक्षण शिविर आयोजित किया गया। इस सेवा शिविर में 817 जरूरतमंदों का चक्षु परिक्षण कुशल चिकित्सकों के द्वारा किया गया। इस दौरान सभी लोगों को भोजन कराया गया और सभी जरूरतमंदों को दवाई प्रदान कराया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम को सफल बनाने में समिति उपाध्यक्ष सीताराम वर्मा, कार्यक्रम संयोजक बजरंग लाल खेडिया, सुनीत तोदी, सहसचिव दयानन्द गुप्ता, कमल चंद बैद, सदस्य सुशील मिमाणी, सुरेन्द्र शर्मा, राकेश कुमार शर्मा सेवा कार्य में सक्रिय रहे। समिति अध्यक्ष महेन्द्र कुमार चौधरी व सचिव नन्दकिशोर भूतड़ा ने बताया कि सभी जरुरतमंदों का चक्षु ऑपरेशन आमतल्ला स्थित विवेकानंद नेत्र निरामय अस्पताल में कराया जायेगा और 14 दिसंबर को सभी को चश्मा वितरण किया जाएगा।

कोलकाता पहुंचे नौसेना के युद्धपोत आईएनएस सावित्री का आज व कल परिदर्शन कर सकेंगे आम लोग

❑ बंगाल में नौसेना के इंचार्ज ने लोगों को युद्धपोत देखने आने के लिए किया आमंत्रित

कोलकाता, समाज्ञा : नौसेना दिवस समारोह- 2024 के हिस्से के रूप में भारतीय नौसेना के पूर्वी कमान, विशाखापट्टनम से कोलकाता पहुंचे एक प्रमुख युद्धपोत आईएनएस सावित्री का परिदर्शन करने रविवार को नौसेना के बंगाल एरिया के इंचार्ज (एनओआइसी) कमोडोर अजय यादव पहुंचे। उन्होंने खिदिरपुर बंदगाह में डाक किए गए इस युद्धप-ोत का जायजा लिया और इस जहाज के कमांडर विजय झा व अन्य अधिकारियों से बातचीत की। इस मौके पर पत्रकारों से बातचीत में कमोडोर यादव ने बताया कि आम लोगों के परिदर्शन के लिए यह युद्धपोत 26 नवंबर तक कोलकाता

नौसैनिक युद्धपोत आईएनएस सावित्री का रविवार को परिदर्शन के दौरान जहाज के कमांडर विजय झा के साथ नौसेना के बंगाल इंचार्ज कमोडोर अजय यादव (दाएं)।

में रहेगा। उन्होंने आम जनता, स्कूली बच्चों, युवाओं, एनसीसी कैडेटों सभी को इस युद्धपोत का परिदर्शन करने के लिए आमंत्रित किया। उन्होंने बताया कि नागरिकों से जुड़ने और नौसेना के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए यह युद्धपोत आगंतुकों के लिए खुला रहेगा, जिसमें लोगों को इस जहाज पर चढ़ने के साथ चालक दल के साथ बातचीत करने और नौसेना की परिचालन क्षमता को समझने का एक अनूठा अवसर प्रदान करेगा। खिदिरपुर डाक के गेट नंबर तीन से लोगों को प्रवेश दिया जाएगा। 25 व 26 नवंबर को सुबह 9 से शाम 4 बजे तक आम जनता इस युद्धपोत का परिदर्शन कर सकेंगे। इसे देखने आने वाले सभी लोगों को आधार कार्ड साथ रखना होगा। रविवार को पहले दिन बड़ी संख्या में लोगों ने इस युद्धपोत का परिदर्शन किया। लोगों को इस युद्धपोत पर निर्देशित स्थान पर जाने व इसे नजदीक से देखने का मौका मिला। बता दें कि शनिवार को यह युद्धपोत यहां पहुंचा।

इलाके पर कब्जे को लेकर मुर्शिदाबाद में तृणमूल के दो गुटों में संघर्ष, कई लोग घायल

बम धमाकों से स्थानीय निवासियों में फैली दहशत, अब तक तीन गिरफ्तार

मुर्शिदाबाद : मुर्शिदाबाद के रघुनाथगंज थाना क्षेत्र के सेकेंद्रा ग्राम पंचायत इलाके में इलाके पर कब्जे को लेकर तृणमूल के दो गुटों के बीच संघर्ष की घटना घटी है। शनिवार रात हुए बम धमाकों से स्थानीय निवासियों में दहशत फैल गई। बम विस्फोट में कई तृणमूल कार्यकर्ता घायल हो गए। उन्हें स्थानीय अस्पताल में भर्ती कराया गया है। इस घटना में पुलिस ने अब तक तीन लोगों को गिरफ्तार किया है। हालांकि, जिला तृणमूल के शीर्ष नेतृत्व ने अशांति के बारे में अपना मुंह नहीं खोला है। शनिवार की रात स्थानीय लोगों ने एक के बाद एक धमाकों की आवाज सुनी। झगड़े की

शुरुआत दो पंचायत सदस्यों के बीच हुई। सेकेन्द्रा ग्राम पंचायत सदस्य डाली खातून के पति अब्दुर रहमान शनिवार को जंगीपुर जा रहे थे। उन्होंने तृणमूल नेता अब्दुर रहमान और पार्टी की एक अन्य पंचायत सदस्य रफीना बीबी के पति शुकू शेख से मुलाकात की। किसी बात को लेकर उनमें बहस होने लगी। डाली के पति ने आरोप लगाया कि शुकू के कुछ करीबी दोस्तों और बाहरी लोगों ने उन पर बिना वजह हमला किया। इसके बाद दो गुटों के लोगों के बीच झड़प शुरू हो गई। दोनों पक्षों से कई लोग घायल हो गए। कई लोगों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। हालांकि, शुकू ने अपने ऊपर लगे आरोपों से इन्कार किया और जवाबी आरोप लगाए। झड़प की सूचना मिलने पर रघ-ुनाथगंज थाने की पुलिस मौके पर गई। जंगीपुर के एसडीपीओ प्रबीर मंडल ने कहा कि प्राथमिक तौर पर माना जा रहा है कि पुराने विवाद को लेकर दोनों पक्षों के बीच झगड़ा हुआ है। स्थिति अब नियंत्रण में है। मामले की जांच चल रही है।

बांकड़ा में जर्जर सड़क व जलजमाव के खिलाफ प्रदर्शन

हावड़ा, समाज्ञा : डोमजूर थाना अंतर्गत बांकड़ा तीन नंबर ग्राम पंचायत अंतर्गत हॉस्पिटल रोड की दुर्दशा और जलजमाव होने को लेकर रविवार को स्थानीय लोगों ने पथावरोध किया। प्रदर्शनकारियों ने बताया कि लंबे समय से बांकड़ा बाजार से बांकड़ा अस्पताल तक करीब एक किलोमीटर तक सड़क जर्जर हालत में है। सड़क पर बड़े-बड़े गड्ढे हो गये हैं। सड़क पर पानी जमा रहता है। गंदे पानी से होकर गुजरना पड़ता है। मरीजों को ले जाने में परेशानी होती है। प्रधान और विधायक से कई बार सड़कों की हालत ठीक करने की गुजारिश की गयी, लेकिन कुछ भी नहीं हुआ। यही कारण है कि उनलोगों को अवरोध के लिए उतरना पड़ा।

भाजपा के विजय रथ को रोकने के लिए एकजुट हो विरोधी : कल्याण

हुगली : महाराष्ट्र में भाजपा के धमाकेदार जीत और उत्तरप्रदेश उप चुनावों में भाजपा की शानदार वापसी के बाद जहां भाजपा कार्यकर्ता जिले में जश्न मना रहे हैं। वहीं श्रीरामपुर लोकसभा सीट से सांसद कल्याण बनर्जी ने बंगाल उप चुनाव के नतीजे पर प्रतिक्रिया जाहिर करते हुए कहा कि बीजेपी को सत्ता से बेदखल करने के लिए तो सभी विरोधियों को ममता बनर्जी के कदम से कदम मिलाकर चलना होगा। एक मात्र बंगाल ही ऐसा राज्य है, जहां भाजपा

को मुहं की खाने पड़ती है। उप चुनावों में भाजपा को अपनी सीट को भी गंवाना पड़ा। विरोधी दलों को अपने इगो को त्याग कर ममता बनर्जी को विकल्प के तौर पर चुनना होगा। क्योंकि ममता बनर्जी ही भाजपा के बढ़ते कदम और विजयरथ को रोकने में मिल का पत्थर साबित होगी। इस महाराष्ट्र और उप चुनावों में देश की प्रमुख विरोधी कांग्रेस का प्रदर्शन निराशा-जनक है। महाराष्ट्र के नतीजे पर उन्होंने कहा कि इस तरह के परिणाम से यह बात स्पष्ट हो गया है कि विरोधी दलों में नेतृत्व और एकजुटता का अभाव है। बंगाल उप चुनाव के दौरान राज्य में आरजी की घटना को भाजपा समेत विरोधी दलों ने प्रमुख हथियार बनाया था। जिसे बंगला की जनता ने सिरे से नकार दिया। बंगाल की जनता ने एक बार फिर उप चुनाव में जिस तरह का मैंडेट तृणमूल को दिया, उसे यह साफ है कि 2026 में विरोधियों को 30 सीट भी नहीं मिलेगी और विपक्ष में बैठने लायक कोई नेता भी नहीं होगा।

दर दर तलाशने के बाद अचेत हालत में घर के बाथरूम से मिला बच्चा

हुगली : हुगली जिले के बालागढ़ थाना क्षेत्र में पांच वर्षीय नाबालिग की तलाश में दर-दर भटक रही पुलिस को आखिरकार घर के बाथरूम में बच्चा बरामद हुआ। बालागढ़ के गुप्तिपाड़ा के बांधागाछी इलाके में 5 साल के स्वर्णभ साहा की लापता होने की घटना ने तब नया मोड़ ले लिया है जब लंबी तलाश के बाद रविवार सुबह करीब पांच बजे बच्चे को उसके दादा शंभु साहा के शौचालय से अचेत हालत में बरामद किया गया। इसके बाद, बच्चे को तुरंत स्थानीय अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। इस घटना से पूरे इलाके में शोक की लहर छा गई है। बच्चे के

लापता होने के बाद पुलिस ने ड्रोन और स्निफर डॉग्स की मदद से, तालाब और जंगलों में तलाशी अभियान चलाया, लेकिन अंततः बच्चा घर के बाथरूम से ही बरामद हुआ। पुलिस ने इस मामले में बच्चे के दादा, दादी और जेठानी को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू कर दी है।

हुगली जिला ग्रामीण पुलिस अधीक्षक कामनाशिष सेन ने बताया कि बालागढ़ के गुप्तिपाड़ा में बच्चे के लापता होने की घटना को लेकर परिजनों की शिकायत पर पहले ही अपहरण का मामला दर्ज किया गया था। अब इस मामले में हिरासत में लिए गए दादा शंभू साहा, दादी चाइना साहा और जेठानी टुम्पा साहा से गहन पूछताछ की जा रही है। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि बीते दिन घर और आसपास के सभी स्थानों, यहां तक कि शौचालय की भी तलाशी ली गई थी। इसके बावजूद, सुबह बाथरूम से बच्चे का शव मिलने से कई सवाल खड़े हो गए हैं। मामले की जांच जारी है।

सामानों से भरा ट्रेलर डिवाइडर से टकराकर फंसा, भीषण जाम में फंसे लोग

हुगली : दुर्गापुर :दुर्गापुर के राष्ट्रीय राजमार्ग एक रविवार की सुबह एक सड़क हादसा हो गया। जिसमें सामानों से भरा एक ट्रेलर पलट गया। इस घटना में ट्रेलर का चालक और खलासी घायल हो गए। उन्हें बचाकर अस्पताल ले जाया गया। यह भयानक सड़क हादसा राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 1 के डीवीसी चौराहे पर हुई। पुलिस सूत्रों के अनुसार, तार के बंडलों से लदा ट्रेलर डीवीसी चौराहे पर फ्लाईओवर से ऊपर जा रहा था। उसी समय अचानक ट्रेलर अनियंत्रित हो गई और डिवाइडर से जा टकराई। टक्कर लगने के कारण इंजन डिवाइडर से उठ गया और खतरनाक तरीके से लटक गया। माना जा रहा है कि ट्रेलर भरा होने के कारण नीचे नहीं गिरा। स्थानीय लोगों को आशंका है कि इसके गिरने से बड़ा हादसा हो सकता था। ट्रेलर फंसने से राष्ट्रीय राजमार्ग पर भीषण जाम लग गया था। दुर्गापुर ट्रैफिक गार्ड पुलिस मौके पर पहुंची और स्थिति को नियंत्रित किया।

सेना ने ग्लोरी बाइक राइड के जरिए 1971 युद्ध के नायकों को दी श्रद्धांजलि

❑ पूर्वी आर्मी कमांडर ने बाइक रैली का किया नेतृत्व, 71 बाइक सवारों ने लिया भाग

कोलकाता, समाज्ञा : 1971 के युद्ध के बलिदानी नायकों को श्रद्धांजलि देने के लिए भारतीय सेना की पूर्वी कमान ने रेड एफएम के सहयोग से रविवार को कोलकाता में एक अनूठी 'ग्लोरी बाइक राइड' आयोजित की। 1971 के युद्ध में पाकिस्तान पर मिली ऐतिहासिक जीत के वर्ष का प्रतीक कुल 71 बाइक सवारों ने इस रैली में भाग लिया। पूर्वी सेना कमान के प्रमुख (जनरल आफिसर कमांडिंग- इन-चीफ) लेफ्टिनेंट जनरल रामचंद्र तिवारी ने भारतीय सशस्त्र बलों और कोलकाता के उत्साही बाइक सवारों के साथ इस बाइक रैली का नेतृत्व किया। उनके नेतृत्व में बाइक सवारों ने कोलकाता की सड़कों पर 25 किलोमीटर के मार्ग को कवर करते

हुए कुछ प्रतिष्ठित स्थलों से होकर गुजरे, जिसमें ईडन गार्डन, विक्टोरिया मेमोरियल, बिड़ला मंदिर और साउथ पार्क स्ट्रीट शामिल हैं। इस बाइक रैली ने कोलकाता की सड़कों को देशभक्ति, एकता और देश के बहादुरों के प्रति श्रद्धा की भावना से जीवंत कर दिया। पूर्वी कमान द्वारा एक बयान में बताया गया कि 1971 युद्ध में मिली ऐतिहासिक जीत की याद में हर साल 16 दिसंबर को मनाए जाने वाले विजय दिवस समारोह के हिस्से के रूप में आयोजित इस कार्यक्रम का उद्देश्य सैन्य और नागरिक बिरादरी के बीच बंधन को मजबूत करते हुए सशस्त्र बलों की अद्वितीय वीरता और बलिदान का सम्मान करना था। इस बाइक रैली के साथ विजय दिवस समारोह- 2024 की शुरुआत हुई। पूर्वी कमान मुख्यालय फोर्ट विलियम से इस बाइक रैली को चीफ ऑफ स्टाफ लेफ्टिनेंट जनरल आरसी श्रीकांत ने रवाना किया था। करीब 50 मिनट में 25 किलोमीटर की दूरी तय कर बाइक रैली फोर्ट विलियम के पूर्वी द्वार पर आकर समाप्त हुई। कार्यक्रम का समापन पूर्वी आर्मी कमांडर तिवारी सहित रैली में शामिल बाइक सवारों द्वारा फोर्ट विलियम स्थित विजय स्मारक पर बलिदानियों को श्रद्धांजलि अर्पित करने के साथ हुआ। रैली में हिस्सा लेने वाले 71 बाइक सवारों में 35 सशस्त्र बलों से और 35 नागरिक बिरादरी से थे। अधिकारियों ने बताया कि यह पहली बार है जब विजय दिवस समारोह के उपलक्ष्य में कोलकाता में इतने बड़े स्तर पर बाइक रैली आयोजित की गई।

डोमजूर में जल जमाव से परेशान होकर स्थानीय लोगों ने किया प्रदर्शन

हावड़ा, समाज्ञा : हावड़ा के डोमजूर थानांतर्गत इलाके में रविवार को जल जमाव से परेशान होकर स्थानीय लोगों ने प्रदर्शन किया। सड़कों की जर्जर हालत से मजबूर लोगों को आखिर में प्रदर्शन का रास्ता चुनना पड़ा। यह घटना डोमजूर थाना क्षेत्र के तीन नंबर ग्राम पंचायत हॉस्पिटल रोड की है। आरोप है कि यह रोड बहुत खराब है। जिस कारण उन्हें रोज परेशानियों का सामना करना पड़ता है। प्रदर्शनकारियों ने बताया कि लंबे समय से बांकड़ा बाजार से बांकड़ा अस्पताल तक तक करीब एक किमी सड़क जर्जर हालत में है। सड़क पर बड़े-बड़े गड्ढे हो गये हैं। इसके अलावा, सड़क पर पानी जमा होना भी लोगों को परेशानी में डाल देता है। गंदे पानी से होकर

गुजरना पड़ता है। मरीजों को ले जाने में परेशानी होती है। प्रधान और विधायक से कई बार सड़कों की हालत ठीक करने की गुजारिश की गयी, लेकिन इसके बावजूद कुछ भी नहीं किया गया। यही कारण है कि उनलोगों को अवरोध के लिए उतरना पड़ा। घटना की खबर पाकर पुलिस मौके पर पहुंची और प्रदर्शनकारियों को आश्वासन दिया। जिसके बाद प्रदर्शन खत्म हो गया।

एम.सी.केजरीवाल विद्यापीठ में 'आई डी एस इवेंट वसुधैव कुटुंबकम' का भव्य आयोजन

हावड़ा, समाज्ञा : अंतर्राष्ट्रीयता हमारे सिद्धांतों, पाठ्यक्रम और दैनिक जीवन के केंद्र में है। हम अपने छात्रों को लगातार प्रेरित करते हैं कि वे उन विभिन्नताओं को पहचाने और स्वीकार करें। दुनिया की विविधता, इसके लोग, जीवन और संस्कृतियों का सम्मान करने के प्रयास में एम.सी.के.वी. ने वसुधैव कुटुंबकम भाग-2, एक व्यापक प्रदर्शनी का आयोजन किया, जो वैश्विक संस्कृतियों का उत्सव मनाती है। अध्यक्ष किशन कुमार केजरीवाल और ट्रस्टी अभय केजरीवाल की गरिमामयी उपस्थिति में आयोजित इस प्रदर्शनी का उद्घाटन प्राचार्या शर्मीली बंदोपाध्याय ने निदेशक नीलकंठ गुप्ता, सी. इ. ओ. डॉ. पार्थसारथी चक्रवर्ती, हेडमास्टर विश्वजीत मजूमदार और बच्चों के माता-पिता की उपस्थिति में किया। कार्यक्रम की शुरुआत निदेशक

नीलकंठ गुप्ता के प्रेरक शब्दों द्वारा हुई। डॉ. पार्थसारथी चक्रवर्ती जी ने पूरे ब्रह्मांड को एक परिवार के रूप में देखने की अवधारणा पर ज़ोर दिया। छात्रों ने प्रत्येक देश की विरासत के मुख्य अंगों को प्रदर्शित करने वाले मॉडलों को सावधानी पूर्वक तैयार किया। सभी ने इस तरह के अत्यंत भव्य आयोजन के लिए विद्यालय के गुणीजनों, शिक्षकों एवं छात्रों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इस आयोजन ने छात्रों को अपनी रचनात्मकता प्रदर्शित करने का अवसर दिया, साथ ही विश्लेषण करने और इक्कीसवीं सदी की वैश्विक नागरिकता, सहयोग और करुणा जैसी जीवन शैली तथा जीवन कौशल सिखाने का भी प्रयास किया। यह भव्य कार्यक्रम आइ. डी. एस. की कॉर्डिनेटर अपर्णा घोषाल के धन्यवाद ज्ञापन के साथ समाप्त हुआ।

रोटरी क्लब आफॅ बेलूर का सर्वाइकल कैंसर उन्मूलन हेतु टीकाकरण व जागरूकता अभियान

हावड़ा, समाज्ञा : रोटरी क्लब ऑफ बेलूर (जिला 3291, पश्चिम बंगाल) ने टीकाकरण के माध्यम से सर्वाइकल कैंसर की रोकथाम की पहल की है । परियोजना के अध्यक्ष, रोटेरियन विष्णु ढांढानिया ने बताया कि हमारी रणनीति का मुख्य उद्देश्य 9 से 14 वर्ष की आयु की लड़कियों को टीका लगाना है, जैसा कि विश्व स्वास्थ्य संगठन ने सुझाया है। हालांकि, टीकाकरण शुरू होने से पहले समाज में इस रोग के प्रति जागरूकता बढ़ाना और सर्वाइकल कैंसर और टीकाकरण से जुड़े दोष और मिथकों को दूर करना महत्वपूर्ण है। पश्चिम बंगाल में ग्रामीण स्कूलों और समुदायों में एक व्यापक जागरूकता का अभियान हमारा मुख्य उद्देश्य है। परियोजना की पहली कड़ी का लक्ष्य कोलकाता के पास हावड़ा और हुगली जैसे जिलों

में सरकारी स्कूलों और ग्रामीण समुदायों में 1,200 एचपीवी टीके लगाना है। दीर्घकालिक लक्ष्य 5,000 लड़कियों को टीका लगाना है। बेलूर रोटरी क्लब के एक सामाजिक जागरूकता वाले सदस्य भगवान दास अग्रवाल ने अपनी दिवंगत पत्नी उर्मिला देवी की याद में 2,000 लड़कियों को टीका लगाने के लिए 70 लाख रूपये का योगदान दिया है।

वर्तमान डिस्ट्रिक्ट गवर्नर और प्रसिद्ध स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. कृष्णेंदु गुप्ता ने भट्टनगर कुलकामिनी गर्ल्स स्कूल में इस रोग के जागरूकता अभियान में हिस्सा लिया।

अब तक इन जगहों पर 322 से ज़्यादा लड़कियों को एचपीवी वैक्सीन की पहली खुराक मिल चुकी है। यह महत्वाकांक्षी पहल एक सहयोगात्मक प्रयास का परिणाम है। बेलूर के रोटरी क्लब ने सिंगापुर हार्टलैंड और सिंगापुर सहित अंतरराष्ट्रीय रोटरी क्लबों के साथ-साथ कोलकाता के चार रोटरी क्लबों- कलकत्ता चौरंगी, हुगली, कलकत्ता ईस्ट सेंट्रल और चंदननगर के साथ भागीदारी की। उन्होंने यंग इंडियंस के साथ मिलकर भी काम किया।

भारत में स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में विश्वस्तरीय उत्कृष्टता केंद्र नारायण सुपर स्पेशलिटी अस्पताल, हावड़ा भी इस परियोजना में शामिल है और इसी मेडिकल कॉलेज की टीमें टीकाकरण में सहयोग करेंगी।

इस अभियान में 2,300 से भी अधिक अभिभावकों, शिक्षकों सहित समाज के अन्य लोगों को सर्वाइकल कैंसर के बारे में जागरूक किया गया।

जिला 3291 के पूर्व जिला गवर्नर (2018-19) रोटेरियन एवं इस परियोजना के संरक्षक और सलाहकार मुकुल सिन्हा ने बताया कि हाल ही में स्वाइका गर्ल्स हाई स्कूल, हावड़ा में 156 लड़कियों को हमारे एक शिविर में एचपीवी वैक्सीन की पहली खुराक लेते हुए देखकर मुझे बहुत खुशी हुई। आरसी बेलूर के वर्तमान अध्यक्ष रोटेरियन आनंद अग्रवाल ने इस परियोजना के महत्व के बारे में बताते हुए कहा कि हमारा काम अभी खत्म नहीं हुआ है। यह संपूर्ण जानकारी एक विज्ञप्ति के माध्यम से परियोजना प्रबंधक आलोकपर्णा घोष ने दी।

समाज्ञा व्यापार

अमेरिकी एसईसी सीधे अदाणी को नहीं बुला सकता, राजनयिक माध्यमों से नोटिस देना होगा

न्यूयॉर्क : अमेरिकी एसईसी को अदाणी समूह के संस्थापक और चेयरमैन गौतम अदाणी तथा उनके भतीजे सागर को कथित 26.5 करोड़ अमेरिकी डॉलर (2,200 करोड़ रुपये) के रिश्वत मामले में उचित राजनयिक चैनलों के जरिए समन भेजना होगा। सूत्रों ने यह जानकारी देते हुए कहा कि अमेरिकी प्रतिभूति और विनिमय आयोग (एसईसी) के पास किसी विदेशी नागरिक को सीधे

बुलाने का कोई अधिकार नहीं है। एसईसी चाहता है कि अदाणी अनुकूल सौर ऊर्जा अनुबंध हासिल करने के लिए रिश्वत देने के आरोपों पर अपना रुख स्पष्ट करें। पूरे मामले से अवगत दो सूत्रों ने कहा कि इस अनुरोध को अमेरिका में भारतीय दूतावास के माध्यम से भेजना होगा और अन्य राजनयिक औपचारिकताओं के तहत स्थापित प्रोटोकॉल का पालन करना होगा। उन्होंने कहा कि अमेरिकी एसईसी के पास विदेशी नागरिकों पर कोई अधिकार नहीं है। सूत्रों के मुताबिक यह समन एसईसी के न्यूयॉर्क की अदालत के समक्ष दायर कानूनी दस्तावेज का हिस्सा है, और इसे अदाणी तक पहुंचने में कुछ समय लगेगा। अभी तक अदाणी को कोई समन नहीं सौंपा गया है। गौतम अडानी और उनके भतीजे सागर सहित सात अन्य प्रतिवादी, जो समूह की नवीकरणीय ऊर्जा इकाई अदाणी ग्रीन एनर्जी लिमिटेड में निदेशक हैं, पर बुधवार को न्यूयॉर्क की एक अदालत में मुकदमा शुरू हुआ। इसके मुताबिक इन लोगों ने अनुकूल सौर ऊर्जा आपूर्ति अनुबंध पाने के लिए लगभग 2020 और 2024 के बीच भारतीय सरकारी अधिकारियों को लगभग 26.5 करोड़ डॉलर की रिश्वत देने पर सहमति जताई थी।

विदेशी संपत्तियों की जानकारी देने के लिए सही आईटीआर चुनें : सीबीडीटी अधिकारी

नयी दिल्ली : कर विभाग के अनुसार चालू आकलन वर्ष के दौरान अब तक विदेशी संपत्तियों और आय का विवरण देने वाले दो लाख आयकर रिटर्न (आईटीआर) दाखिल किए गए हैं। विभाग ने भारतीय निवासियों से यह आग्रह किया है कि वे विदेशी संपत्तियों की जानकारी देने के लिए सही फॉर्म दाखिल करें और यदि उन्होंने गलत फॉर्म जमा किया है तो अपने रिटर्न को संशोधित करें। एक वरिष्ठ सीबीडीटी अधिकारी ने बताया कि निवासी भारतीयों को विदेशी संपत्तियों और विदेशी स्रोत आय अनुसूची को भरकर कर्मचारी शेयर विकल्पों के जरिये अपने नियोक्ताओं से मिले शेयरों और अर्जित आय के बारे में आयकर विभाग को जानकारी देनी चाहिए। कर विभाग और उसके प्रशासनिक प्राधिकरण केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (सीबीडीटी) ने हाल ही में करदाताओं को अपने आयकर रिटर्न (आईटीआर) में अनुसूची 'विदेशी संपत्ति' (अनुसूची एफए) को सही ढंग से भरने और विदेशी स्रोतों (अनुसूची एफएसआई) से आय के बारे में बताने के लिए आकलन वर्ष (एवाई) 2024-25 के लिए अनुपालन-सह-जागरूकता अभियान शुरू किया है। विभाग ने 'करदाताओं द्वारा विदेशी संपत्ति और आय का प्रकटीकरण' विषय पर एक ऑनलाइन बातचीत सत्र का आयोजन भी किया। इस दौरान सीबीडीटी में आयुक्त (जांच) शशि भूषण शुक्ला ने विषय के विभिन्न प्रावधानों और 2015 के कालाधन विरोधी अधिनियम के प्रावधानों की व्याख्या की। उन्होंने कहा कि जिनके पास ऐसी संपत्ति या आय है, लेकिन उन्होंने आईटीआर-1 या आईटीआर-4 दाखिल किया है, उन्हें कालाधन विरोधी कानून के तहत निर्धारित दंड और अभियोजन से बचने के लिए 31 दिसंबर तक संशोधित या विलंबित रिटर्न दाखिल करना चाहिए।

बिहार व्यापार शिखर सम्मेलन में निवेश प्रस्ताव पिछले साल से अधिक होंगे : राज्य उद्योग मंत्री

नयी दिल्ली : बिहार के उद्योग मंत्री नीतीश मिश्रा ने रविवार को कहा कि पटना में होने वाला आगामी वैश्विक व्यापार शिखर सम्मेलन बहुत सफल होगा। उन्होंने कहा कि 2023 के संस्करण में मिले लगभग 50,000 करोड़ रुपये से अधिक के निवेश प्रस्तावों के मुकाबले इस बार अधिक प्रस्ताव मिलेंगे। 'बिहार बिजनेस कनेक्ट' का दूसरा संस्करण 19-20 दिसंबर, 2024 को पटना में आयोजित किया जाएगा। मिश्रा ने राष्ट्रीय राजधानी में संवाददाताओं से कहा, 'पिछले साल हमें लगभग 50,000 करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव मिले थे। मुझे पूरा विश्वास है कि इस साल हमें और अधिक निवेश प्रस्ताव मिलेंगे।' उन्होंने कहा कि आगामी निवेशक सम्मेलन बिहार में एक नए औद्योगिक युग की शुरुआत करेगा।

इससे पहले 2023 में निवेशक बैठक के दौरान 278 कंपनियों ने 50,500 करोड़ रुपये के प्रस्तावित निवेश के लिए कई समझौता ज्ञापनों (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए थे। मिश्रा ने बताया कि 2023 संस्करण में मिले अधिकांश निवेश प्रस्तावों को क्रियान्वित किया जा चुका है और शेष को जल्द ही क्रियान्वित किया जाएगा। राज्य सरकार के एक अधिकारी ने बताया कि 38,000 करोड़ रुपये के निवेश प्रस्तावों को पहले ही मंजूरी मिल चुकी है। मिश्रा ने कहा कि पहले ऐसी धारणा थी कि बिहार बड़े निवेश को आकर्षित नहीं कर सकता, लेकिन अब यह धारणा बदल गई है और निवेशक आ रहे हैं। उन्होंने कहा कि खाद्य प्रसंस्करण, कपड़ा और पर्यटन सहित सभी प्रमुख क्षेत्रों में निवेश की अपार संभावनाएं हैं। मिश्रा राज्य के पर्यटन मंत्री भी हैं। उन्होंने पीटीआई वीडियो से कहा, ''बिहार बिजनेस कनेक्ट एक वार्षिक निवेशक बैठक है, जहां हम उन सभी कंपनियों से संपर्क कर रहे हैं, उन्हें आमंत्रित कर रहे हैं, जो बिहार में विस्तार करने में दिलचस्पी रखते हैं या नई इकाई स्थापित कर सकते हैं।' उन्होंने कहा कि सरकार निवेश की मात्रा पर ही नहीं बल्कि रोजगार सृजन की क्षमता पर भी ध्यान देगी।

विधानसभा चुनावों के नतीजों पर प्रतिक्रिया देगा शेयर बाजार, वैश्विक रुख से भी मिलेगी दिशा

मुंबई : वैश्विक रुझान और विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) की गतिविधियां इस सप्ताह स्थानीय शेयर बाजारों की दिशा तय करेंगी। विश्-लेषकों ने यह राय जताई है। इसके अलावा महाराष्ट्र और झारखंड विधानसभा चुनावों के नतीजों पर भी बाजार सोमवार को प्रतिक्रिया देगा। बीते सप्ताह शुक्रवार को सेंसेक्स और निफ्टी में कई सप्ताह की गिरावट के बाद जोरदार उछाल देखने को मिला। उस दिन सेंसेक्स और निफ्टी ने पांच माह में अपना एक दिन का सबसे अधिक लाभ दर्ज किया। शुक्रवार को बीएसई का 30 शेयरों वाला सेंसेक्स 1,961.32 अंक या 2.54 प्रतिशत बढ़कर 79,117.11 अंक पर पहुंच गया। वहीं नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी 557.35 अंक या 2.39 प्रतिशत की बढ़त के साथ 23,907.25 अंक के स्तर पर रहा। स्वस्तिका इन्वेस्टमार्ट लि. के शोध प्रमुख संतोष मीणा ने कहा, ''घरेलू मोर्चे पर महाराष्ट्र और झारखंड चुनावों के नतीजे बाजार की दिशा के लिए महत्वपूर्ण हैं। खासकर महाराष्ट्र जहां राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) ने एकतरफा जीत दर्ज की है। हालांकि, वैश्विक कारक बाजार के लिए जोखिम पैदा करते रहेंगे। रूस और यूक्रेन के बीच बढ़ते तनाव और कच्चे तेल की बढ़ती कीमतों ने महंगाई को लेकर चिंता बढ़ा दी है।में बढ़ोतरी से रुपये पर दबाव पड़ रहा है, जिससे विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) की ओर से रिकॉर्ड निकासी हो रही है। उन्होंने कहा कि बाजार की दिशा के लिए एफआईआई का प्रवाह महत्वपूर्ण रहेगा। महाराष्ट्र चुनाव में सत्तारूढ़ महायुति गठबंधन और झारखंड में इंडिया गठबंधन ने अपनी सत्ता बरकरार रखी है।

पतंजलि आयुर्वेद की आमदनी पिछले वित्त वर्ष में 23 प्रतिशत बढ़कर 9,335.3 करोड़ रुपये पर

नयी दिल्ली : बाबा रामदेव की अगुवाई वाली पतंजलि आयुर्वेद की कुल आमदनी पिछले वित्त वर्ष में 23.15 प्रतिशत बढ़कर 9,335.32 करोड़ रुपये हो गई है। कंपनी रजिस्ट्रार को दी सूचना में कहा कि इसमें पतंजलि फूड्स (पूर्व में रुचि सोया) की बिक्री पेशकश (ओएफएस) और समूह की अन्य इकाइयों से आय शामिल है। कारोबार सूचना मंच टॉफलर द्वारा जुटाई जानकारी के अनुसार, वित्त वर्ष 2023-24 में पतंजलि आयुर्वेद की अन्य आय 2,875.29 करोड़ रुपये रही, जबकि एक साल पहले इसी अवधि में यह 46.18 करोड़ रुपये थी।

परिचालन से इसकी आय (मुख्य रूप से शुद्ध बिक्री से आय) पिछले वित्त वर्ष के लिए 14.25 प्रतिशत घटकर 6,460.03 करोड़ रुपये रही। पतंजलि आयुर्वेद द्वारा एक जुलाई, 2022 को अपने खाद्य कारोबार को पतंजलि फूड्स को हस्तांतरित करने से राजस्व प्रभावित हुआ। पतंजलि के खाद्य कारोबार में बिस्कुट, घी, अनाज और न्यूट्रास्युटिकल्स शामिल हैं। वित्त वर्ष 2023-24 में इसका कुल लाभ पांच गुना होकर 2,901.10 करोड़ रुपये हो गया। पतंजलि आयुर्वेद की आमदनी वित्त वर्ष 2022-23 में 7,533.88 करोड़ रुपये और कुल मुनाफा 578.44 करोड़ रुपये रहा। गैर-सूचीबद्ध इकाई पतंजलि आयुर्वेद की कुल आय (अन्य आय समेत) वित्त वर्ष 2022-23 में 7,580.06 करोड़ रुपये थी।

असम में फरवरी में होगा व्यापार सम्मेलन, प्रधानमंत्री मोदी करेंगे उद्घाटन

गुवाहाटी : असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने रविवार को यहां कहा कि राज्य अगले साल फरवरी में दो दिवसीय व्यापार शिखर सम्मेलन की मेजबानी करेगा। उन्होंने कहा कि इसका 'फोकस' निवेश आकर्षित करने और राज्य के बुनियादी ढांचे के विकास पर होगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 24 फरवरी को 'एडवांटेज असम 2.0 - वैश्विक बुनियादी ढांचा और निवेशक शिखर सम्मेलन' का उद्घाटन करेंगे। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण को समापन सत्र के लिए आमंत्रित किया जाएगा। सरमा ने यहां एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा, हमने 2018 में पहला 'एडवांटेज असम निवेश शिखर सम्मेलन' आयोजित किया था, जिसके परिणामस्वरूप एक लाख करोड़ रुपये के निवेश के लिए समझौते हुए थे।

न्यूज इन ब्रीफ

उत्तर प्रदेश के एटा में दीनदयाल उपाध्याय की प्रतिमा तोड़ी गई

एटा (उत्तर प्रदेश) : उत्तर प्रदेश एटा जिले के कोतवाली नगर इलाके में एक चौराहे पर स्थापित जनसंघ के पूर्व अध्यक्ष पंडित दीनदयाल उपाध्याय की प्रतिमा तोड़े जाने का मामला सामने आया है। पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि सीसीटीवी कैमरे की फुटेज के अनुसार, मानसिक रूप से अस्वस्थ दिख रही एक महिला ने शनिवार रात प्रतिमा का शीशा तोड़ दिया। घटना से गुस्साए ब्राह्मण समुदाय के सदस्यों ने रविवार को विरोध प्रदर्शन करते हुए प्रतिमा तोड़ने वाले के खिलाफ राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के तहत मामला दर्ज करने की मांग की।

फेसबुक लाइव कर आत्महत्या करने जा रहे युवक को बचाया गया

जयपुर : जयपुर के एक होटल में युवक को आत्महत्या करने से रोक लिया गया। युवक सोशल मीडिया मंच फेसबुक 'लाइव' करके आत्महत्या करने जा रहा था। पुलिस ने बताया कि जयपुर के बगरू कस्बे का रहने वाला पवन शनिवार रात अजमेर हाइवे पर एक होटल में रुका। पुलिस ने बताया कि उसने अपने कमरे से 'फेसबुक लाइव' शुरू किया और आत्महत्या करने की धमकी दी। पुलिस ने बताया कि पवन के एक दोस्त ने लाइव देखा और तुरंत जयपुर में एक परिचित हेड कांस्टेबल को सूचित किया, जिसने पवन की लोकेशन का पता लगाया और होटल स्टाफ को बताया। पुलिस ने बताया कि पवन की मौजूदगी की पुष्टि होने पर होटल के कर्मियों ने कमरे का दरवाजा तोड़ दिया और पवन को पकड़ लिया जो फंदे पर लटकने जा रहा था। श्याम नगर के थानाधिकारी दलबीर सिंह ने बताया कि शादीशुदा युवक किसी कारण से परेशान था। उन्होंने बताया कि उसे इलाज के लिए एसएमएस अस्पताल ले जाया गया है।

पंजाब के फगवाड़ा में आग लगने से छह लोग झुलसे

फगवाड़ा : पंजाब के फगवाड़ा में चाचोकी कॉलोनी में किराये के मकान में आग लगने से दो प्रवासी परिवारों के छह सदस्य झुलस गए, जिनमें दो महीने की एक बच्ची भी शामिल है। पुलिस ने रविवार को यह जानकारी दी। सभी को फगवाड़ा के सिविल अस्पताल में भर्ती कराया गया है। ड्यूटी पर मौजूद चिकित्सक मनप्रीत कौर ने यह जानकारी दी। कौर ने कहा कि घायलों की पहचान अमित कुमार, उनकी पत्नी आरती कुमारी और दो महीने की बेटी अनुष्का कुमारी के रूप में हुई है। कौर ने बताया कि अमित कुमार के पड़ोसी बाबू की तीन नाबालिग बेटियां भी घायल हो गईं। यह घटना उस समय हुई जब खाना पकाने के लिए इस्तेमाल किए जा रहे लकड़ी के चूल्हे की लपटें एक छोटे रसोई गैस सिलेंडर पर गिर गईं, जिससे आग लग गई।

हरियाणा सरकार प्रमुख शहरों में 'समरसता विरासत केंद्र' स्थापित करेगी : मुख्यमंत्री सैनी

चंडीगढ़ : हरियाणा सरकार महर्षि वाल्मीकि, संत कबीर, गुरु रविदास और संविधान निर्माता डॉ बी आर आंबेडकर जैसे महान संतों और विद्वानों के विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए प्रमुख शहरों में 'समरसता विरासत केंद्र' स्थापित करेगी। राज्य के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने रविवार को यह जानकारी दी। सैनी ने कहा कि सरकार महर्षि वाल्मीकि और अन्य संतों के संदेशों को नयी पीढ़ी तक पहुंचाने के लिए राज्य स्तर पर उनकी जयंती मना रही है। उन्होंने कहा कि सरकार ने इसके लिए संत-महापुरुष विचार सम्मान एवं प्रसार योजना शुरू की है। इस योजना के तहत राज्य स्तर पर संतों और महापुरुषों की जयंती मनाई जा रही है। मुख्यमंत्री ने जींद में आयोजित राज्य स्तरीय समारोह में महर्षि वाल्मीकि जयंती समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि राज्य सरकार अब प्रमुख शहरों में समरसता विरासत केंद्र स्थापित करेगी। एक आधिकारिक बयान के मुताबिक सैनी ने इस अवसर पर नरवाना में महर्षि वाल्मीकि भवन के लिए 51 लाख रुपये की राशि देने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि हिसार में छात्रावास बनाने के लिए भी सहायता दी जाएगी।

'राष्ट्र विरोधी' धर्म परिवर्तन रोकना हर जागरूक नागरिक की जिम्मेदारी : मुख्यमंत्री

गोरखपुर : उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा है कि समाज में कुछ ऐसे लोग हैं जो 'गुप्त रूप से राष्ट्र विरोधी धर्म परिवर्तन' कर रहे हैं जिसे खत्म करना न सिर्फ सरकार या किसी संगठन बल्कि हर जागरूक नागरिक की जिम्मेदारी है। आदित्यनाथ ने दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) के तीन दिवसीय 70वें राष्ट्रीय अधिवेशन के समापन दिवस पर एक विशेष सत्र को संबोधित करते हुए 'धर्म परिवर्तन' का जिक्र किया। उन्होंने कहा, ''हमारे बीच ऐसे लोग हैं जो गुप्त रूप से राष्ट्र विरोधी धर्म परिवर्तन कर रहे हैं।''

आदित्यनाथ ने कहा, ''इसे खत्म करना न केवल सरकार या किसी संगठन की जिम्मेदारी है, बल्कि हर जागरूक नागरिक की भी है।'' उन्होंने बताया कि साल 2019 में एक मंदिर में संत की हत्या की साजिश रचने के आरोप में दो युवकों की गिरफ्तारी के बाद गहन जांच में पता चला कि उनके दिल्ली के बटला हाउस से जुड़े एक धार्मिक उपदेशक से संबंध थे। आदित्यनाथ के मुताबिक, आगे की जांच में पता चला कि उनके पूर्वजों ने तीन पीढ़ी पहले इस्लाम धर्म अपना लिया था। मुख्यमंत्री ने कहा कि जांच में पता चला कि दिल्ली के बटला हाउस इलाके से एक बड़ा गिरोह चलाया जा रहा था जिसमें मूक-बधिर बच्चों का धर्म परिवर्तन कराया जा रहा था। उन्होंने कहा कि गुड़गांव और कानपुर में भी इसी तरह के मामले सामने आए जहां धर्म परिवर्तन के इस नेटवर्क ने 500 परिवारों को प्रभावित किया था। मुख्यमंत्री ने कहा कि इस मामले में अदालत ने धर्म परिवर्तन के लिए जिम्मेदार तीन प्रमुख लोगों सहित सात लोगों को आजीवन कारावास की सजा सुनाई है।

महाकुंभ को स्वच्छ और प्लास्टिक मुक्त बनाएंगे गंगा सेवादूत

प्रयागराज : महाकुंभ 2025 को स्वच्छ और प्लास्टिक मुक्त बनाने की दिशा में प्रयागराज मेला प्राधिकरण ने रविवार को गंगा सेवादूतों के प्रशिक्षण कार्यक्रम की शुरुआत की, जिसमें 250-250 के बैच में करीब 1800 गंगा सेवादूतों को प्रशिक्षित किया जाएगा। प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में बताते हुए मेला विशेष कार्याधिकारी (ओएसडी) आकांक्षा राणा ने बताया कि ये गंगा सेवादूत महाकुंभ में स्वच्छता के साथ ही मेला क्षेत्र को प्लास्टिक मुक्त बनाने में अहम भूमिका निभाएंगे। उन्होंने बताया कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम 29 नवंबर तक जिला पंचायत सभागार में चलेगा। प्रयागराज मेला प्राधिकरण द्वारा 250-250 के बैच में लगभग 1800 गंगा सेवादूतों को प्रशिक्षित किया जाएगा। इन्हें स्वच्छता के साथ ही सीएफओ (कुंभ) प्रमोद कुमार शर्मा द्वारा अग्नि सुरक्षा का प्रशिक्षण भी दिया जाएगा।

प्रधानमंत्री की अगवानी के लिए 'निषादराज' क्रूज वाराणसी से रवाना

प्रयागराज : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की आगामी प्रयागराज यात्रा में उनकी अगवानी के लिए 'निषादराज' क्रूज वाराणसी से प्रयागराज के लिए रवाना हो चुका है। अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त यह क्रूज पहली बार संगम क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज कराएगा। अपर मेला अधिकारी विवेक चतुर्वेदी ने बताया कि 'निषादराज' क्रूज को भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण (आईडब्ल्यूएआई) ने अपने कब्जे में लेकर वाराणसी से प्रयागराज के लिए रवाना कर दिया है। उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का 13 दिसंबर को प्रयागराज आगमन प्रस्तावित है तथा श्रृंगवेरपुर धाम में भगवान राम और निषादराज की प्रतिमा का अनावरण करने के बाद प्रधानमंत्री नैनी के अरैल से संगम तक 'निषादराज' क्रूज पर सवार होकर आएंगे। चतुर्वेदी ने बताया, प्रधानमंत्री संगम स्नान के साथ गंगा आरती में शामिल होंगे जिसके बाद वह बड़े हनुमान मंदिर और अक्षयवट का भी दर्शन करेंगे। साथ ही वह और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ परेड ग्राउंड स्थित कार्यक्रम स्थल पर साधु संतों से भेंट करेंगे। चतुर्वेदी ने बताया कि अत्याधुनिक सुविधाओं वाले 'निषादराज' क्रूज को वाराणसी से प्रयागराज लाने में कोई दिक्कत ना हो, इसके लिए सभी पुख्ता इंतजाम किए जा रहे हैं तथा क्रूज को लेकर मेला प्राधिकरण और वाराणसी प्रशासन के बीच लगातार समन्वय बना हुआ है।

मंत्री नंदी की कंपनी से 2.08 करोड़ रुपये की ठगी करने के मामले में पांच गिरफ्तार

प्रयागराज : उत्तर प्रदेश के कैबिनेट मंत्री नंद गोपाल गुप्ता (नंदी) की कंपनी से 2.08 करोड़ रुपये की कथित रूप से ठगी करने वाले गिरोह के पांच सदस्यों को पुलिस ने रविवार को गिरफ्तार कर लिया। साइबर थाने के प्रभारी राजीव कुमार तिवारी ने बताया कि मंत्री नंदी की कंपनी के साथ ठगी करने वाले गिरोह के पांच सदस्यों की पहचान बिहार के पटना निवासी दिव्यांशू, मऊ के रहने वाले पुलकित द्विवेदी तथा बरेली निवासी संजीव कुमार, सुरजीत सिंह और विजय कुमार के तौर पर हुई है। उन्होंने बताया कि कैबिनेट मंत्री की कंपनी 'इकावो एग्रो डेली प्राइवेट लिमिटेड' के अकाउंटेंट रितेश श्रीवास्तव के 'व्हाट्सऐप' पर 13 नवंबर को एक संदेश आया और संदेश भेजने वाले शख्स के नंबर पर अभिषेक गुप्ता (मंत्री के बेटे) की फोटो लगी थी। तिवारी के मुताबिक, संदेश में लिखा था यह नया नंबर है और प्रस्तावित बैठक के लिए आवश्यक जानकारी मांगी गई। उन्होंने बताया कि रितेश ने कंपनी के निदेशक अभिषेक गुप्ता का निर्देश मानकर कंपनी के अकाउंट संबंधी जानकारी उस नंबर पर साझा की जिसके बाद बैठक में कारोबारी समझौते को अंतिम रूप देने की बात कहते हुए दो खातों में क्रमशः 65 लाख रुपये और 75 लाख रुपये भेजने को कहा गया।

अदाणी के प्रवक्ताओं की तरह व्यवहार कर रहे हैं भाजपा नेता- बिहार कांग्रेस अध्यक्ष

पटना : बिहार कांग्रेस अध्यक्ष अखिलेश प्रसाद सिंह ने केंद्र में सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेताओं पर अदाणी समूह के ''प्रवक्ता के रूप में काम करने'' का रविवार को आरोप लगाया, जिसपर अमेरिका में रिश्वतखोरी और धोखाधड़ी का आरोप लगाया गया है। राज्यसभा सदस्य सिंह आरोपों की जांच के लिए संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) की मांग को लेकर दबाव डालने के लिए कांग्रेस की प्रदेश इकाई द्वारा आयोजित एक प्रदर्शन के मौके पर पत्रकारों से बात कर रहे थे। पूर्व केंद्रीय मंत्री सिंह ने कहा, ''लंबे समय से हमारे नेता राहुल गांधी गौतम अदाणी के अनैतिक कार्यों को उजागर कर रहे हैं। किसी ने ध्यान नहीं दिया। अब, अमेरिका में एक घोटाला सामने आया है, जिसने दुनिया भर में देश की प्रतिष्ठा को धूमिल किया है।'' उन्होंने आरोप लगाया कि उक्त उद्योग समूह को लेकर विवादों के बावजूद, केंद्र की नरेन्द्र मोदी सरकार ''उन्हें बचाने की कोशिश कर रही है... और मीडिया से बात करने वाले भाजपा के नेता अदाणी के प्रवक्ता के रूप में 'ओवरटाइम' काम करते प्रतीत होते हैं।'' बिहार कांग्रेस अध्यक्ष सिंह ने कहा, ''हम मांग करते हैं कि भ्रष्टाचार घोटाले की जांच के लिए जल्द से जल्द एक जेपीसी का गठन किया जाए। अदाणी और उनके साथ मिलीभगत करने वाले सरकारी अधिकारियों को गिरफ्तार किया जाना चाहिए।''

सिंह के साथ इस प्रदर्शन में बिहार विधानसभा में कांग्रेस विधायक दल के नेता शकील अहमद खान सहित पार्टी के कई सहयोगी शामिल हुए। कांग्रेस नेताओं ने इस अवसर पर पुतला फूंकने के साथ ही अदाणी और प्रधानमंत्री के खिलाफ जमकर नारेबाजी की।

न्यूज अपडेट

राजस्थान: भाजपा के नवनिर्वाचित विधायक मुख्यमंत्री शर्मा से मिले

जयपुर : भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नवनिर्वाचित विधायकों ने रविवार को यहां मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा से मुलाकात की। आधिकारिक प्रवक्ता ने बताया कि ये विधायक यहां मुख्यमंत्री निवास पर शर्मा से मिले। शर्मा ने सलूंबर से नवनिर्वाचित विधायक शांता देवी, झुनझुनूं से विधायक राजेन्द्र भाम्बू, देवली-उनियारा से विधायक राजेन्द्र गुर्जर, रामगढ़ से विधायक सुखवंत सिंह तथा खींवसर से विधायक रेवंतराम डांगा को जीत की बधाई देते हुए उनका स्वागत किया। इसके अनुसार शर्मा ने विधायकों से बातचीत में कहा कि एक जनप्रतिनिधि के रूप में आपके निर्वाचन क्षेत्र तथा प्रदेश की जनता के प्रति आपकी जिम्मेदारी बढ़ गई है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि सभी नवनिर्वाचित विधायक जनसेवा के लिए समर्पण भाव से कार्य करते हुए राजस्थान की विकास यात्रा में सहभागी बनेंगे तथा विकसित राजस्थान की संकल्पना को साकार करेंगे। इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री डॉ. प्रेमचंद बैरवा, भाजपा प्रदेशाध्यक्ष व सांसद मदन राठौड़ तथा भाजपा के राजस्थान प्रभारी राधामोहन दास अग्रवाल भी मौजूद थे। उल्लेखनीय है कि राज्य की सात विधानसभा सीट पर हुए उपचुनाव में भाजपा ने पांच सीट पर जीत दर्ज की है।

पंजाब: अमृतसर हवाई अड्डे पर यात्री के पास से 1.50 करोड़ रुपये का सोना बरामद

अमृतसर : दुबई से अमृतसर हवाई अड्डे पर पहुंचे एक यात्री के पास से 1.50 करोड़ रुपये मूल्य का सोना बरामद किया गया। सीमा शुल्क विभाग के अधिकारियों ने रविवार को यह जानकारी दी। अधिकारियों को यात्री पर संदेह हुआ, जिसके बाद उन्होंने उसे रोककर उसके पास से 2,674 ग्राम सोना बरामद किया। अधिकारियों ने बताया कि यात्री ने पेस्ट के रूप में सोना को अपने अंडरवियर और घुटने पर बांधे गए पट्टे में छुपा रखा था। अधिकारियों ने बताया कि यात्री को सीमा शुल्क अधिनियम, 1962 की संबंधित धारा के तहत गिरफ्तार कर लिया गया है तथा मामले की जांच जारी है।

जब तक फर्जी वोट डालने से रोकने के लिए आयोग सख्त कदम नहीं उठाता, बसपा कोई उपचुनाव नहीं लड़ेगी: मायावती

लखनऊ : बहुजन समाज पार्टी (बसपा) प्रमुख एवं उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने राज्य की नौ सीट पर हुए उपचुनाव में पार्टी को करारी शिकस्त मिलने के एक दिन बाद रविवार को चुनाव में धांधली का आरोप लगाया और कहा कि अब उनकी पार्टी कोई उपचुनाव नहीं लड़ेगी। मायावती ने संभल में सर्वेक्षण के दौरान रविवार को हुई हिंसा की निंदा करते हुए कहा कि आज वहां सर्वेक्षण के दौरान जो कुछ भी हिंसा व बवाल हुआ है, उसके लिए उत्तर प्रदेश का शासन व प्रशासन पूरी तरह जिम्मेदार है। उत्तर प्रदेश में नौ सीट पर हुए उपचुनाव में बसपा के उम्मीदवार सात क्षेत्रों में तीसरे स्थान पर रहे, जबकि दो सीट पर वे आजाद समाज पार्टी (कांशीराम) और ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिममीन (एआईएमआईएम) के उम्मीदवारों से भी पीछे पांचवें स्थान पर रहे।

अगर मेरा नुकसान होगा तो अधिकारी बख्शे नहीं जाएंगे : दयाशंकर सिंह

बलिया (उप्र) : उत्तर प्रदेश सरकार के परिवहन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) दयाशंकर सिंह ने अपने निर्वाचन क्षेत्र के अधिकारियों पर सरकारी धनराशि का समय से उपयोग न किये जाने का आरोप लगाते हुए चेतावनी दी कि अगर उनका नुकसान हुआ तो अधिकारियों को बख्शा नहीं जाएगा। मंत्री सिंह ने शनिवार रात्रि जिला मुख्यालय पर एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए बलिया जिले के अधिकारियों को इंगित करते हुए कहा ''विकास कार्य के लिए मैं पैसा भेजता हूँ, लेकिन यहाँ के अधिकारी उसे लैप्स कर देते हैं। मेरे कार्यकाल के दो साल बचे हैं और मेरा नुकसान होगा तो अधिकारियों को बर्दाश्त नहीं किए जाएगा।'' सिंह ने कहा कि ''ढ़ाई वर्ष बीत जाने के बाद भी समय से कार्य नहीं हुआ और अगर मेरा नुकसान हुआ तो अधिकारियों का नुकसान होगा।'' उन्होंने कहा, ''पांच साल में से ढ़ाई साल से ज्यादा समय बीत गया, कई कार्य स्वीकृत हुए। पैसा हमने वहां से भेज दिया। जिला प्रशासन द्वारा समय से कार्य नहीं होने पर पैसा लैप्स होकर चला गया। जिला प्रशासन कार्य नहीं कर रहा है।'' परिवहन राज्य मंत्री ने उदाहरण देते हुए कहा '' नौ महीना पहले रोडवेज बस डिपो का हमने शिलान्यास किया, लेकिन एक बिल्डिंग गिराने में इतना समय लग गया। मैं जनता को क्या जवाब दूंगा।''

हरियाणा में विधानसभा समितियों का गठन किया गया

चंडीगढ़ : हरियाणा विधानसभा अध्यक्ष हरविंदर कल्याण ने वर्ष 2024-25 की शेष अवधि के लिए विधानसभा की समितियों का गठन किया है। विधानसभा की प्रक्रिया एवं कार्यप्रणाली से संबंधित नियमों के तहत गठित ये समितियां 31 मार्च 2025 तक कार्य करेंगी। इन समितियों में सत्तारूढ़ भाजपा, विपक्षी कांग्रेस, इंडियन नेशनल लोकदल (इनेलो) और निर्दलीय विधायक शामिल हैं। कल्याण, विधानसभा की नियम समिति के पदेन अध्यक्ष होंगे, जबकि कांग्रेस नेता भूपेंद्र सिंह हुड्डा, रघुवीर सिंह कादियान, गीता भुक्कल, भाजपा के घनश्याम दास और कृष्णा गहलावत, निर्दलीय विधायक सावित्री जिंदल और इनेलो के अर्जुन चौटाला इसके सदस्य होंगे। विशेषाधिकार समिति की अध्यक्षता भाजपा के मूलचंद शर्मा करेंगे और इसमें कांग्रेस की गीता भुक्कल, अकरम खान, आदित्य देवीलाल, निर्दलीय विधायक सावित्री जिंदल तथा भाजपा के प्रमोद कुमार विज और तेजपाल तंवर सदस्य होंगे। प्रोटोकॉल मानदंडों के उल्लंघन और विधानसभा के सदस्यों के साथ सरकारी अधिकारियों के अवमाननापूर्ण व्यवहार संबंधी समिति की अध्यक्षता भाजपा विधायक विनोद भयाना करेंगे और इसमें कांग्रेस की विनेश फोगट और भाजपा की कृष्णा गहलावत सदस्य होंगी। लोक लेखा समिति के अध्यक्ष वरिष्ठ कांग्रेस नेता आफताब अहमद होंगे, जबकि भाजपा के ओ.पी. यादव, कांग्रेस के चंद्रमोहन और इनेलो के आदित्य देवीलाल इसके सदस्य होंगे।

झारखंड में बांग्लादेशी घुसपैठ के खिलाफ अभियान राजनीतिक नहीं बल्कि सामाजिक है: चंपई सोरेन

जमशेदपुर : झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री चंपई सोरेन ने रविवार को कहा कि राज्य में कथित तौर पर बढ़ती बांग्लादेशी घुसपैठ के खिलाफ भाजपा का आंदोलन सामाजिक है न कि राजनीतिक या चुनावी। विधानसभा चुनाव में सरायकेला सीट से जीत हासिल करने वाले सोरेन ने दावा किया कि पाकुड़ और साहिबगंज समेत राज्य के कई जिलों में आदिवासी अल्पसंख्यक हो गए हैं। उन्होंने 'एक्स' पर लिखा, जैसा कि हमने पहले भी कहा था, झारखंड में लगातार बढ़ रहे बांग्लादेशी घुसपैठ के खिलाफ हमारा आंदोलन कोई राजनीतिक या चुनावी मुद्दा नहीं, बल्कि एक सामाजिक अभियान है। हमारा स्पष्ट तौर पर

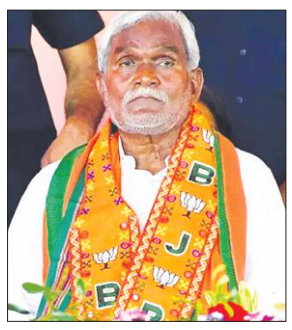

मानना है कि वीरों की इस माटी पर घुसपैठियों को किसी भी प्रकार का संरक्षण नहीं मिलना चाहिए। उन्होंने कहा, पाकुड़, साहिबगंज समेत कई जिलों में आदिवासी समाज आज अल्पसंख्यक हो चुका है। अगर हम राज्य के मूल निवासियों की जमीनों और यहां रहने वाली बहू-बेटियों की अस्मत की रक्षा ना कर सके, तो क्या होगा? उन्होंने लिखा, चुनावी गहमागहमी के बाद, वीर सिदो-कान्हू, चांद-भैरव एवं वीरांगना फूलो-झानो को नमन करके, बहुत जल्द हम लोग संथाल परगना की भूमि पर अपने अभियान का अगला चरण शुरू करेंगे। सरकारें आएंगी-जाएंगी, पार्टियां बनेंगी-बिगड़ेंगी मगर हमारा समाज रहना चाहिए, हमारी आदिवासी पहचान बची रहनी चाहिए, अन्यथा कुछ नहीं बचेगा। बांग्लादेश से कथित घुसपैठ उन प्रमुख मुद्दों में से एक थी जिस पर भाजपा ने विधानसभा चुनाव लड़ा था, हालांकि जनता ने इस मुद्दे को ज्यादा तवज्जो नहीं दी।

महाराष्ट्र में 'इंडिया' गठबंधन के निराशाजनक प्रदर्शन की समीक्षा की जाएगी : तेजस्वी यादव

दतिया (मप्र) : राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के नेता और बिहार के पूर्व उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने रविवार को कहा कि 'इंडिया' गठबंधन महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में मिली करारी हार के पीछे के कारणों की समीक्षा करेगा। महाराष्ट्र में महाविकास आघाडी (एमवीए) में शामिल कांग्रेस, शिवसेना (उबाठा) और शरद पवार नीत राकांपा (एसपी) क्रमशः 16, 20 और 10 सीटें ही जीत पाईं, जबकि सत्तारूढ़ 'महायुति' में शामिल भाजपा को 132, एकनाथ शिंदे नीत शिवसेना को 57 और अजित पवार

नीत राकांपा को 41 सीटें मिलीं। तेजस्वी यादव और उनके पिता लालू प्रसाद यादव ने यहां देश की प्रसिद्ध पीतांबरा पीठ में पूजा-अर्चना की। तेजस्वी यादव ने संवाददाताओं से कहा, ''झारखंड में हमारी जीत हुई है। हम महाराष्ट्र में हार के पीछे के कारणों की समीक्षा करेंगे। लेकिन मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूं कि 2025 का बिहार चुनाव हम जीतेंगे।'' उन्होंने कहा, ''हम मां का आशीर्वाद लेने आए हैं, ताकि हम दूसरों की सेवा कर सकें।'' पिता-पुत्र ने भगवान शिव के वन खंडेश्वर मंदिर में भी पूजा-अर्चना की।

मुझसे मिलने के लिए आने वाले गुलदस्ता नहीं किताबें दें : सोरेन

रांची : झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के नेता एवं मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने राज्य विधानसभा में पार्टी की जीत के बाद बधाई देने वालों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए रविवार को उनसे मिलने आने वाले लोगों से आग्रह किया कि वे उन्हें फूलों के गुलदस्ते नहीं, बल्कि किताबें भेंट करें। हेमंत सोरेन की झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के नेतृत्व वाले गठबंधन ने राज्य में लगातार दूसरी बार सत्ता हासिल की और 81 सदस्यीय सदन में 56 सीट पर जीत दर्ज की। वहीं, भाजपा के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) को केवल 24 सीट पर ही जीत हासिल हुई। सोरेन ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर जारी पोस्ट में कहा, '' देशभर से मिल रही शुभकामनाओं के लिए मैं सभी का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं। 2019 की तरह मैं फिर सभी से अनुरोध करूंगा कि अगर आप मुझसे मिलने आ रहे हैं तो मुझे गुलदस्ते की जगह किताब दें।'' उन्होंने कहा, ''जब मैं जेल में था, तो मुझे आप सभी द्वारा उपहार स्वरूप दी गई पुस्तकों को पढ़ने के लिए काफी समय मिला। इसके लिए आप सभी का धन्यवाद।'' सोरेन 28 नवंबर को मुख्यमंत्री पद की शपथ लेंगे और तब तक वह कार्यवाहक मुख्यमंत्री रहेंगे। सोरेन ने 2019 में लोगों से यही अनुरोध किया था और उन्हें दिए गए गुलदस्ते की तस्वीरें साझा करते हुए कहा था कि उन्हें बुरा लगता है जब वह फूलों की देखभाल नहीं कर पाते हैं।

राजस्थान: कर्ज न चुका पाने के कारण घर सील होने से आहत युवती ने आत्महत्या की

कोटा : राजस्थान के बूंदी जिले में ऋण न चुकाने पर घर सील किये जाने से आहत 23 वर्षीय एक युवती ने जहर खाकर कथित तौर पर आत्महत्या कर ली। पुलिस ने रविवार को यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि एक निजी वित्त कंपनी के कर्मचारियों ने घर को सील किया था। पुलिस के मुताबिक, घटना के बाद दिव्या मीणा को कोटा के महाराव भीम सिंह अस्पताल ले जाया गया, जहां शनिवार देर रात इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि घटना शनिवार दोपहर केशोरायपाटन क्षेत्र के तीरथ में उस समय हुई, जब आवास फाइनेंस लिमिटेड के कर्मचारियों ने पुलिस के साथ स्थानीय अदालत द्वारा जारी जब्ती आदेश के बाद दिव्या के घर को सील कर दिया। केशोरायपाटन क्षेत्राधिकारी देवेश भारद्वाज ने बताया कि दिव्या के पिता महेश मीणा ने मकान बनाने के लिए 2021 में कंपनी से सात लाख रुपए उधार लिए थे लेकिन पारिवारिक संकट के कारण वे ऋण चुकाने में विफल रहे। भारद्वाज ने बताया हालांकि महेश ने चूककर्ता होने से पहले 17 किश्तें चुकाई थीं। क्षेत्राधिकारी के अनुसार, फाइनेंस कंपनी ने जब्ती के लिए कानूनी प्रक्रियाओं का पालन किया और उधारकर्ता को नोटिस देने के बाद उन्हें पहले ही सूचित कर दिया था। उन्होंने बताया कि शनिवार को कर्मचारी महेश के घर पहुंचे और महेश की मौजूदगी में घर को सील कर दिया। अधिकारी ने बताया कि दिव्या उस समय पास के खेत में काम कर रही थी और जब वह शाम करीब चार बजे घर लौटी तो उसने घर को सील पाया। उन्होंने बताया कि सदमे को बर्दाश्त न कर पाने के कारण दिव्या पड़ोसी की छत से घर में घुस गई और जहर खा लिया। जहर के कीटनाशक होने का संदेह है। अधिकारी ने बताया कि पड़ोसी और परिवार के सदस्य उसे अस्पताल ले गए, जहां उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई। क्षेत्राधिकारी ने बताया कि उसके पिता ने फाइनेंस कंपनी पर उत्पीड़न का आरोप लगाया और उनकी शिकायत के आधार पर कंपनी के कर्मचारी अर्जुन मालव और अन्य के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता अधिनियम की धारा 108 (आत्महत्या के लिए उकसाना) के तहत मुकदमा दर्ज किया गया।

सपा के पैरों तले जमीन खिसक चुकी है, अखिलेश यादव अपनी हार स्वीकार नहीं कर पा रहे: ब्रजेश पाठक

लखनऊ : उत्तर प्रदेश विधानसभा की नौ सीट पर उपचुनाव के परिणाम आने के दूसरे दिन रविवार को उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने समाजवादी पार्टी (सपा) के अध्यक्ष एवं राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव पर करार प्रहार करते हुए कहा कि सपा के पैरों तले जमीन खिसक गयी है और अखिलेश यादव अपनी हार स्वीकार नहीं कर पा रहे हैं। राज्य की नौ सीट पर उपचुनाव के शनिवार को आये परिणाम में सात सीट भाजपा गठबंधन और दो सीट सपा को मिलीं। सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने एक पत्रकार वार्ता में भाजपा पर सत्ता के दुरुपयोग करने का आरोप लगाते हुए राज्य में नौ विधानसभा

सीट पर हुए उपचुनाव के दौरान इलेक्ट्रॉनिक बूथ कैप्चरिंग का आरोप भी लगाया और कहा कि अगर निर्वाचन आयोग ईवीएम की फोरेंसिक जांच करवा ले तो स्थिति स्पष्ट हो जाएगी। यादव की पत्रकार वार्ता के कुछ ही देर बार भाजपा प्रदेश मुख्यालय पर आयोजित एक संवाददाता सम्मेलन में उप मुख्यमंत्री पाठक ने अखिलेश यादव के बयानों पर पलटवार करते हुए सपा के शासनकाल और उसकी नीतियों पर सवाल उठाया। पाठक ने सपा पर निशाना साधते हुए कहा, ''सीने में जलन, आँखों में तूफ़ान सा क्यों है, सैफई घराने में हर शख्स परेशान सा क्यों है। सपा के पैरों तले जमीन खिसक चुकी है और अखिलेश यादव इस हार को स्वीकार नहीं कर पा रहे हैं।'' उपमुख्यमंत्री पाठक ने सपा पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि ''सपा के नेता गुंडई, मवालीपन और अराजकता के लिए जाने जाते हैं।'' उन्होंने कन्नौज, अयोध्या और करहल की घटनाओं का जिक्र करते हुए कहा कि जब सपा के नेता दलित और ओबीसी (अन्य पिछड़ा वर्ग) महिलाओं के साथ अत्याचार करते हैं, तब अखिलेश यादव की जुबान नहीं खुलती।

शहीदी पखवाड़े के दौरान स्थानीय निकाय चुनाव कराए पंजाब सरकार : शिरोमणि अकाली दल

चंडीगढ़ : शिरोमणि अकाली दल ने रविवार को पंजाब सरकार से आग्रह किया कि वह 15 से 31 दिसंबर तक दसवें सिख गुरु गोविंद सिंह के पुत्रों की शहादत के पखवाड़े के दौरान नगर निकाय चुनाव न कराए। शिअद के नेता दलजीत सिंह चीमा ने कहा, शिअद पंजाब सरकार और राज्य निर्वाचन आयोग से आग्रह करता है कि वह 15 से 31 दिसंबर के बीच चार साहिबजादों (गुरु गोबिंद सिंह के चार पुत्रों) और माता गुजरी जी (गुरु गोबिंद सिंह की मां) के शहीदी पखवाड़े के वार्षिक ऐतिहासिक अवसर के दौरान स्थानीय निकाय चुनाव न कराए। उन्होंने कहा कि पखवाड़े के दौरान लाखों लोग बलिदान के इस अद्वितीय इतिहास से जुड़े सभी धार्मिक स्थलों पर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने आते हैं।

न्यूज इन ब्रीफ

मिजोरम में बेटे की गोली मारकर हत्या करने के आरोप में पिता गिरफ्तार

आइजोल : मिजोरम के आइजोल में पुलिस ने अपने बेटे की गोली मारकर हत्या करने के आरोप में 48 वर्षीय व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। पुलिस के अनुसार यह घटना शनिवार शाम को आइजोल के दिनथर इलाके में हुई। पुलिस ने बताया कि आरोपी रालथुआमलियाना का अपने 28 वर्षीय बेटे डेविड आर लालदुहावमा के साथ घरेलू मुद्दों को लेकर झगड़ा हो गया था। पुलिस ने बताया कि आक्रोश में आकर रालथुआमलियाना ने अपनी बंदूक उठाई और अपने बेटे को गोली मार दी, जिसकी निकटवर्ती 'एबेनेजर मेडिकल सेंटर' में मौत हो गई। सूत्रों ने दावा किया कि घटना के समय रालथुआमलियाना नशे में था। डेविड के परिवार में पत्नी और दो बच्चे हैं।

जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा में आतंकवादी ठिकाने का भंडाफोड़

श्रीनगर : जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा जिले में रविवार को सुरक्षा बलों ने आतंकवादियों के एक ठिकाने का भंडाफोड़ किया। पुलिस ने यह जानकारी दी। एक पुलिस प्रवक्ता ने बताया, हंदवाड़ा में पुलिस ने सुरक्षा बलों के साथ मिलकर मुगलपुरा क्रेमहोरा के वन क्षेत्र में आतंकवादियों के एक ठिकाने का पता लगाया और वहां से गोला-बारूद तथा विस्फोटक बरामद किए। उन्होंने बताया कि सुरक्षा बलों ने जचलदारा पुलिस चौकी के अंतर्गत मुगलपोरा क्रेमहोरा के वन क्षेत्र में तलाशी अभियान चलाया था। प्रवक्ता ने बताया, अभियान के दौरान आतंकवादियों के एक ठिकाने का पता चला और वहां से 10 हथगोले सहित भारी मात्रा में विस्फोटक तथा गोला-बारूद बरामद किया गया।

नौ दिन में छह लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने सबरीमला के दर्शन किए; राजस्व 41 करोड़ रुपये रहा

सबरीमाला : त्रावणकोर देवस्वओम बोर्ड (टीडीबी) ने रविवार को बताया कि मंडलम-मकरविलक्कु तीर्थयात्रा सीजन के पहले नौ दिनों मे छह लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने सबरीमला में भगवान अयप्पा मंदिर में दर्शन किए। टीडीबी के अध्यक्ष पी. एस. प्रशांत ने कहा कि 16 नवंबर (वृश्चिकम 1) को खुले मंदिर में इस अवधि के दौरान 6,12,290 तीर्थयात्री आए और पिछले साल इस अवधि में 3,03,501 श्रद्धालुओं ने दर्शन किए थे। इस अवधि में एकत्रित राजस्व भी उल्लेखनीय रूप से बढ़कर 41.64 करोड़ रुपये हो गया है, जो पिछले साल के मुकाबले 13.33 करोड़ रुपये अधिक है। प्रशांत ने इस वृद्धि का श्रेय प्रभावी प्रबंधन और भक्तों के लिए बेहतर सुविधाओं को दिया।

'द साबरमती रिपोर्ट' को उत्तराखंड में भी कर मुक्त किया जाएगा

देहरादून : उत्तर प्रदेश तथा अन्य राज्यों के बाद गोधरा अग्निकांड पर आधारित फिल्म 'द साबरमती रिपोर्ट' को उत्तराखंड में भी कर मुक्त किया जाएगा। यह घोषणा उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने रविवार को यहां फिल्म देखने के बाद की। इस दौरान उनके साथ फिल्म के अभिनेता विक्रांत मैसी के अलावा उनके कैबिनेट सहयोगी, सांसद और विधायक भी मौजूद रहे। सत्ताईस फरवरी 2002 को गोधरा में साबरमती एक्सप्रेस ट्रेन में आग लगने की घटना को लेकर बनाई गयी फिल्म को देखकर बाहर आए मुख्यमंत्री ने कहा, 'अयोध्या से सवार हुए 59 रामभक्त साबरमती एक्सप्रेस ट्रेन में यात्रा कर रहे थे और गोधरा स्टेशन पर उसमें आग लगा दी गयी जिससे वे असमय काल के गाल में समा गए।

महाराष्ट्र आबकारी विभाग ने दिलजीत के पुणे कंसर्ट के लिए शराब परमिट रद्द किया

पुणे : महाराष्ट्र आबकारी विभाग ने पुणे के कोथरुड इलाके में अभिनेता-गायक दिलजीत दोसांझ के संगीत कंसर्ट में शराब परोसने का परमिट रविवार को रद्द कर दिया। कोथरुड के नवनिर्वाचित भाजपा विधायक चंद्रकांत पाटिल सहित विभिन्न वर्गों के लोगों ने रविवार शाम होने वाले कंसर्ट में शराब परोसने की योजना पर आपत्ति जताई थी, जिसके बाद विभाग ने परमिट रद्द करने का फैसला लिया।

कभी दावा नहीं किया कि भाजपा जीतेगी झारखंड चुनाव: हिमंत

गुवाहाटी : झारखंड में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की करारी हार के एक दिन बाद असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने रविवार को कहा कि उन्होंने कभी यह दावा नहीं किया था कि पार्टी राज्य के विधानसभा चुनाव में जीत दर्ज करेगी। हेमंत सोरेन की झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के नेतृत्व वाले गठबंधन ने राज्य में लगातार दूसरी बार सत्ता हासिल की और 81 सदस्यीय सदन में 56 सीट पर जीत दर्ज की। वहीं, भाजपा के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) को केवल 24 सीट पर ही जीत हासिल हुई। शर्मा, झारखंड चुनाव के लिए भाजपा के सह-प्रभारी थे। असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने झारखंड मुक्ति मोर्चा नीत गठबंधन से घुसपैठियों की पहचान कर उन्हें वापस भेजने के अपने संवैधानिक कर्तव्य को निभाने का आग्रह किया। शर्मा ने यहां संवाददाताओं को संबोधित करते हुए कहा, जब भी आप (मीडिया) ने मुझसे झारखंड के बारे में पूछा तो मैंने कहा था कि यहां चुनाव मुश्किलों भरा रहने वाला है। मैंने कभी दावा नहीं किया कि हम जीतेंगे। हमारी पार्टी के लिए वहां चुनाव लड़ना कठिन काम था, लेकिन हमने मौजूदा परिस्थितियों में अच्छा काम किया।

भाजपा ने हमेशा अल्पसंख्यक मतदाताओं पर ध्यान केंद्रित किया है, लेकिन तुष्टीकरण के बिना: हिमंत

गुवाहाटी : असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने रविवार को कहा कि भारतीय जनता पार्टी(भाजपा) ने बिना किसी तुष्टिकरण की नीति के हमेशा अल्पसंख्यक मतदाताओं पर ध्यान केंद्रित किया है। उन्होंने कहा कि इस साल हुए लोकसभा चुनाव में करीमगंज में भाजपा की जीत और सामागुड़ी विधानसभा सीट पर हालिया उपचुनाव सभी के साथ समान व्यवहार करने के इसके सिद्धांत की सफलता को प्रदर्शित करता है। शर्मा ने यहां संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि 2026 के विधानसभा चुनाव में अल्पसंख्यक बहुल निर्वाचन क्षेत्रों के लिए भाजपा ने अपनी रूपरेखा तय कर ली है। उन्होंने कहा, ''हमारा ध्यान हमेशा अल्पसंख्यक मतदाताओं पर रहा है, लेकिन इसके पीछे का सिद्धांत 'किसी के तुष्टीकरण का नहीं, सभी को न्याय' का रहा है। यह हमारे सबका साथ, सबका विकास ध्येय वाक्य में भी प्रतिबिंबित हुआ है।'' शर्मा ने दावा किया कि इस गैर-तुष्टीकरण नीति के परिणामस्वरूप, भाजपा ने करीमगंज लोकसभा सीट और अब सामागुड़ी विधानसभा सीट जीती है, दोनों निर्वाचन क्षेत्रों में लगभग 65 प्रतिशत मुस्लिम मतदाता हैं। शर्मा ने यह भी दावा किया कि बदरुद्दीन अजमल के नेतृत्व वाली एआईयूडीएफ के इस बार सामागुड़ी में चुनाव नहीं लड़ने के फैसले ने भाजपा को फायदा पहुंचाया। उन्होंने कहा, ''अगर एआईयूडीएफ ने अपना उम्मीदवार खड़ा किया होता तो हमारे वोट उन्हें चले गए होते। एआईयूडीएफ के चुनाव मैदान में नहीं होने से हमें फायदा मिला।'' मुख्यमंत्री ने उपचुनाव में सभी पांच विधानसभा सीट पर भाजपा के नेतृत्व वाले सत्तारूढ़ गठबंधन की जीत को ''अभूतपूर्व सफलता'' करार दिया।

महाराष्ट्र:भाजपा को सबसे अधिक 26.77 प्रतिशत वोट

राकांपा (एसपी) को राकांपा से अधिक वोट मिले

मुंबई : महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों में भाजपा ने सबसे अधिक 26.77 प्रतिशत वोट हासिल किया है। पार्टी ने 149 सीटों पर चुनाव लड़कर 132 सीटें जीतीं और 17,293,650 वोट हासिल किए। निर्वाचन आयोग के आंकड़ों से यह जानकारी मिली। हालिया महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों में भाजपा का 132 सीटें जीतना 100 सीटों का आंकड़ा पार करने की 'हैट्रिक' है। पार्टी ने 2014 के विधानसभा चुनावों में 122 सीटें और 2019 के चुनावों में 105 सीटें जीती थीं। महाराष्ट्र विधानसभा में 101 सीटों पर लड़ी कांग्रेस ने केवल 16 सीटें जीतीं और 12.42 वोट प्रतिशत के साथ दूसरे स्थान पर रही। पार्टी को 8,020,921 वोट मिले। एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना ने 81 सीटों पर चुनाव लड़ा था, जिसमें से 57 सीटों पर जीत दर्ज की और 12.38 प्रतिशत वोट हासिल किये। दिलचस्प बात यह है कि कम सीटें हासिल करने वाली शरद पवार नीत राकांपा (शरदचंद्र पवार) को अजित पवार नीत राकांपा से अधिक वोट मिले। राकांपा (एसपी) ने 86 सीटों पर चुनाव लड़ा, लेकिन 11.28 प्रतिशत वोट के साथ केवल 10 सीटें ही जीत पाई। इसके विपरीत, अजित पवार के नेतृत्व वाली राकांपा ने 59 सीटों पर चुनाव लड़कर 41 सीटें जीतीं, और 9.01 प्रतिशत वोट हासिल किये। उद्धव ठाकरे नीत शिवसेना (उबाठा) ने 20 सीटें जीतीं और पार्टी को 9.96 प्रतिशत वोट मिले।

जम्मू में रोहिंग्याओं को शरण देने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई, पांच मुकदमे दर्ज किए

जम्मू : जम्मू-कश्मीर पुलिस ने रविवार को बताया कि बिना किसी दस्तावेज और संभावित सुरक्षा खतरा पैदा करने वाले रोहिंग्या शरणार्थियों को शरण देने के मामले में स्थानीय मकान मालिकों के खिलाफ पांच मुकदमे दर्ज किए गए हैं। पुलिस ने इस कार्रवाई को रोहिंग्या शरणार्थियों की अवैध घुसपैठ को रोकने और सार्वजनिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए एक 'महत्वपूर्ण कदम' करार दिया। पुलिस ने यहां एक बयान में बताया, जम्मू पुलिस ने कई मामलों की पहचान की और उन मकान मालिकों के खिलाफ मुकदमे दर्ज किए, जिन्होंने जानबूझकर या अनजाने में बिना किसी दस्तावेज के रोहिंग्या शरणार्थियों को अपने मकान किराए पर दिये। इससे सुरक्षा को खतरा होने की आशंका है। बयान के मुताबिक, जम्मू के जिला आयुक्त ने जिले के सभी संपत्ति मालिकों को किराएदारों का पुलिस सत्यापन अनिवार्य करने का आदेश जारी किया। यह निर्देश असामाजिक तत्वों और गैर कानूनी तरीके से रह रहे लोगों द्वारा उत्पन्न संभावित खतरे के बारे में बढ़ती चिंताओं के मद्देनजर आया है। आशंका है कि ये लोग किराए के मकानों का अवैध गतिविधियों के लिए उपयोग कर सकते हैं। पुलिस ने बताया कि उसने इस संबंध में एक व्यापक जांच शुरू की है और जम्मू के फरमान अली व श्रीनगर के आजम मलिक के खिलाफ नोवाबाद थाने में मुकदमे दर्ज किए हैं।

वैष्णव ने देखी 'द साबरमती रिपोर्ट', कहा: सच्चाई सामने लाने का अच्छा प्रयास

नयी दिल्ली : केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव ने रविवार को 'द साबरमती रिपोर्ट' देखी। विक्रांत मेसी अभिनीत यह फिल्म 2002 के गोधरा ट्रेन अग्निकांड पर आधारित है, जिसके कारण गुजरात के कुछ हिस्सों में दंगे भड़क गए थे। महादेव ऑडिटोरियम में 'द साबरमती रिपोर्ट' की विशेष स्क्रीनिंग आयोजित की गई, जिसमें गुजराती समाज मंडल के सदस्य भी शामिल हुए। वैष्णव ने फिल्म देखने के बाद संवाददाताओं से कहा, साबरमती की सच्चाई को सामने लाने का प्रयास बहुत अच्छा है। यह सच्चाई देश के सामने आनी चाहिए। उन्होंने कहा, दुर्भाग्य से, लोगों के एक वर्ग ने सच को झूठ और झूठ को सच में बदलने की कोशिश की। लेकिन सौभाग्य से सच हमेशा सामने आता है और अब यह सबके सामने आ रहा है। धीरज सरना के निर्देशन में बनी 'द साबरमती रिपोर्ट' 27 फरवरी 2002 को गोधरा में साबरमती एक्सप्रेस के डिब्बों में आग लगने की घटना के पीछे की सच्चाई को सामने लाने का दावा करती है। इस घटना में, अयोध्या से लौट रहे 59 कारसेवकों की मौत हो गई थी। फिल्म में राशि खन्ना और रिद्धि डोगरा ने भी अहम किरदार निभाए हैं।

जम्मू-कश्मीर: रियासी में वैष्णो देवी रोपवे परियोजना के खिलाफ तीन दिवसीय हड़ताल 24 घंटे बढ़ाई गई

जम्मू : जम्मू-कश्मीर के रियासी जिले में त्रिकूट पर्वत स्थित वैष्णो देवी मंदिर तक के यात्रा मार्ग पर प्रस्तावित रोपवे परियोजना के खिलाफ बंद के तीसरे दिन रविवार को सैकड़ों दुकानदारों और मजदूरों ने रैली निकाली। अधिकारियों के मुताबिक, हड़ताल के आयोजकों ने इसकी अवधि 24 घंटे के लिए बढ़ाने की घोषणा की। प्रदर्शनकारियों ने कटरा में कई जगहों पर धरना दिया, जो श्रद्धालुओं के लिए आधार शिविर है। उन्होंने श्राइन बोर्ड और रोपवे परियोजना के खिलाफ नारे लगाए, क्योंकि उनका मानना है कि इससे वे बेरोजगार हो जाएंगे। श्री माता वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड द्वारा ताराकोट मार्ग से सांझी छत के बीच 12 किलोमीटर लंबे मार्ग पर 250 करोड़ रुपये की लागत वाली यात्री रोपवे परियोजना को लागू करने की घोषणा के बाद दुकानदारों, टट्टू और पालकी मालिकों की तीन दिवसीय हड़ताल शुक्रवार को शुरू हुई थी। दुकानदारों और टट्टू एवं पालकी मालिकों की संयुक्त समिति के एक सदस्य ने कहा, 72 घंटे की हड़ताल को 24 घंटे के लिए बढ़ा दिया गया है। हम फिर से मिलेंगे और अपनी भावी कार्रवाई की घोषणा करेंगे।

'इंडिया' गठबंधन के नेता शीतकालीन सत्र के लिए रणनीति बनाने को लेकर आज बैठक करेंगे

नयी दिल्ली : संसद के आगामी शीतकालीन सत्र के लिए अपनी संयुक्त रणनीति बनाने को लेकर सोमवार सुबह विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' में शामिल दलों के नेता बैठक करेंगे। विपक्षी दलों के नेता सुबह 10 बजे राज्यसभा में विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खरगे के कार्यालय में बैठक करेंगे। इस बैठक में लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी के भी भाग लेने की संभावना है। विपक्ष अमेरिका में अदाणी पर आरोप, मणिपुर हिंसा और मूल्य वृद्धि समेत कई मुद्दों पर सरकार को घेरने की कोशिश करेगा। यह बैठक भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नीत गठबंधन के महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव जीतने, वहीं झारखंड विधानसभा चुनाव में 'इंडिया' गठबंधन की जीत के दो दिन बाद होने वाली है। विपक्षी दलों ने रविवार को केंद्र से अदाणी समूह के खिलाफ अमेरिकी अभियोजकों के रिश्वतखोरी के आरोपों पर संसद में चर्चा कराने की मांग की, वहीं केंद्रीय मंत्री किरेन रीजीजू ने स्पष्ट किया कि दोनों सदनों में उठाए जाने वाले मामलों पर संबंधित अध्यक्ष की सहमति से उनकी अधिकृत समितियां निर्णय लेंगी। विपक्षी दलों ने मांग की है कि गौतम अदाणी को गिरफ्तार किया जाए और उनके खिलाफ जांच शुरू की जाए। विपक्ष ने अदाणी समूह के खिलाफ आरोपों पर चर्चा के लिए एक संयुक्त संसदीय समिति के गठन की भी मांग की है।

मणिपुर: मारे गए 3 लोगों के शवों पर पोस्टमार्टम रिपोर्ट में गोली लगने और जख्म के निशान मिले

इंफाल : मणिपुर के जिरीबाम जिले में संदिग्ध कुकी उग्रवादियों द्वारा मारे गए छह लोगों में से तीन की पोस्टमार्टम रिपोर्ट में उनके शरीर के विभिन्न हिस्सों पर गोली लगने के कई घाव और जख्म के निशान पाए गए हैं। अधिकारियों ने रविवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि तीन वर्षीय चिंगखेनगांबा सिंह की रिपोर्ट से पता चला है कि उसकी दाहिनी आंख गायब थी और उसके सिर में गोली का घाव था। रिपोर्ट में कटने से घाव, छाती में फ्रैक्चर और बांह तथा शरीर के अन्य हिस्सों पर घाव के निशान भी दर्ज किए गए हैं। 17 नवंबर को हस्ताक्षरित रिपोर्ट में बताया गया है कि बच्चे का शरीर सड़ने की स्थिति में था। अधिकारियों ने बताया कि रिपोर्ट में कहा गया है कि गुवाहाटी स्थित फोरेंसिक विज्ञान निदेशालय से विसरा के रासायनिक विश्लेषण की रिपोर्ट मिलने तक मौत के कारण का पता नहीं चल पाएगा। पोस्टमार्टम असम के कछार जिले के सिलचर मेडिकल कॉलेज अस्पताल (एसएमसीएच) में किया गया। अधिकारियों ने बताया कि रिपोर्ट में उसकी मां एल. हेतोनबी देवी (25) को लगी चोटों का भी विवरण दिया गया है, जिनके सीने में तीन और नितंब में एक गोली लगी थी। रिपोर्ट के अनुसार, उनकी मृत्यु के लगभग सात दिन बाद 18 नवंबर को उनका शव एसएमसीएच लाया गया था। अधिकारियों ने बताया कि बच्चे की दादी वाई. रानी देवी (60) को पांच गोलियां लगीं - एक खोपड़ी में, दो छाती में, एक पेट में और एक हाथ में।

जम्मू-कश्मीर के भद्रवाह में मौसम के पहले हिमपात से दो महीने का सूखा खत्म

भद्रवाह/जम्मू : जम्मू-कश्मीर के डोडा जिले में भद्रवाह के आसपास की पहाड़ियों पर रात में इस मौसम का पहला हिमपात हुआ, जिससे पिछले लगभग दो महीनों से क्षेत्र में चल रही शुष्क अवधि से लोगों को राहत मिलेगी। अधिकारियों ने रविवार को यह जानकारी दी। अधिकारियों के मुताबिक कश्मीर के ऊपरी इलाकों में हिमपात और मैदानी इलाकों में बारिश से पर्यटन व्यवसायियों और किसानों के चेहरे पर खुशी लौट आई है। भद्रवाह के लोगों को सुबह उठते ही आसपास की पहाड़ियों पर बर्फ की मोटी परत दिखाई दी। अधिकारियों ने बताया कि भद्रवाह-पठानकोट राजमार्ग पर स्थित गुलदांडा घास का मैदान, जो पिछले साल जिले में सबसे अधिक देखा जाने वाला हिमपात स्थल था। गुलदांडा में हिमपात में लगभग दो महीने की देरी के कारण यह क्षेत्र पर्यटकों से वंचित रहा। रविवार को गंतव्य पर पहुंचे कई पर्यटक आसमान से गिरती सफेद बर्फ का आनंद लेते नजर आए। बस्ती गांव के स्थानीय विक्रेता इमरान अली ने कहा, ''हम हिमपात का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। पिछले साल, गुलदांडा में अक्टूबर के पहले सप्ताह में हिमपात हुआ था और यह बर्फ प्रेमियों के लिए पसंदीदा जगह बन गई थी, जिसके परिणामस्वरूप दर्जनों स्थानीय विक्रेताओं का कारोबार खूब बढ़ा था।

न्यूज अपडेट

शरद पवार ने की पृथ्वीराज चव्हाण से मुलाकात

मुंबई : राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरदचंद्र पवार) के प्रमुख शरद पवार ने रविवार को महाराष्ट्र के सतारा जिले के कराड शहर में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पृथ्वीराज चव्हाण से मुलाकात की। दोनों नेताओं के बीच बैठक के स्थान और चर्चा के बारे में विवरण ज्ञात नहीं हैं। पूर्व मुख्यमंत्री चव्हाण को उनके गृह क्षेत्र कराड दक्षिण निर्वाचन क्षेत्र से भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के उम्मीदवार अतुल भोसले ने हराया है। कराड उत्तर निर्वाचन क्षेत्र से हारने वाले राकांपा (शरदचंद्र पवार) नेता बालासाहेब पाटिल भी पवार और चव्हाण के साथ बैठक में मौजूद थे। महाराष्ट्र में 288-सदस्यीय विधानसभा के लिए हुए चुनाव में महायुति गठबंधन ने 230 सीट जीतकर सत्ता बरकरार रखी। चुनाव परिणाम शनिवार को घोषित किए गए। महायुति गठबंधन में मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे की शिवसेना और उपमुख्यमंत्री अजित पवार की राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) भी शामिल हैं। विपक्षी महा विकास आघाडी (एमवीए) गठबंधन सिर्फ 46 सीट ही जीत सका। एमवीए में कांग्रेस, राकांपा (शरदचंद्र पवार) और शिवसेना (उबाठा) शामिल हैं। भाजपा को 132 सीट मिलीं, शिवसेना को 57, जबकि राकांपा को 41 सीट मिलीं। एमवीए में राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरदचंद्र पवार) के उम्मीदवारों ने 10 सीट जीतीं, कांग्रेस ने 16 सीट जीतीं, जबकि शिवसेना (उबाठा) ने 20 सीट पर जीत दर्ज की।

देश तोड़ने की बात करने वालों को जनता ने सबक सिखाया : महाराष्ट्र चुनावों पर बोलीं कंगना

मनाली/शिमला : भाजपा सांसद कंगना रनौत ने रविवार को कहा कि लोगों ने देश को तोड़ने की बात करने वालों को करारा सबक सिखाया है। वह महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों का जिक्र कर रही थीं जहां उनकी पार्टी के नेतृत्व वाले महायुति गठबंधन ने कांग्रेस के नेतृत्व वाले महा विकास आघाडी (एमवीए) को करारी शिकस्त दी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व की सराहना करते हुए अभिनेत्री-राजनेता ने कहा कि उनका मानना है कि उनका जन्म देश के उद्धार के लिए हुआ है और वह अजेय हैं। रनौत और महाराष्ट्र के तत्कालीन मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे की एमवीए सरकार के बीच 2020 में तब कड़वाहट आ गयी थी, जब तत्कालीन अविभाजित शिवसेना के नेतृत्व वाली बृहन्मुंबई महानगर पालिका (बीएमसी) ने उनके बांद्रा स्थित बंगले में कथित अवैध निर्माण को ध्वस्त कर दिया था।

भाजपा नेता सुधांशु त्रिवेदी ने संसद सत्र से पहले अदाणी पर अमेरिकी अभियोग के समय को लेकर सवाल उठाए

नयी दिल्ली : भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के राज्यसभा सदस्य सुधांशु त्रिवेदी ने उद्योगपति गौतम अदाणी पर अमेरिका द्वारा अभियोग चलाये जाने के समय पर रविवार को सवाल खड़े किये और तर्क दिया कि अन्य देशों द्वारा इस तरह के आरोप संसद सत्र शुरू होने से ठीक पहले क्यों लगाए जा रहे हैं। भाजपा प्रवक्ता त्रिवेदी यहां मेजर ध्यानचंद राष्ट्रीय स्टेडियम में 'साहित्य आजतक' के समापन अवसर पर ''आरएसएस के 100 साल'' सत्र को संबोधित कर रहे थे। त्रिवेदी ने कहा, ''पिछले तीन-चार वर्षों से, जब भी संसद सत्र शुरू होने वाला होता है, ऐसे आरोप सामने आते हैं, चाहे वह हिंडनबर्ग रिपोर्ट हो, बीबीसी रिपोर्ट हो, ग्रेट थनबर्ग रिपोर्ट हो या अब यह (अमेरिकी अभियोग)। विदेशों से आने वाले ऐसे आरोपों पर सभी को आपत्ति करनी चाहिए। आदर्श रूप से, हमें कहना चाहिए कि हम अपनी कानूनी प्रणाली के अनुसार काम करेंगे, न कि उनकी।'' संसद का शीतकालीन सत्र सोमवार से शुरू होगा और 20 दिसंबर तक चलेगा।

ओडिशा पुलिस ने 'तस्करी' कर लाई गई बांग्लादेशी नाबालिग लड़की को कटक में बचाया

भुवनेश्वर : ओडिशा पुलिस ने संदिग्ध रूप से तस्करी कर लाई गई एक बांग्लादेशी नाबालिग लड़की को कटक में बचा लिया। पुलिस ने नाबालिग की संभावित तस्करी के मामले की जांच शुरू कर दी है। कटक के पुलिस उपायुक्त जगमोहन मीणा ने रविवार को संवाददाताओं को बताया कि नाबालिग लड़की लिंक रोड पर घूमती हुई मिली थी और उसे नौ नवंबर को बचाया गया। उन्होंने बताया कि बाद में पुलिस ने उसे बाल कल्याण समिति (सीडब्ल्यूसी) को सौंप दिया। पुलिस उपायुक्त ने कहा, नाबालिग के पास भारत यात्रा के संबंध में कोई वैध दस्तावेज नहीं है। सीडब्ल्यूसी के अध्यक्ष प्रमोद कुमार आचार्य ने कहा कि 16 वर्षीय नाबालिग लड़की को अगस्त-सितंबर के आसपास ढाका से कोलकाता लाया गया और फिर भुवनेश्वर ले जाया गया। काउन्सलिंग के बाद सीडब्ल्यूसी को पता चला कि नाबालिग भुवनेश्वर में एक मसाज पार्लर में काम करती थी और उसे वेश्यावृत्ति में धकेल दिया गया था, बाद में वेतन न मिलने पर वह मसाज पार्लर से भाग गई और कटक में इधर-उधर घूमती हुई पाई गई।

महायुति की जीत में 'लाडकी बहिन' योजना, ध्रुवीकरण ने संभवत: भूमिका निभाई: शरद पवार

कराड (महाराष्ट्र) : राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एसपी) प्रमुख शरद पवार ने रविवार को कहा कि 'लाडकी बहिन' योजना, मतदान में बड़ी संख्या में महिलाओं की भागीदारी और धार्मिक आधार पर ध्रुवीकरण ने महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में महायुति की जीत में संभवत: भूमिका निभाई। उन्होंने कहा कि शनिवार को घोषित चुनाव परिणाम उम्मीद के मुताबिक नहीं रहे, लेकिन वह पार्टी को फिर से मजबूत करेंगे। सक्रिय राजनीति से अलग होने के बारे में पूछे गए सवाल पर पवार ने कहा कि वह और उनकी पार्टी के सहयोगी इस बारे में फैसला करेंगे। सतारा जिले के कराड शहर में पत्रकारों से बातचीत में शरद पवार ने स्वीकार किया कि उनके भतीजे और उपमुख्यमंत्री अजित पवार के नेतृत्व वाली राकांपा ने उनकी पार्टी (राकांपा-एसपी) से अधिक सीट पर जीत दर्ज की है। उन्होंने कहा, ''हर कोई जानता है कि राकांपा की स्थापना किसने की थी।'' उन्होंने कहा, ''लाडकी बहिन योजना और धर्म के आधार पर ध्रुवीकरण ने इसमें भूमिका निभाई। महिलाओं की बड़ी संख्या में भागीदारी महाराष्ट्र में महायुति की जीत का कारण हो सकती है। हम हार के कारणों पर विचार-विमर्श करेंगे और आवश्यक कदम उठाएंगे।'' पवार ने कहा कि राकांपा (शरदचंद्र पवार) नये नेतृत्व की नयी ऊर्जा के साथ लोगों के बीच जाएगी। ईवीएम पर पूछे गए सवाल के जवाब में पवार ने कहा कि वह ईवीएम के बारे में तभी बोलेंगे जब उनके पास आधिकारिक आंकड़े होंगे। एक दिन पहले शिवसेना (उबाठा) नेता संजय राउत ने महायुति के पक्ष में आए बड़े जनादेश के पीछे ''गड़बड़ी'' का संदेह जताया था। पवार को महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में अपने राजनीतिक जीवन की सबसे करारी शिकस्त का सामना करना पड़ा है। उनके नेतृत्व वाली राकांपा (एसपी) को 288 सदस्यीय विधानसभा में केवल 10 सीटें मिलीं, जबकि अजित पवार के नेतृत्व वाली राकांपा को 41 सीटें मिलीं। महायुति ने भारी जीत हासिल की जिसमें भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने 132, एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना ने 57 और राकांपा ने 41 सीटें जीतीं। इसके विपरीत, विपक्षी गठबंधन महा विकास आघाडी (एमवीए) 46 सीटों पर ही सिमट गया।

विपक्ष के पांच-छह विधायक कुछ महीनों में महायुति में शामिल हो सकते हैं: राकांपा के मुख्य सचेतक पाटिल

मुंबई : राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के मुख्य सचेतक अनिल पाटिल ने रविवार को दावा किया कि महा विकास आघाडी (एमवीए) खेमे में अशांति है और इसके पांच से छह विधायक अगले कुछ महीनों में सत्तारूढ़ महायुति में शामिल हो सकते हैं। विधानसभा चुनाव में पाटिल ने अपनी अमलनेर विधानसभा सीट बरकरार रखी। कांग्रेस, राकांपा (एसपी) और शिवसेना (उबाठा) के गठबंधन एमवीए को महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों में करारा झटका लगा। एमवीए राज्य की 288 सीटों में से केवल 46 सीटें ही जीत पाईं। इसके विपरीत भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नीत सत्तारूढ़ गठबंधन ने 230 सीटें हासिल कीं। महायुति में भाजपा के अलावा राकांपा और शिवसेना शामिल हैं।

नेत्र बैंक, अस्पताल एनओटीटीओ के साथ ऊतक, कॉर्निया प्रत्यारोपण दर्ज करेंगे : केंद्र

नयी दिल्ली : केंद्र ने राज्यों से कहा है कि वे नेत्र बैंकों और ऊतक या कॉर्निया प्रत्यारोपण करने वाले अस्पतालों को निर्देश दें कि वे ऐसी प्रक्रियाओं को अनिवार्य रूप से राष्ट्रीय अंग एवं ऊतक प्रत्यारोपण संगठन (एनओटीटीओ) द्वारा बनायी गयी राष्ट्रीय रजिस्ट्री के साथ दर्ज करें। अस्पतालों और नेत्र बैंकों को ऊतक व कॉर्निया प्रत्यारोपण के लिए प्रतीक्षा कर रहे रोगियों की संख्या, दान और प्रत्यारोपण की संख्या, तथा संग्रहित और उपयोग किए गए ऊतक व कॉर्निया की संख्या के बारे में आंकड़े साझा करने होंगे। एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि जिस तरह यकृत और गुर्दा जैसे अंगों के प्रत्यारोपण के लिए प्रतीक्षा सूची को केंद्रीकृत मंच पर देखा जा सकता है, उसी तरह कॉर्निया प्रत्यारोपण के लिए प्रतीक्षा कर रहे मरीजों की सूची भी उपलब्ध कराई जाएगी। एनओटीटीओ के निदेशक डॉ. अनिल कुमार द्वारा सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को लिखे गए पत्र में कहा गया है, ''प्रत्येक राज्य के उपयुक्त प्राधिकारी को सभी पंजीकृत केंद्रों से ऊतक/कॉर्निया दान और प्रत्यारोपण के आंकड़े एकत्र करने चाहिए और उसे हर महीने एनओटीटीओ को उपलब्ध कराना चाहिए।'' इसमें कहा गया है कि 14 मई को स्वास्थ्य सेवा महानिदेशक की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में कॉर्निया दान, पुनः प्राप्ति और वितरण के लिए एक केंद्रीकृत रजिस्ट्री प्रणाली की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया था। मानव अंग एवं ऊतक प्रत्यारोपण अधिनियम, 1994 (टीएचओटीए) के अनुसार, केंद्र सरकार को अंग एवं ऊतक दाताओं एवं प्राप्तकर्ताओं के लिए एक राष्ट्रीय रजिस्ट्री के आंकड़े दर्ज रखना अनिवार्य है।

आईपीएल नीलामी में बिकने वाले खिलाड़ियों की सूची

जेद्दा : इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) की मेगा नीलामी में रविवार को बिकने वाले खिलाड़ियों की सूची।

क्रमांक	खिलाड़ी	टीम	रकम (रूपये)
1.	ऋषभ पंत	लखनऊ सुपर जायंट्स	27 करोड़
2.	श्रेयस अय्यर	पंजाब किंग्स	26.75 करोड़
3.	अर्शदीप सिंह	पंजाब किंग्स	18 करोड़
4.	जोस बटलर	गुजरात टाइटंस	15.75 करोड़
5.	लोकेश राहुल	दिल्ली कैपिटल्स	14 करोड़
6.	मिचेल स्टार्क	दिल्ली कैपिटल्स	11.75 करोड़
7.	कैगिसो रबाडा	गुजरात टाइटंस	10.75 करोड़
8.	मोहम्मद शमी	सनराइजर्स हैदराबाद	10 करोड़
9.	डेविड मिलर	लखनऊ सुपर जायंट्स	7.50 करोड़
10.	युजवेंद्र चहल	पंजाब किंग्स	18 करोड़
11.	मोहम्मद सिराज	गुजरात टाइटंस	12.25 करोड़
12.	एल. लिविंगस्टोन	रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु	8.75 करोड़
13.	हैरी ब्रुक	दिल्ली कैपिटल्स	6.25 करोड़
14.	एडेन मार्क्रम	लखनऊ सुपर जायंट्स	2 करोड़
15.	डेवोन कोन्वे	चेन्नई सुपर किंग्स	6.25 करोड़
16.	राहुल त्रिपाठ	चेन्नई सुपर किंग्स	3.40 करोड़
17.	जेक फ्रेजर मैकगुर्क	दिल्ली कैपिटल्स	9 करोड़
18.	हर्षल पटेल	सनराइजर्स हैदराबाद	8 करोड़
19.	रचिन रविंद्र	चेन्नई सुपर किंग्स	4 करोड़
20.	रविचंद्रन अश्विन	चेन्नई सुपर किंग्स	9.75 करोड़
21.	वेंकटेश अय्यर	कोलकाता नाइट राइडर्स	23.75 करोड़
22.	मार्कस स्टोइनिस	पंजाब किंग्स	11 करोड़
23.	मिचेल मार्श	लखनऊ सुपर जायंट्स	3.40 करोड़
24.	ग्लेन मैक्सवेल	पंजाब किंग्स	4.20 करोड़
25.	क्विंटन डि कॉक	कोलकाता नाइट राइडर्स	3.60 करोड़
26.	फिल सॉल्ट	रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु	11.50 करोड़
27.	आर. गुरबाज	कोलकाता नाइट राइडर्स	2 करोड़
28.	इशान किशन	सनराइजर्स हैदराबाद	11.25 करोड़
29.	जितेश शर्मा	रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु	11 करोड़
30.	जोश हेजलवुड	रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु	12.50 करोड़
31.	प्रसिद्ध कृष्णा	गुजरात टाइटंस	9.50 करोड़
32.	आवेश खान	लखनऊ सुपर जायंट्स	9.75 करोड़
33.	एनरिच नॉर्खिया	कोलकाता नाइट राइडर्स	6.50 करोड़
34.	जोफ्रा आर्चर	राजस्थान रॉयल्स	12.50 करोड़
35.	खलील अहमद	चेन्नई सुपर किंग्स	4.80 करोड़
36.	टी नटराजन	दिल्ली कैपिटल्स	10.75 करोड़
37.	ट्रेंट बोल्ट	मुंबई इंडियन्स	12.50 करोड़
38.	महीश तीक्षणा	राजस्थान रॉयल्स	4.40 करोड़
39.	राहुल चाहर	सनराइजर्स हैदराबाद	3.20 करोड़
40.	एडम जम्पा	सनराइजर्स हैदराबाद	2.40 करोड़
41.	वनिंदु हसरंगा	राजस्थान रॉयल्स	5.25 करोड़
42.	नूर अहमद	चेन्नई सुपर किंग्स	10 करोड़

आईपीएल नीलामी में रिकॉर्ड दाम पर बिके पंत और अय्यर, वेंकटेश को अप्रत्याशित दाम

जेद्दा (सउदी अरब) : भारत के विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत केकेआर को इस साल खिताब दिलाने वाले श्रेयस अय्यर को पछाड़कर इंडियन प्रीमियर लीग में सबसे महंगे बिकने वाले खिलाड़ी बन गए जिन्हें लखनऊ सुपर जाइंट्स ने यहां रविवार को मेगा नीलामी में 27 करोड़ रूपये में खरीदा लेकिन वेंकटेश अय्यर पर अप्रत्याशित तौर काफी बड़ी बोली लगी। कोलकाता नाइट राइडर्स को इस साल आईपीएल खिताब दिलाने वाले कप्तान श्रेयस अय्यर 26 करोड़ 75 लाख रूपये में पंजाब किंग्स से जुड़े। वहीं पंत के लिये सनराइजर्स हैदराबाद और लखनऊ के बीच जमकर होड़ लगी। दिल्ली कैपिटल्स ने पहले 20 करोड़ 75 लाख रूपये पर 'राइट टू मैच' का इस्तेमाल किया लेकिन लखनऊ ने आखिरी बोली 27 करोड़ रूपये की लगाई तो दिल्ली टीम पीछे हट गई। केकेआर का हिस्सा रहे वेंकटेश को उसी टीम ने 23 करोड़ 75 लाख रूपये में फिर खरीदा। केकेआर और रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरू में उनके लिये होड़ लगी थी। वहीं श्रेयस अय्यर को पंजाब किंग्स ने 26 करोड़ 75 लाख रूपये में खरीदा। दिल्ली कैपिटल्स और पंजाब के बीच अय्यर को लेकर काफी समय तक होड़ रही लेकिन आखिर में पंजाब ने बाजी मारी। अय्यर ने आस्ट्रेलिया के तेज गेंदबाज मिचेल स्टार्क का रिकॉर्ड तोड़ा था जिन्हें पिछली नीलामी में केकेआर ने 24 करोड़ 75 लाख रूपये में खरीदा था। स्टार्क को 11 करोड़ 75 लाख में दिल्ली कैपिटल्स ने खरीदा। अय्यर और पंत दोनों ने पिछले कुछ साल में विषम परिस्थितियों का सामना

किया लेकिन जबर्दस्त साहस का परिचय देते हुए वापसी की। पंत दिसंबर 2022 में भयावह कार दुर्घटना के बाद सफल वापसी करने में कामयाब रहे जबकि अय्यर ने बीसीसीआई के केंद्रीय अनुबंध से बाहर किये जाने की निराशा से उबरते हुए केकेआर को तीसरा आईपीएल खिताब दिलाया। अय्यर और पंत 14 मार्च से शुरू हो रहे आईपीएल 2025 सत्र में अपनी अपनी टीमों के कप्तान हो सकते हैं। पंजाब किंग्स के नये कोच रिकी पोंटिंग ने कहा, 'मैंने अभी तक कप्तानी पर श्रेयस से बात नहीं की है। नीलामी से पहले उसे फोन किया था लेकिन उसने उठाया नहीं। वह आईपीएल में सफल कप्तान रहा है और उसके साथ फिर काम करके अच्छा लगेगा।' बायें हाथ के तेज गेंदबाज अर्शदीप सिंह को पंजाब ने राइट टू मैच कार्ड का इस्तेमाल करके 18 करोड़ रूपये में खरीदा। सनराइजर्स हैदराबाद ने आखिरी बोली 18 करोड़ रूपये की लगाई थी जिसे आरटीएम के जरिये पंजाब ने मैच किया। चेन्नई सुपर किंग्स ने दो करोड़ की बेसप्राइस पर नीलामी में सबसे पहले उतरे अर्शदीप पर पहली बोली लगाई थी। नीलामी में सबसे ज्यादा 110.5 करोड़ रूपये का पर्स लेकर उतरी पंजाब ने लेग स्पिनर युजवेंद्र चहल को 18 करोड़ रूपये और मार्कस स्टोइनिस को 11 करोड़ रूपये में खरीद लिया। चहल को आईपीएल मेगा नीलामी से पहले राजस्थान रॉयल्स ने रिलीज कर दिया था।

न्यूज अपडेट

जिम्बाब्वे ने बारिश प्रभावित पहले वनडे में पाकिस्तान को हराकर उलटफेर किया

बुलावायो (जिम्बाब्वे): आल राउंडर सिकंदर रजा के शानदार प्रदर्शन से जिम्बाब्वे ने रविवार को यहां बारिश से प्रभावित पहले एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय मैच में नये लुक वाली पाकिस्तानी टीम को डकवर्थ लुईस पद्धति से 80 रन से शिकस्त देकर उलटफेर किया। रजा ने 39 रन की महत्वपूर्ण पारी खेलकर जिम्बाब्वे को सात विकेट पर 125 रन के स्कोर से 205 रन तक पहुंचाने में मदद की। उन्होंने नौवें नंबर के बल्लेबाज रिचर्ड नगारावा के साथ मिलकर आठवें विकेट के लिए 62 रन की भागीदारी निभाई। रिचर्ड ने सर्वाधिक 48 रन बनाये। रजा (सात रन देकर दो विकेट) ने फिर एक ओवर में दो विकेट झटक लिये जिससे पाकिस्तान की टीम 21 ओवर में छह विकेट पर 60 रन बनाकर मुश्किल में थी। इसके बाद बारिश आ गई और मैच नहीं हो सका जिससे जिम्बाब्वे ने तीन मैच की वनडे श्रृंखला में 1-0 से बढ़त हासिल कर ली। पाकिस्तान ने प्रयोग करते हुए 2019 के बाद पहली बार अपने शीर्ष बल्लेबाज बाबर आजम को वनडे में आराम दिया ताकि अगले साल होने वाली चैम्पियंस ट्रॉफी से पहले 'बेंच स्ट्रेंथ' को आजमाया जा सके। वनडे श्रृंखला के बाद तीन टी20 मैच भी बुलावायो में खेले जायेंगे।

ऐसा खिलाड़ी मिल गया जो कप्तानी कर सकता है, श्रेयस अय्यर पर बोले पोंटिंग

जेद्दा : पंजाब किंग्स के मुख्य कोच रिकी पोंटिंग ने आईपीएल की मेगा नीलामी में 26 करोड़ 75 लाख रूपये में खरीदे गए श्रेयस अय्यर को 2025 सत्र में टीम की कप्तानी के लिये आदर्श विकल्प बताया। अय्यर कुछ समय के लिये आईपीएल के इतिहास के सबसे महंगे खिलाड़ी बने थे लेकिन ऋषभ पंत ने उन्हें पछाड़ दिया जब लखनऊ सुपर जाइंट्स ने उन्हें 27 करोड़ रूपये में खरीदा। पोंटिंग ने नीलामी के बीच प्रेस कांफ्रेंस में कहा, 'मैंने उसके साथ दिल्ली कैपिटल्स में काम किया है। वह आईपीएल में सफल कप्तान रहा है।' उन्होंने कहा, 'पिछले सत्र में उसने खिताब जीता था। हमें ऐसा खिलाड़ी मिल गया है जो यह काम फिर कर सकता है अगर हम उसे कप्तान चुनते हैं।' पोंटिंग ने कहा, 'मुझे फिर उसके साथ काम करने की खुशी है। उसने कल सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी में 57 गेंद में नाबाद 130 रन बनाये। अगर आईपीएल में वह ऐसा प्रदर्शन कर पाता है तो हमें बहुत खुशी होगी।'

जायसवाल और कोहली का शतक, ऑस्ट्रेलिया को 534 रन का लक्ष्य देने के बाद भारत ने तीन विकेट झटके

ऑस्ट्रेलिया दूसरी पारी में 12/3

पर्थ : तीसरे दिन का खेल खत्म हो चुका है। ऑस्ट्रेलिया ने अपनी दूसरी पारी में तीन विकेट गंवाकर 12 रन बना लिए हैं। नाथन मैकस्वीनी खाता नहीं खोल सके, जबकि पैट कमिंस दो रन और मार्नस लाबुशेन तीन रन बनाकर आउट हुए। उस्मान ख्वाजा तीन रन बनाकर नाबाद रहे। ऑस्ट्रेलिया को अब भी 522 रन बनाने हैं। टीम इंडिया ने 534 रन का लक्ष्य दिया है। बुमराह ने अब तक दो विकेट लिए हैं, जबकि सिराज को एक विकेट मिला है। भारत ने अपनी दूसरी पारी में छह विकेट पर 487 रन का स्कोर बनाकर पारी घोषित कर दी। दूसरी पारी के 487 रन से पहले टीम इंडिया ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए 150 रन बनाए थे। जवाब में ऑस्ट्रेलिया की पहली पारी 104 रन पर सिमट गई थी। भारत को दूसरी पारी में 46 रन की बढ़त हासिल थी। इस लिहाज से भारत के सामने कुल बढ़त 533 रन की हुई और 534 रन का लक्ष्य दिया। विराट कोहली के शतक का सभी को इंतजार था। उनके शतक लगाते ही भारतीय ड्रेसिंग रूम की ओर से पारी घोषित करने का फैसला लिया गया। विराट ने 143 गेंद में 100 रन की नाबाद पारी खेली। उन्होंने अपनी पारी में आठ चौके और दो छक्के लगाए। विराट ने लियोन की गेंद पर चौके के साथ शतक पूरा किया। यह उनके टेस्ट करियर का 30वां शतक और ओवरऑल तीनों प्रारूप मिलाकर 81वां शतक लगाया। यह ऑस्ट्रेलिया में उनका सातवां शतक रहा। वह सचिन तेंदुलकर को पीछे छोड़ ऑस्ट्रेलियाई जमीन पर सबसे ज्यादा टेस्ट शतक लगाने वाले भारतीय बल्लेबाज बन गए। सचिन ने छह शतक लगाए थे। विराट के अलावा नीतीश रेड्डी 27 गेंद में तीन चौके और दो छक्के की मदद से 38 रन बनाकर नाबाद रहे। नीतीश और विराट ने सातवें विकेट के लिए 54 गेंद में 77 रन की नाबाद साझेदारी की। विराट से पहले यशस्वी जायसवाल ने शतक जड़ा था और उन्होंने 161 रन की पारी खेली थी। उन्होंने अपनी पारी में 15 चौके और तीन छक्के लगाए थे। यह उनके टेस्ट करियर का चौथा शतक रहा था। वहीं, केएल राहुल ने पांच चौके की मदद से 77 रन बनाए थे। देवदत्त पडिक्कल ने 25 रन और वॉशिंगटन सुंदर ने 29 रन बनाए। ऋषभ पंत और ध्रुव जुरेल कुछ खास नहीं कर सके और 1-1 रन बनाए। ऑस्ट्रेलिया की ओर से नाथन लियोन ने दो विकेट लिए, जबकि मिचेल स्टार्क, जोश हेजलवुड, पैट कमिंस और मिचेल मार्श को एक-एक विकेट मिला।

पूर्व चैम्पियन केरल, मेघालय और जम्मू कश्मीर ने संतोष ट्रॉफी के अंतिम दौर के लिए क्वालीफाई किया

कोझिकोड : पूर्व चैम्पियन केरल सहित मेघालय और जम्मू कश्मीर ने रविवार को यहां अपने मुकाबले जीतकर संतोष ट्रॉफी राष्ट्रीय फुटबॉल चैम्पियनशिप के अंतिम दौर के लिए क्वालीफाई किया। केरल ने ग्रुप एच में पुडुचेरी को 7-0 से हराकर अंतिम दौर में प्रवेश किया। सात बार के चैम्पियन ने ग्रुप में सभी मैच जीतकर नौ अंक हासिल किये। ग्रुप ए के मैच में जम्मू कश्मीर ने लद्दाख को 5-0 से मात देकर संतोष ट्रॉफी के फाइनल दौर के लिए क्वालीफाई किया। पंजाब ने हिमाचल प्रदेश पर 7-0 से जीत दर्ज की। वहीं असम में मेघालय ने ग्रुप ई में मेजबान राज्य से 1-1 से ड्रॉ खेलकर क्वालीफाई किया। ग्रुप के अन्य मैच में अरूणाचल प्रदेश ने नगालैंड को 4-3 से हराकर पहली जीत दर्ज की।

हमने कोहली के खिलाफ सब-कुछ आजमाया लेकिन कुछ काम ना आया: हेजलवुड

पर्थ : ऑस्ट्रेलिया के अनुभवी तेज गेंदबाज जोश हेजलवुड ने रविवार को कहा कि उनके गेंदबाजों ने भारतीय दिग्गज विराट कोहली के खिलाफ दूसरी पारी में स्टंप्स के सामने, ऑफ स्टंप के बाहर और शॉट गेंदों के साथ कुछ और पैंतरे अपनाये लेकिन उनकी कोई भी योजना कारगर नहीं रही। कोहली ने 143 गेंद में नाबाद 100 रन की पारी खेली। भारत ने छह विकेट पर 487 पर अपनी दूसरी पारी घोषित की जिससे ऑस्ट्रेलिया को जीत के लिए 534 रन का अनुभव जैसा लक्ष्य मिला। भारत ने दिन के समापन से पहले ऑस्ट्रेलिया के 12 रन तक तीन विकेट झटक लिये। हेजलवुड ने माना कि उनकी टीम को इस मैच को बचाने के लिए किसी करिश्मे की जरूरत होगी। हेजलवुड ने दिन के खेल के बाद कहा, 'हमने कुछ योजनाओं पर काम किया। उन्होंने वास्तव में अच्छी बल्लेबाजी की। वह शानदार खिलाड़ी है।

निडर मानसिकता के साथ खेला, साहसिक फैसले लिए: यशस्वी जायसवाल

पर्थ : भारत के युवा बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल ने रविवार को यहां ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ चल रहे पहले टेस्ट में शानदार शतकीय पारी के लिए निर्भीक मानसिकता और साहसिक फैसले लेने की काबिलियत को अहम बताया। जायसवाल ने ऑस्ट्रेलियाई सरजमीं पर अपनी दूसरी ही पारी में 161 रन बनाए और केएल राहुल (77 रन) के साथ पहले विकेट के लिए 201 रन जोड़कर भारत को 533 रन का लक्ष्य देने की नींव रखी। जायसवाल ने तीसरे दिन का खेल खत्म होने के बाद प्रेस कांफ्रेंस में कहा, 'यह मेरे लिए बहुत विशेष पल था। मैं हमेशा से ऑस्ट्रेलिया का दौरा करना चाहता था और इसमें अच्छा प्रदर्शन करना चाहता था। यह पारी मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण है।' उन्होंने कहा, 'मैं हमेशा निडर मानसिकता के साथ खेलना चाहता था। मुझे खुद पर

भरोसा है और मैं साहसिक फैसले लेता हूं। इसलिए ऑस्ट्रेलिया में इतने बेहतरीन गेंदबाजों के खिलाफ खेलना एक अद्भुत अनुभव था। दुनिया के सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजों के खिलाफ शतक बनाना बहुत खास है।' पहली पारी में आठ गेंद खेलकर शून्य पर आउट होने वाले जायसवाल ने कहा कि उनका फोकस ऑस्ट्रेलिया के तेज गेंदबाजों की नयी गेंद के स्पैल के खिलाफ डटे रहने पर था। उन्होंने कहा, 'पहली पारी में विकेट थोड़ा ज्यादा सीम कर रहा था। दूसरी पारी में हम चर्चा कर रहे थे कि नयी गेंद को बेहतर तरीके से कैसे खेला जाए, कौन सी गेंद छोड़नी है और कौन सी खेलनी है। इसलिए टीम के लिए यह महत्वपूर्ण था कि मैं नयी गेंद को बेहतर तरीके से खेलूं।' जायसवाल ने कहा कि उन्होंने दूसरी पारी के लिए छोटा लक्ष्य निर्धारित किया था। उन्होंने कहा, 'मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं इतना बड़ा शतक बना पाऊंगा क्योंकि मेरे लक्ष्य छोटे थे, मैं सत्र दर सत्र पूरा करना चाह रहा था। फिर मैंने (केएल) राहुल भाई के साथ अच्छी साझेदारी की। साझेदारी के दौरान वो मेरा मार्गदर्शन कर रहे थे इसलिए यह मददगार रहा।'

मैं टीम के हित में योगदान देना चाहता था: कोहली ने 30वें शतक के बाद कहा

पर्थ : विराट कोहली ने धैर्य और आक्रमण के शानदार मिश्रण के साथ प्रवाहमय बल्लेबाजी करते हुए रविवार को यहां ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पहले टेस्ट की दूसरी पारी में पारंपरिक प्रारूप का 30वां शतक पूरा कर महान बल्लेबाज सर डॉन ब्रैडमैन के रिकॉर्ड को पीछे छोड़ दिया। अपने करियर की ढलान पर चल रहे कोहली ने ऑप्टस स्टेडियम में 143 गेंद में आठ चौके और दो छक्के की मदद से नाबाद 100 रन बनाये। उन्हें इस शतक के लिए लगभग 16 महीने और 15 टेस्ट पारियों का इंतजार करना पड़ा। उन्होंने जुलाई 2023 में पोर्ट ऑफ स्पेन में वेस्टइंडीज के खिलाफ 121 रन बनाये थे। कोहली ने इस शतक के साथ 2018 में इस शहर में खेली गयी 123 रन की शानदार पारी की यादें ताजा कर दी। कोहली ने अपनी नाबाद शतकीय पारी के बाद कहा वह टीम की बेहतरी में अपना

योगदान देना चाहते थे। उन्होंने प्रसारकों की तरफ से बात रह रहे ऑस्ट्रेलिया के पूर्व दिग्गज एडम गिलक्रिस्ट से कहा, 'जब आप अच्छा नहीं खेलते है तो आपके दिमाग बहुत कुछ चल रहा होता है, आप क्रीज पर समय बिताने के बाद कुछ गलतियां कर देते हैं।' उन्होंने कहा, 'मैं सिर्फ टीम के हित में योगदान देना चाहता था, मैं सिर्फ समय काटने के लिए क्रीज पर डटे रहना नहीं चाहता था।' उन्होंने मार्नस लाबुशेन के खिलाफ स्वीप शॉट पर चौके साथ अपना शतक पूरा किया। वह टेस्ट क्रिकेट में सुनील गावस्कर, सचिन तेंदुलकर और राहुल द्रविड़ के बाद 30 शतक पूरा करने वाले चौथे भारतीय खिलाड़ी बन गये। उन्होंने शतक का जश्न पत्नी अनुष्का को 'प्लाइंग किस' देकर मनाया। इस भारतीय दिग्गज ने कहा, 'अनुष्का हर सुख-दुख में मेरे साथ रही हैं। वह पर्दे के पीछे होने वाली हर बात कोजानती है।' उन्होंने कहा, 'मुझे देश के लिए प्रदर्शन करने पर गर्व है। यह अद्भुत लगता है। अनुष्का की यहां मौजूदगी इस पारी को और विशेष बनाती है।' गिलक्रिस्ट से बात करने के बाद कोहली ने भारतीय टीम के अन्य खिलाड़ियों के साथ स्टेडियम में मौजूद 26,166 दर्शकों की भारी तालियों का जवाब मुस्कुरा कर दिया।

वेंकटेश अय्यर केकेआर में कप्तानी की चुनौती स्वीकार करने को तैयार

जेद्दा : इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) की मेगा नीलामी में अपनी पुरानी फ्रेंचाइजी कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) द्वारा 23.75 करोड़ में खरीदे जाने से खुश हरफनमौला वेंकटेश अय्यर ने रविवार को कहा कि वह टीम के लिए कप्तानी की चुनौती को सहर्ष स्वीकार करना चाहेंगे। शाहरुख खान की स्वामित्व वाली फ्रेंचाइजी ने यहां मेगा नीलामी में 2024 केअपने आईपीएल विजेता कप्तान श्रेयस अय्यर को बरकरार नहीं रखने का फैसला किया और वेंकटेश को टीम में शामिल करने के लिए बड़ी रकम खर्च की। केकेआर द्वारा बड़ी रकम पर खरीदे जाने के बाद वेंकटेश ने कहा, ''मुझे नितीश राणा की

अनुपस्थिति में टीम की कप्तानी करने का मौका मिला था, वह जब चोटिल हुए थे तब मैं टीम का उपकप्तान था।'' उन्होंने कहा, ''मैंने हमेशा माना है कि कप्तानी सिर्फ एक पद है। टीम का नेतृत्व एक ऐसा माहौल बनाने के बारे में है जहां हर किसी को लगे कि वे इस टीम के लिए खेल सकते हैं और योगदान दे सकते हैं। अगर जिम्मेदारी दी जाती है, तो मुझे इसे लेने में बहुत खुशी होगी।

विराट कोहली को कुछ साबित करने की जरूरत नहीं है, उनका योगदान अद्वितीय है: कपिल देव

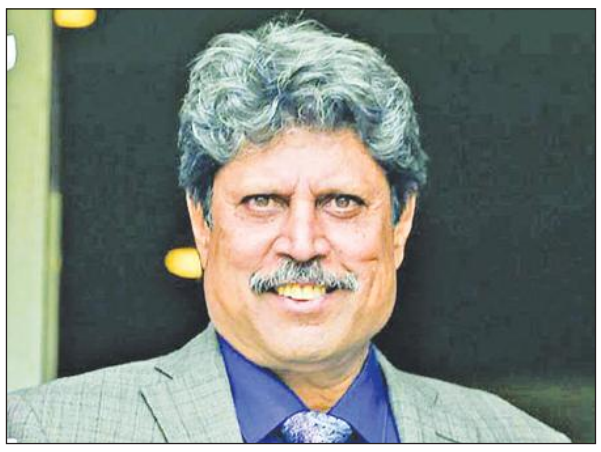

मुंबई : पूर्व दिग्गज हरफनमौला कपिल देव ने रविवार को यहां कहा कि विराट कोहली को कुछ साबित करने की जरूरत नहीं है और भारतीय क्रिकेट में उनका योगदान 'अद्वितीय' है। कोहली ने रविवार को पर्थ में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पहले टेस्ट मैच की दूसरी पारी में अपना 30वां टेस्ट शतक जड़ा। कोहली (नाबाद 100) और युवा सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल (161) की शतकीय पारियों ने भारत ने इस मैच में अपना शिकंजा काफी मजबूत कर लिया। ऑस्ट्रेलिया में यह कोहली का सातवां शतक है। वह इसके साथ ही महान सचिन तेंदुलकर (छह शतक) के रिकॉर्ड को पीछे छोडकर इस देश में सबसे ज्यादा शतक बनाने वाले भारतीय बन गये। कपिल ने यहां विश्व समुद्र गोल्डन ईगल गोल्फ चैंपियनशिप के दौरान पीटीआई से कहा, 'जिन लोगों को आलोचना करनी है वे आलोचना करेंगे। कोई बड़ा खिलाड़ी अगर वापसी करने में बहुत समय लेता है तो मीडिया ऐसा काम करती है।' उन्होंने कहा, 'हमें उसकी क्षमता और प्रतिभा देखनी चाहिये। वह बहुत बड़े खिलाड़ी है। उन्हें किसी को साबित करने की जरूरत नहीं है। उन्हें मुझे या मीडिया के सामने कुछ साबित करने की जरूरत नहीं है।'

कोहली के शतक ने श्रृंखला का रोमांच बढ़ाया, ऑस्ट्रेलिया के लिए बुरा संकेत: शास्त्री

पर्थ : भारत के पूर्व मुख्य कोच रवि शास्त्री ने विराट कोहली के शानदार शतक को ऑस्ट्रेलिया के लिए 'बुरा' संकेत करार देते हुए रविवार को यहां कहा कि पिछले 15 वर्ष में किसी भी विदेशी खिलाड़ी ने इस देश में नियमित तौर पर उनकी तरह प्रभावशाली बल्लेबाजी नहीं की है। कोहली ने पांच मैचों की बॉर्डर गावस्कर श्रृंखला के शुरूआती टेस्ट की दूसरी पारी में नाबाद 100 रन बनाये। उन्होंने टेस्ट करियर में अपने 30वें शतक के साथ लय में वापसी की। इस 36 साल के खिलाड़ी का यह ऑस्ट्रेलिया में सातवां शतक है। वह महान सचिन तेंदुलकर (छह शतक) को पीछे छोड़कर ऑस्ट्रेलिया में सबसे ज्यादा शतक लगाने वाले भारतीय बन गये। शास्त्री ने 'फॉक्स क्रिकेट कमेंट्री' पर कहा, 'ऑस्ट्रेलिया में सात शतक। बड़ा मौका, बड़े मैदान और दुनिया की सबसे ज्यादा उछाल वाली पिचे। मुझे नहीं लगता कि पिछले 15 साल में किसी विदेशी बल्लेबाज ने इस अंदाज में बल्लेबाजी की होगी।'

नीतीश ने सभी को चुप कर दिया जो टेस्ट टीम में उनके चयन को लेकर आशंकित थे : प्रसाद

विशाखापत्तनम : चयनकार्ताओं के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एमएसके प्रसाद का मानना है कि नीतीश कुमार रेड्डी के शानदार टी20 प्रदर्शन के आधार पर भारतीय टेस्ट टीम में जगह बनाने को लेकर आशंकायें थी लेकिन पर्थ में उनकी निर्भिक बल्लेबाजी ने सभी आलोचकों को चुप करा दिया है। प्रसाद ने इस ऑलराउंडर को 12 साल की उम्र से खेलते हुए देखा है। उन्होंने पीटीआई से कहा, ''हम शुरू में टेस्ट क्रिकेट में उनके जल्दी शामिल होने को लेकर आशंकित थे लेकिन नीतीश ने ऑस्ट्रेलिया के पर्थ में शानदार शुरुआत करके सभी तरह का संदेह खत्म कर दिया।'' रेड्डी ने भारत की पहली पारी में 41 रन और दूसरी पारी में 37 रन की तेज पारी खेली। प्रसाद ने तीसरे दिन का खेल खत्म होने के बाद कहा, ''नीतीश कुमार

रेड्डी के शानदार पदार्पण को देखकर खुशी हो रही है जो आंध्र क्रिकेट संघ की अकादमियों के माध्यम से व्यवस्थित तैयारी प्रक्रिया के बाद आये हैं। हमने नीतीश को 12 साल की उम्र में पहचाना जब उसके पिता उसे हमारे पास लाए। पहले दिन से ही वह प्रतिभावान खिलाड़ी लगा।'' उन्होंने बताया कि रेड्डी को किस तरह आंध्र क्रिकेट संघ के प्रतिभा खोज कार्यक्रम से पहचाना गया था। प्रसाद ने कहा, ''शुरू में वह अंडर-14 अकादमी में था जो उसके गृहनगर से बहुत दूर थी। लेकिन उसके माता-पिता ने उसे सपनों को पूरा करने के लिए प्रोत्साहित किया और वह हमारी अकादमियों के जरिये लगातार आगे बढ़ता गया। उसने अपने कौशल के दम पर भारत की अंडर-19 टीम में जगह बनाई।''

पुणेरी पलटन ने बंगाल वॉरियर्स को 51-34 से हराया

नोएडा : पुणेरी पलटन ने शानदार प्रदर्शन करते हुए रविवार को यहां एकतरफा मैच में बंगाल वॉरियर्स को 51-34 से हराकर प्रो कबड्डी लीग (पीकेएल) तालिका में तीसरा स्थान हासिल कर लिया। पुणेरी पलटन ने रेडर मोहित गोयत (नौ अंक), आकाश शिंदे (नौ अंक) और पंकज मोहित (छह अंक) के दमदार खेल से मैच पर दबदबा बनाते हुए बंगाल की टीम को चार बार ऑल आउट किया। बंगाल वॉरियर्स के लिए नितिन कुमार ने 13 अंक जुटाए लेकिन उन्हें दूसरे खिलाड़ियों का साथ नहीं मिला। शाम में खेले गये एक अन्य मैच में यूपी योद्धाज ने पटना पाइरेट्स को 44-42 से हराया।

वर्ष 9, पूर्णांक 4069 अंक 219, RNI No WBHIN/2016/66788, सर्वांग प्रकाशन के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सरोज राय द्वारा 17, बालमुकुन्द मक्कर रोड, 2सरा तल्ला, कोलकाता-700 007 से प्रकाशित। एल. एस. पब्लिकेशन्स प्रा. लि. 4, कैनल वेस्ट रोड, कोलकाता-700 015 से मुद्रित।
सम्पादक- अनिल कुमार राय (पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी), विज्ञापन एवं प्रसार-9874555256/7044444522, ई-मेल news@samagya.in